दैनिक

जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

n वर्ष : 10 अंक : 146 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, शुक्रवार 20 जून, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 2 रुपए ■ पृष्ठ : 8+2

भजनलाल सरकार ने भ्रष्ट अफसरों पर कसा शिकंजा

24 भ्रष्ट अफसरों के खिलाफ दी अभियोजन की स्वीकृति

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा प्रदेश में जीरो टॉलरेंस की नीति पर काम कर रहे हैं। अब मुख्यमंत्री ने भ्रष्ट अधिकारियों पार शिकंजा कसना शुरू कर दिया है। राजस्थान में रिश्वत लेते रंगे हाथ पकड़े गए 24 अफसरों के खिलाफ भजनलाल सरकार ने गुरुवार को मुकदमा चलाने की मंजूरी दे दी है। इनमें हाई-प्रोफाइल घूसकांड में फंसी पूर्व एसडीएम पिंकी मीणा और तत्कालीन आरएएस अधिकारी पुष्कर मित्तल भी शामिल हैं। इन दोनों के खिलाफ अब 4 साल बाद केस चलाने का रास्ता साफ हो गया है। जिन 24 अधिकारियों के खिलाफ सरकार ने अभियोजन स्वीकृति जारी की है, उसमें पिंकी मीणा (तत्कालीन एसडीएम, बानसूर), पुष्कर मित्तल (तत्कालीन एसडीएम दूदू), सुशील कुमार सिंह, नवीन माहूर, अख्तर हुसैन और अन्य 20 अधिकारी हैं, जिनके खिलाफ चार्जशीट एसीबी ने पहले ही दाखिल कर रखी है ।

शादी से पहले पकड़ी गई थीं एसडीएम पिंकी मीणा

इनमें सबसे चर्चित मामला साल 2021 का है जब दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे निर्माण से जुड़े मामले में एसीबी ने करोड़ों की रिश्वत डील का भंडाफोड़ करते हुए पिंकी मीणा और पुष्कर मित्तल को गिरफ्तार किया था। एसीबी ने चालान पेश कर दिया था, लेकिन राज्य सरकार की ओर से अभियोजन की मंजूरी नहीं मिलने से 4 साल तक केस फाइलों में धूल फांकता रहा। अब जाकर सरकार ने हर मंजूरी दे दी है। आईएएस बनने का सपना देखने वाली पिंकी मीणा की गिरफ्तारी ने पूरे प्रदेश में हलचल मचा दी थी। शादी से कुछ ही दिन पहले उन्हें एसीबी ने रिश्वत लेते हुए पकड़ा था। बाद में कोर्ट से उन्हें जमानत मिल गई थी। पुष्कर मित्तल भी रिश्वत लेने के आरोप में उसी दौरान गिरफ्तार हुए थे। उनकी भूमिका भी दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे में ठेकेदारों से घूस मांगने को लेकर एसीबी जांच के दायरे में आई थी।

बाबूलाल कटारा के खिलाफ अभियोजन की अनुमति नहीं

राज्य सरकार ने आरएइस से आइएइस बनीं निर्मला मीणा के खिलाफ भी अभियोजन स्वीकृति दे दी है। उन पर जोधपुर में पदस्थ रहते हुए राजस्व पट्टों में घोटाले का आरोप है। रिटायरमेंट के बाद भी अब उनके खिलाफ केस चलेगा. आरोपों की जांच साल 2018 से लंबित थी। इस बीच RPSC पेपर लीक केस में आरोपी रहे निलंबित सदस्य बाबूलाल कटारा को राहत मिली है। सरकार ने उनके खिलाफ अभियोजन की अनुमति नहीं दी है, जिससे उनके खिलाफ केस पर फिलहाल रोक लग गई है। राज्य सरकार के इस कदम को प्रशासनिक पारदर्शिता की दिशा में अहम माना जा रहा है। भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरे अधिकारियों पर कार्रवाई न होने की आलोचना लगातार हो रही थी। अब देखना होगा कि ये मुकदमे न्यायिक प्रक्रिया में कितनी तेजी से आगे बढ़ते हैं।

राजस्थान कांग्रेस संगठन में सुधारों के लिए पार्टी कर रही कवायद

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान कांग्रेस में संगठनात्मक सुधारों की दिशा में बैठकों का दौर जारी है। पार्टी के प्रदेश संगठन की समीक्षा को लेकर दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी भवन में बैठक होगी जिसकी अध्यक्षता प्रदेश कांग्रेस के प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा करेंगे। बैठक में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा, नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली, और तीनों सह-प्रभारी मौजूद रहेंगे। सूत्रों के अनुसार, यह बैठक अब तक मिले संगठनात्मक फीडबैक की गहन समीक्षा और कांग्रेस संगठन को मज़बूत करने की रणनीति तय करने के लिए की जा रही है। बीते कुछ महीनों में राजस्थान कांग्रेस की गतिविधियों में सुस्ती और जमीनी स्तर पर समन्वय की कमी को लेकर कई शिकायतें मिली हैं। कांग्रेस की आंतरिक सर्जरी जैसे कड़े फैसले भी लिए जा सकते हैं। बैठक में ब्लॉक और जिला स्तर पर संगठन की हालत, नियुक्त समन्वयकों की सक्रियता, और बूथ स्तर तक पार्टी की पकड़ पर चर्चा की जाएगी। माना जा रहा है कि बैठक में राजस्थान कांग्रेस की आंतरिक सर्जरी जैसे कड़े फैसले भी लिए जा सकते हैं। हाल ही में जयपुर में हुई बैठकों में पीसीसी चीफ ने संगठन में निष्क्रिय ब्लॉक अध्यक्षों को कारण बताओ नोटिस जारी कर स्पष्ट संकेत दे दिया था कि आलाकमान अब ढीले रवैये को बर्दाश्त नहीं करेगा। इस बैठक के ज़रिए कांग्रेस हाईकमान यह संदेश देना चाहता है कि 2028 की तैयारी अब फील्ड लेवल से शुरू हो चुकी है, और संगठन में जो भी कमजोर कड़ी होगी, उसे या तो मज़बूत किया जाएगा या बदला जाएगा।

रेजिडेंट डॉक्टर राकेश बिश्नोई की संदिग्ध आत्महत्या! जयपुर - जोधपुर में प्रदर्शन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। जोधपुर के एसएन मेडिकल कॉलेज में रेजिडेंट डॉक्टर राकेश बिश्नोई की संदिग्ध आत्महत्या का मामला लगातार तूल पकड़ गया है। जोधपुर में बिश्नोई समाज के सैकड़ों लोगों ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपकर दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की तो इधर जयपुर में भी एसएमएस अस्पताल की मोर्चरी के बाहर धरना प्रदर्शन चल रहा है। धरने का नेतृत्व आरएलपी प्रमुख हनुमान बेनीवाल, विधायक अभिमन्यु पूनिया, युवा नेता निर्मल चौधरी और विक्रम सिंह बिश्नोई कर रहे हैं। सभी प्रदर्शनकारी दोषियों की गिरफ्तारी और न्यायिक कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। जोधपुर में सौंपे गए ज्ञापन में मांग की गई कि फार्माकोलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. राजकुमार राठौर को हत्या की धाराओं में तुरंत गिरफ्तार किया जाए, मामले की उच्चस्तरीय जांच कराई जाए, डॉक्टर राकेश की पत्नी को योग्यता के आधार पर सरकारी नौकरी दी जाए और परिवार को दो करोड़ रुपये का आर्थिक मुआवजा दिया जाए। इसके अलावा, ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए सरकार से कठोर कानून बनाने की मांग भी की गई। इस दौरान बिश्नोई महासभा जोधपुर के अध्यक्ष नारायण डाबड़ी, पूर्व विधायक मलखान सिंह बिश्नोई, सरस डेयरी चेयरमैन रामलाल बिश्नोई, युवा नेता रामनिवास बुधनगर राव रिडमल समेत समाज के कई प्रमुख लोग मौजूद रहे।

यह थी पूरी घटना

13 जून को जोधपुर के एसएन मेडिकल कॉलेज के फार्माकोलॉजी विभाग में तृतीय वर्ष के रेजिडेंट डॉक्टर राकेश बिश्नोई ने सुबह 10.30 बजे सल्फास की गोलियां खा लीं। गंभीर हालत में उन्हें जयपुर रेफर किया गया, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। मौत से पहले डॉक्टर राकेश ने एक वीडियो रिकॉर्ड किया था, जिसमें उन्होंने विभागाध्यक्ष डॉ. राजकुमार राठौर पर प्रताड़ना का आरोप लगाया।

राज्य सरकार युवाओं को उपलब्ध करवा रही रोजगार के अवसरः भजनलाल

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश के युवाओं को रोजगार के समुचित अवसर उपलब्ध कराने के लिए कार्ययोजना के तहत भर्तियां आयोजित कर रही है। उन्होंने कहा कि भर्ती परीक्षा कैलेण्डर के अनुसार आयोजित कर युवाओं को समयबद्ध रूप से रोजगार उत्सव के तहत नियुक्तियां दी जा रही हैं। शर्मा गुरूवार को मुख्यमंत्री निवास पर मुख्यमंत्री रोजगार उत्सव (जुलाई-2025) की तैयारियों को लेकर आयोजित बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने अधिकारियों को आगामी जुलाई माह में आयोजित होने वाले मुख्यमंत्री रोजगार उत्सव के आयोजन की सुनियोजित तैयारियां करने के निर्देश प्रदान किए। उन्होंने विभागवार लंबित भर्ती प्रक्रियाओं की समीक्षा करते हुए विभागीय अधिकारियों को नियुक्ति प्रदान करने से पूर्व शेष प्रक्रिया को त्वरित गति से पूर्ण करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को न्यायालय में विभिन्न कारणों से लंबित भर्ती प्रकरणों की मजबूती से पैरवी करवाने के निर्देश प्रदान किए। उन्होंने प्रदेश में युवाओं के लिए संचालित की जा रही विभिन्न योजनाओं को मुख्यमंत्री रोजगार उत्सव से जोड़ने के भी निर्देश दिए जिससे पात्र युवाओं को इन योजनाओं का लाभ मिल सके। शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार की ओर से अब तक आयोजित किए गए मुख्यमंत्री रोजगार उत्सव के तहत प्रदेश के 67 हजार से अधिक युवाओं को नियुक्ति पत्र प्रदान कर उनका सरकारी नौकरी का सपना पूरा किया गया है। उन्होंने कहा कि युवाओं को पूर्ण पारदर्शिता एवं त्वरित गति से विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। इस अवसर पर मुख्य सचिव सुधांश पंत सहित विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

भ्रष्ट 'पृथ्वीराज', घिनौने कृत्य से नहीं आया 'बाज'

'खाकी' फिर भ्रष्टः एएसआई 5 हज़ार रुपए रिश्वत लेते गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

भरतपुर(निसं.)।। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की टीम ने बड़ी कार्रवाई करते हुए एक सहायक पुलिस उपनिरीक्षक को पांच हजार रुपए की रिश्वत राशि लेते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार किया है। एएसआई परिवादी की एक्सीडेंटल गाड़ी को न्यायालय से छुड़वाने के आदेश करवाने और मुकदमे में मदद करने की एवज में रिश्वत राशि मांगकर परेशान किया जा रहा था। जिसके चलते परिवादी ने एसीबी भरतपुर टीम को अवगत कराया और एसीबी टीम ने सत्यापन करने के बाद रंगे हाथों धर दबोचा। भरतपुर एसीबी एडिशनल एसपी अमित चौधरी ने बताया कि एसीबी चौकी भरतपुर को एक परिवादी ने शिकायत दी कि उसकी एक्सीडेंटल गाड़ी को न्यायालय से छुड़वाने के आदेश करवाने और मुकदमे में मदद करने की एवज में आरोपी पृथ्वीराज सहायक उप निरीक्षक 5000 रूपये

रिश्वत की मांग कर परेशान कर रहा हैं। जिसका सत्यापन करने के बाद एसीबी की टीम ने ट्रेप कार्यवाही करते हुए गहनोली मोड पर तैनात आरोपी पृथ्वीराज सहायक उप निरीक्षक को 5,000 रूपये रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया। एसीबी की ओर से मामले में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के अन्तर्गत प्रकरण दर्ज कर अग्रिम अनुसंधान किया जाएगा।

तीन महीने पहले बदला गया था विमान का इंजनः एअर इंडिया का खुलासा

नई दिल्ली(एजेंसी.)।। अहमदाबाद विमान हादसे की असल वजह की जांच हो रही है। कई एक्सपर्ट्स का मानना है कि विमान के दोनों इंजन में खराबी आ जाने या इलेक्ट्रॉनिक या फिर हाइड्रोलिक खराबी की वजह से यह हादसा हुआ। इसी बीच गुरुवार को एअर इंडिया विमान कंपनी के प्रबंध निदेशक कैंपबेल विल्सन ने कहा कि विमान के दाएं साइड का इंजन 3 महीने पहले ही मार्च में बदला गया था। वहीं, बाएं इंजन का अप्रैल में निरीक्षण किया गया था। क्रैश हुए बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर विमान की डिटेल मेंटिनेंस जून 2023 में हुआ था। दिसंबर 2025 में इस विमान का फिर से डिटेल मेंटिनेंस किया जाना था। उन्होंने कहा कि उड़ान से पहले विमान और इंजन में कोई समस्या नहीं थी और दोनों पायलट, कैप्टन सुमीत सभरवाल और फर्स्ट को पायलट क्लाइव कुंदर के पास काफी ज्यादा अनुभव था। कुछ दिनों पहले कैंपबेल विल्सन ने बीबीसी से कहा था कि विमान के इंजन की स्थिति का उसकी उम्र से कोई संबंध नहीं होता है, विशेष रूप से 787-8 के जेनएक्स-1बी इंजन के मामले में। 12 जून 2025 को अहमदाबाद से लंदन जा रहा एअर इंडिया का बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर विमान हादसे का शिकार हो गया।

राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल का परीक्षा परिणाम जारी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल की कक्षा 10वीं और 12वीं की परीक्षा 2025 का अंतिम परिणाम गुरुवार को राज्य के शिक्षा मंत्री मदन दिलावर की ओर से जयपुर स्थित शिक्षा संकुल में घोषित किया गया। छात्र-छात्राएं अपना परिणाम RSOS की आधिकारिक वेबसाइट rsos.rajasthan.gov.in पर देख सकते हैं।

रिकॉर्ड समय में जारी हुआ परिणाम

पूर्व में यह परीक्षा 21 अप्रैल से 16 मई तक प्रस्तावित थी, लेकिन भारत-पाकिस्तान के बीच बढ़े तनाव के कारण 30 मई को समाप्त हुई। इसके पश्चात केवल 19 दिनों में उत्तर पुस्तिकाओं की जांच कर परिणाम जारी किया गया।

कक्षा 10वीं परिणाम

कुल पंजीकृत विद्यार्थी 53,498
परीक्षा में शामिल हुए 35,575
उत्तीर्ण छात्र 16,400
पासिंग प्रतिशत 46.1%

कक्षा 12वीं परिणाम

कुल पंजीकृत विद्यार्थी 49,499

परीक्षा में शामिल हुए 38,289
उत्तीर्ण छात्र 18,800
पासिंग प्रतिशत 49.1%

जिला स्तर पर इन्हें मिलेगा पुरस्कार

राज्य के प्रत्येक जिले में टॉप करने वाले एक छात्र और एक छात्रा को 11,000-11,000 रुपये का नकद पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। बता दें कि इस वर्ष से RSOS ने डिजिटल परीक्षा प्रबंधन प्रणाली लागू की है। छात्र अपनी उत्तर पुस्तिकाएं DigiLocker के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं। जो छात्र पुनर्मूल्यांकन (Revaluation) कराना चाहते हैं, वे 20 जून से 26 जून तक rsosadmission.rajasthan.gov.in/rsos पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। ऑफलाइन आवेदन स्वीकार नहीं किए जाएंगे।

इस्राइल-ईरान तनाव से दुनिया में अशांति

रूस ने अमेरिका को दी चेतावनीः दखल दिया तो होंगे गंभीर परिणाम

ड्रैगन दे रहा शांति का पैगाम

जयपुर टाइम्स

मॉस्को/एजेंसी। रूस ने गुरुवार को अमेरिका को चेतावनी दी कि वह ईरान के खिलाफ कोई सैन्य कार्रवाई न करे, क्योंकि अटकलें लगाई जा रही हैं कि अमेरिका, इस्राइल के साथ युद्ध में शामिल हो सकता है। समाचार एजेंसी के मुताबिक रूसी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता मारिया जखारोवा ने कहा कि हम खास तौर पर वॉशिंगटन को चेतावनी देना चाहते हैं कि वह इस स्थिति में कोई सैन्य दखल न दे। उन्होंने कहा कि ऐसा करना बहुत ही खतरनाक कदम होगा, जिसके पूरी तरह से अनपेक्षित और नुकसानदेह नतीजे हो सकते हैं। इससे पहले,

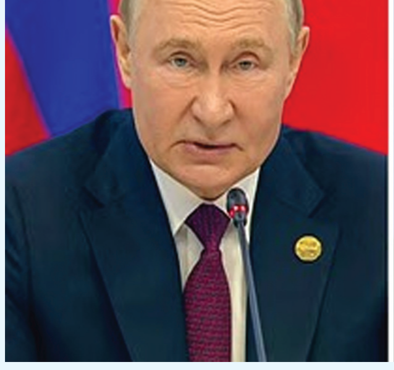

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने ईरान पर इस्राइल के हवाई हमलों की कड़ी निंदा की। दोनों नेताओं ने सभी पक्षों से अपील की कि वे राजनयिक तरीके से यह विवाद सुलझाएं और युद्ध को रोके। एएफपी ने चीनी समाचार एजेंसी के हवाले से कहा, शी जिनपिंग ने कहा कि संघर्ष में शामिल पक्षों, खासकर इस्राइल को तुरंत हमले बंद कर देने चाहिए, ताकि हालात और न बिगड़ें और युद्ध दूसरे क्षेत्रों में न फैले। क्रेमलिन के सलाहकार यूरी उशाकोव ने पत्रकारों से कहा कि दोनों देशों (रूस और चीन) का नजरिया एक जैसा है और दोनों ने इस्राइल की कार्रवाई की कड़ी निंदा की हैं। दोनों नेताओं ने यह बात भी मानी कि पश्चिम एशिया में युद्ध रोकना फिलहाल सबसे बड़ी प्राथमिकता है। शिन्हुआ के मुताबिक, शी जिनपिंग ने कहा कि संघर्ष विराम और हमलों को रोकना सबसे जरूरी है। अंतरराष्ट्रीय विवादों को हल करने का सही तरीका हथियार नहीं, बातचीत है।

इस्राइली रक्षा मंत्री ने खामनेई को दी चेतावनी

पुतिन और जिनपिंग की यह बातचीत ऐसे समय में हुई, जब पश्चिम एशिया में हालात तेजी से बिगड़ते जा रहे हैं। इस्राइल और ईरान के बीच सैन्य झड़पें लगातार बढ़ रही हैं। इसी तनाव के बीच गुरुवार को ईरान ने जवाबी कार्रवाई में दक्षिणी इस्राइल के 'सोरोका अस्पताल' पर मिसाइल हमला किया। यह हमला बेहद गंभीर माना जा रहा है। वहीं, इस्राइली सेना (आईडीएफ) ने एक बयान में बताया कि हमारे कई ठिकानों पर मिसाइलों से हमले हुए। इनमें से एक मिसाइल ने दक्षिणी इस्राइल के सबसे बड़े अस्पताल को भी निशाना बनाया। इस बारे में और जानकारी जल्द दी जाएगी। इस हमले के कुछ ही समय बाद इस्राइली रक्षा मंत्री इस्राइल काट्ज ने पहली बार सार्वजनिक रूप से ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला खामनेई को खत्म करने की धमकी दी। अब तक चले इस संघर्ष के दौरान उनकी ओर से यह सबसे सख्त बयान माना जा रहा है। काट्ज ने तेल अवीव के पास होलोन शहर में एएफपी से बातचीत में कहा कि खामेनेई खुले तौर पर कहते हैं कि वह इस्राइल का का खात्मा चाहते हैं। वह खुद अस्पतालों पर हमला करने का आदेश देते हैं। इस्राइल को मिटाना उनके लिए एक लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि ऐसे इंसान को अब और जीने की इजाजत नहीं दी जा सकती। इससे पहले, इस्राइल ने ईरान के 'अराक हैवी वॉटर रिएक्टर' पर एक घातक हवाई हमला किया, जिससे दोनों देशों के बीच चल रहा टकराव अब सातवें दिन भी जारी है और यह अब और भी तेज हो गया है। हमले से पहले इस्राइल ने सोशल मीडिया पर धमकी दी। उन्होंने उपग्रह (सैटेलाइट) से ली गई तस्वीरें पोस्ट कीं। लक्ष्य बनाए गए रिएक्टर को लाल घेरे से घेरा गया था। आम नागरिकों से इलाका छोड़ने को कहा गया।

अलवर जयपुर टाइम्स

जयपुर, शुक्रवार
20 जून, 2025

जिला कलक्टर से वार्ता के बाद किसानो का आंदोलन समाप्त

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। सिलिसेढ झील को लेकर चल रहे किसानों का आंदोलन जिला कलेक्टर से वार्ता के बाद बनी सहमति से समाप्त हो गया किसानो व संघर्ष समिति के डेलीगेशन सदस्यों की जिला कलेक्टर आर्तिका शुक्ला के साथ बैठकर हुई करीब दो घंटे तक चली इस वार्ता में किसानों ने अपनी मुख्य मांगें रखीं। वार्ता के बाद कलेक्टर ने मीडिया से बातचीत में बताया कि किसानों की मांगों को गंभीरता से सुना गया है और उन पर विचार किया जा रहा है। फिलहाल जो 35 बोरिंग प्रस्तावित थीं, उन्हें रोकने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने यह भी बताया कि इस मामले को लेकर राज्य स्तर के अधिकारियों से भी चर्चा की गई है और इसी के बाद यह निर्णय लिया गया। वहीं, किसानों ने कहा कि उन्हें वार्ता में सकारात्मक आश्वासन मिला है, इसलिए फिलहाल के लिए आंदोलन समाप्त कर दिया गया है। लेकिन यदि उनकी मांगें भविष्य में पूरी नहीं होती हैं तो इससे भी बड़ा आंदोलन किया जाएगा।

आम रास्ते मे बने शौचालय व बाथरूम को नगरपालिका ने किया ध्वस्त

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(निसं.) नगरपालिका राजगढ़ ने गुरुवार को प्रधानमंत्री की ओर से स्वच्छ भारत मिशन योजना के तहत बनाएं गये शौचालय व बाथरूम को अतिक्रमण मानते हुए ध्वस्त कर दिया। नगरपालिका के अतिक्रमण प्रभारी रितिक ने जानकारी देते हुए बताया कि नगरपालिका के वार्ड नं.24 में न्यू तबेला कॉलोनी में भौरेलाल सैनी पुत्र कजोड़ सैनी व सुरेश पुत्र भौरेलाल व उनके परिवार के लोगों ने सार्वजनिक आम रास्ते की भूमि पर स्थाई शौचालय व बाथरूम बनाकर निर्मित कर रास्ता अवरूद्ध कर अतिक्रमण किया हुआ था। जिसको गुरुवार को नगरपालिका की तरफ से पुलिस की मौजूदगी में जेसीबी चलाकर पक्का निर्माण को ध्वस्त किया गया। वहीं पीड़ित परिवार के सुरेश सैनी ने बताया कि प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत मिशन के तहत उसके उसके पिता को नगरपालिका के द्वारा शौचालय व बाथरूम के लिए पैसे दिए गए थे जिसके द्वारा शौचालय व बाथरूम बनवाया गया। इस पर कोर्ट में मामला विचाराधीन है। गुरुवार को नगरपालिका ने बिना किसी सूचना के हमारे बाथरूम व शौचालय को ध्वस्त कर दिया। इस दौरान नगरपालिका के अतिक्रमण प्रभारी रितिक, दिनेश कुमार मीना, जुगनू तमोली, पूरण मीना, संदीप निदानिया, रमेश बैरवा सहित पुलिसकर्मी मौजूद रहे।

केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री के नेतृत्व में वी-शक्ति ट्रस्ट द्वारा आयोजित समर कैंप के द्वितीय चरण में मैराथन दौड़ का हुआ आयोजन

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री तथा अलवर सांसद भूपेंद्र यादव के नेतृत्व में वी-शक्ति ट्रस्ट द्वारा चिकानी स्थित एलआईईटी कॉलेज परिसर में अलवर सांसद खेल उत्सव के द्वितीय चरण के अंतर्गत आयोजित समर कैंप के नवें दिन ईटाराणा छावनी में बालिकाओं की 5 किमी मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया। मैराथन में बालिकाओं ने ईटाराणा पैलेस छावनी के मुख्य मार्गों से होते हुए ईटाराणा पैलेस तक दौड लगाकर स्वस्थ जीवनशैली का संदेश दिया। इसके उपरान्त बालिकाओं द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किए गए 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत एलआईईटी. कॉलेज परिसर में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस दौरान समर कैंप में भाग ले रही सभी बालिकाओं ने अपनी मां के नाम पर एक-एक पौधा लगाने की शपथ ली एवं अपने-अपने गांव में भी अभियान के तहत अधिक से अधिक ग्रामीणों को इस अभियान से जोडने एवं गांव को हराभरा बनाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर बालिकाओं ने कहा कि केंद्रीय वन मंत्री भूपेंद्र यादव द्वारा अलवर जिले में खेल प्रतिभाओं को निखारने के लिए अलवर सांसद खेल उत्सव शुरू किया गया है, वह सराहनीय है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों के प्रतिभावान खिलाडियों की खेल प्रतिभाओं को निखारने के लिए अच्छा खेल मंच मिला है जिससे खिलाडियों को खेल जगत में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचने तथा अपने गांव व जिले का नाम रोशन करने का अवसर मिलेगा। इस दौरान वी-शक्ति ट्रस्ट की फाउंडर प्रज्ञा यादव एवं प्रशिक्षक एवं बडी संख्या में प्रशिक्षणार्थी बालिका खिलाडी मौजूद रही।

जिला कलक्टर ने जनसुनवाई में आमजन के सुने परिवाद

जिला स्तरीय जनसुनवाई में आए परिवादों का निस्तारण करने के दिए निर्देश

जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सुनिश्चित करने के लिए शिविरों का होगा आयोजन

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा(निसं.)। जिला कलक्टर किशोर कुमार की अध्यक्षता में जिला स्तरीय जनसुनवाई गुरूवार को जिला सचिवालय खैरथल-तिजारा के वीसी सभागार में आयोजित की गई। जिला स्तरीय जनसुनवाई में 67 प्रकरण प्राप्त हुए। जिला कलेक्टर ने मौके पर परिवादों को सुना तथा संबंधित अधिकारियों को समयबद्ध निस्तारण के निर्देश दिये। जिला स्तरीय जनसुनवाई में सिवायचक भूमि पर अतिक्रमण, कस्टोडियन लैंड, पेमाइश, रास्ते पर अतिक्रमण, भूमि पर अतिक्रमण, बिजली, खाद्य सुरक्षा में नाम जुड़वाने, सड़क, विभिन्न प्रकरणों की पुलिस जांच कराने तथा पेयजल समस्या सहित अन्य परिवाद प्राप्त हुए जिन पर जिला कलेक्टर ने संज्ञान लेते हुए संबंधित उपखण्ड अधिकारी, तहसीलदार, विकास अधिकारी और सम्बंधित विभागों को परिवादों के निस्तारण के निर्देश दिये। उन्होंने सभी परिवादियों को की गई कार्यवाही से अवगत कराते हुये गुणवत्तापूर्ण प्रकरण निस्तारित करने के निर्देश दिये। जिला कलेक्टर किशोर कुमार ने कहा कि सभी अधिकारी राजस्थान सम्पर्क पोर्टल 2.0 , सीएमओ, मुख्यमंत्री जनसुनवाई प्रकोष्ठ एवं जनसुनवाईयों में प्राप्त होने वाले प्रकरणों का त्वरित निराकरण करना सुनिश्चित करें। अधिकारी प्रकरणों को लेकर ना बैठे, परिवाद के आवंटित होने पर हाथों-हाथ निस्तारण करें। उन्होंने कहा कि पखवाड़े के अन्तर्गत प्रतिदिन ग्राम पंचायत स्तर पर शिविरों का आयोजन किया जाएगा। जिला कलक्टर इन शिविरों के सफल आयोजन के लिए नोडल अधिकारी की नियुक्ति करें। मुख्यमंत्री ने पखवाड़े के संबंध में 20 जून को ग्राम सभा आयोजित करने के निर्देश दिए ताकि ग्रामीणों को इसकी सम्पूर्ण जानकारी मिल सके। जिला कलेक्टर ने पखवाड़े के अन्तर्गत पंडित दीनदयाल उपाध्याय गरीबी मुक्त गांव योजना में लक्षित परिवारों को गरीबी रेखा से ऊपर लाने के लिए योजनाओं का लाभ लाभार्थी तक पहुंचाने के निर्देश दिए। इसके साथ ही, लम्बित पत्थरगढ़ी और सीमाज्ञान प्रकरणों का निस्तारण, स्वामित्व पट्टो का वितरण, मृदा नमूनों का संग्रहण एवं मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरण, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा (एनएफएसए) के अन्तर्गत लम्बित प्रकरणों का निस्तारण एवं नवीन पात्र परिवारों एवं सदस्यों की आधार सीडिंग के कार्य भी शिविर में संपादित कर आम जिनको लाभान्वित करने के निर्देश दिए। जिला स्तरीय जनसुनवाई के दौरान विधायक किशनगढ़ बस दीपचंद खैरिया, अतिरिक्त जिला कलेक्टर शिवपाल जाट, कोषाधिकारी सुरेश कुमार बंसल, सहकारिता विभाग अधिकारी वेद प्रकाश सैनी, अधीक्षण अभियंता धर्मवीर यादव, नगर परिषद आयुक्त मुकेश शर्मा, महिला एवं बाल विकास अधिकारी बीना गुप्ता, संयुक्त निदेशक पशुपालन विभाग हवा सिंह जाट, नोडल अधिकारी आयुर्वेदिक विभाग अजीत बालयांण, पीएचईडी सहित सभी जिला स्तरीय अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। साथ ही सभी ब्लॉक स्तरीय अधिकरी वीसी के माध्यम से जुड़े रहे।

जिला स्तरीय जनसुनवाई आयोजित 305 फरियादियों ने दी परिवेदनाएं

जिला कलक्टर ने परिवेदनाओं के त्वरित व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करने के अधिकारियों को दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। त्रि-स्तरीय जनसुनवाई व्यवस्था के तहत जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला की अध्यक्षता में मिनी सचिवालय सभागार में जिला स्तरीय जनसुनवाई आयोजित हुई, जिसमें 305 फरियादियों ने अपनी परिवेदनाएं प्रस्तुत की। जिला कलक्टर ने अधिकारियों को निर्देश दिये कि आमजन की परिवेदनाओं का नियमित रूप से निस्तारण करें। साथ ही जिला स्तरीय जनसुनवाई, राजस्थान सम्पर्क पोर्टल व अन्य माध्यम से भी आने वाली परिवेदनाओं का गुणवत्तापूर्ण व त्वरित निराकरण करें। उन्होंने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुडे उपखण्ड स्तरीय अधिकारियों से परिवेदनाओं के संदर्भ में तथ्यात्मक स्थिति का फीडबैक लेकर संबंधित अधिकारियों को त्वरित निस्तारण करने के निर्देश दिये।

ये रही प्रमुख परिवेदनाएं

जिला कलक्टर के समक्ष जिलेभर से आए 305 फरियादियों ने अपनी परिवेदना प्रस्तुत की, जिनमें मुख्य रूप से राजस्व की अतिक्रमण हटाने से संबंधित, पुलिस, नगर निगम, यूआईटी, जिला परिषद, विद्युत, जलदाय आदि विभागों की

परिवेदनाएं प्रस्तुत की गई। जनसुनवाई में शहर के श्रीराम कॉलोनी, खदाना मौहल्ला, नयाबास वार्ड नं. 29, दिल्ली दरवाजा बाहर लुहरवाडी गली, थानागाजी नगरपालिका वार्ड 7 व 8 एवं ग्राम खारेडा के निवासियों ने सुचारू पेयजल आपूर्ति, शिव कॉलोनी वार्ड नं. 55 व हरदेव विहार कॉलोनी में अवैध नल कनेक्शन हटवाने की परिवेदनाएं प्रस्तुत की गई जिस पर जिला कलक्टर ने जलदाय विभाग के अधीक्षण अभियन्ता को निर्देश दिये कि परिवेदनाओं का त्वरित निराकरण करने के साथ जिले में सुचारू पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करावे तथा अवैध नल कनेक्शनों को हटवाने की कार्रवाई करें। जनसुनवाई में राठ नगर ए ब्लॉक में जल भराव, नयाबास के वार्ड नं. 29, महेताब सिंह का नोहरा प्रेम नगर वार्ड नं. 8 एवं एरोड्रम रोड स्थित नाले की साफ-सफाई कराने एवं गायत्री मंदिर रोड पर कॉम्पलेक्स में महिलाओं के लिए सुविधा घर बनवाने की परिवेदना प्राप्त होने पर उन्होंने नगर निगम आयुक्त को निर्देश दिये कि परिवेदनाओं का यथाशीघ्र निस्तारण करावे ताकि आमजन को किसी प्रकार की असुविधा नहीं होवे। इस दौरान एडीएम प्रथम मुकेश कायथवाल, एडीएम शहर बीना महावर, यूआईटी सचिव धीगदे स्नेहल नाना, जिला परिषद के सीईओ सालुखे गौरव रवीन्द्र, नगर निगम आयुक्त जितेन्द्र सिंह नरूका, प्रशिक्षु आईएएस ऐश्वयर्म प्रजापति, पीडब्ल्यूडी के अधीक्षण अभियन्ता भूरी सिंह, जलदाय विभाग के अधीक्षण अभियन्ता रमेश चंद सैनी, विद्युत विभाग के अधीक्षण अभियन्ता सुधीर पाण्डे, सीएमएचओ डॉ. योगेन्द्र शर्मा, महिला अधिकारिता विभाग के उप निदेशक ऋषिराज सिंघल, पीएमओ डॉ. सुनील चौहान, सामाजिक न्याय एवं अधिकरिता विभाग के उप निदेशक लक्ष्मण सिंह, मंडी सचिव अंजू जाटव सहित संबंधित अधिकारी एवं वीसी के माध्यम से सभी उपखण्ड अधिकारी एवं विकास अधिकारी जुडे।

कृषि एवं उद्यान विभाग के कार्मिकों ने पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया

कृषक गोष्ठी का आयोजन कर किसानों को आधुनिक खेती तकनीकों की जानकारी दी

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला के निर्देशन में जिले में संचालित वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान एवं हरियालो राजस्थान अभियान के तहत आज अलवर स्थित नारायण विलास नर्सरी में कृषि विभाग एवं उद्यान विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक पी.सी मीणा ने बताया कि वंदे गंगा अभियान के अंतर्गत कृषि एवं उद्यान विभाग द्वारा फार्म पौण्ड एवं सिंचाई पाइपलाइन की स्वीकृति जारी की गई है। उमरैण ब्लॉक में प्राकृतिक, जैविक एवं पीसीजन खेती पद्धति पर कार्यशाला एवं प्रदर्शनी तथा किसान चौपाल का आयोजन कर कम्पोस्टिंग तकनीक का प्रचार-प्रसार किया गया।

कृषक गोष्ठी का हुआ आयोजन

वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत आज कृषि विज्ञान केंद्र नौगांवा में कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें कृषकों को विभाग द्वारा संचालित योजनाओं एवं आधुनिक कृषि तकनीक की विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही वंदे गंगा अभियान के तहत जल एवं पर्यावरण संरक्षण करने की शपथ दिलाई गई। किसानों से जल संरक्षण हेतु आधुनिक सिंचाई पद्धियों को अपनाने का आह्वान किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के प्रमुख योगाचार्यो ने किया योगाभ्यास एवं प्राप्त किया दिशा निर्देश

पतंजलि योग संस्थान द्वारा जनजागरण हेतु निकली काला कुआँ क्षेत्र में प्रभात रैली

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। आगामी 21 जून 2025 को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस को सफल बनाने हेतु जिला प्रशासन एवं आयुष विभाग अपनी हर संभव कोशिश कर रहा है वही योगाचार्यो द्वारा भी योगाभ्यास द्वारा लोगो को जागृत किया जा रहा है। इसी के अंतर्गत पतंजलि योग संस्थान द्वारा बृजमोहन पाठक जी के नेतृत्व में जनजागरण हेतु काला कुआँ क्षेत्र में प्रभात रैली निकली गयी जिसका मुख्य उद्देश्य योग को बढ़ावा देना था। प्रातः 06.00 बजे से शंखनाद, बांसुरी वादन, ब्रह्मकुमारी का ध्यान योग, प्रातः 06.15 पर मुख्य अतिथि का आगमन, दीप प्रज्वलन, स्वागत, 06.30 बजे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का देश को संबोधन, 7 बजे योगा कार्यक्रम प्रारम्भ, 07-45 पर योगा पश्चात् अतिथि द्वारा शपथ 8 बजे कार्यक्रम समापन होगा। इस वर्ष मुख्यमंत्री के आह्वान पर पर्यटन स्थलों पर भी योगा कार्यक्रम किये जायेंगे अलवर में मुख्य कार्यक्रम इन्दिरा गाँधी स्टेडियम, कम्पनी बाग़, मूसी महारानी की छत्री, बायो डाइवर्सिटी पार्क, सरिस्का वन क्षेत्र में आयोजित किया जाएगा। प्रशासन एवं आयुष

विभाग द्वारा योगा हेतु व्यवस्था की जाएगी। आर.डी.एन.सी.मित्तल फाउंडेशन द्वारा मित्तल हॉस्पिटल में लगातार योगाचार्यो का योगाभ्यास जारी है। वही गाँधी स्वास्थ्य सदन समिति , ममता दीदी द्वारा ब्रह्मकुमारी विश्वविद्यालय योग संस्थान में एवं कल्पतरु योग संस्थानों पर भी लगातार योगाभ्यास जारी है मुख्य मंचो पर योग प्राकर्तिक आयुर्वेद विभाग, पतंजलि योग संस्थान , गाँधी स्वास्थ्य सदन समिति , भारतीय योग संसथान, सर्व हितकारी योग संसथान, कल्पतरु योग संस्थान के योगाचार्यो योग करवायेंगे। इस वर्ष प्राइवेट संस्थाओ में आर.डी.एन.सी.मित्तल फाउंडेशन, ब्रह्मकुमारी विश्वविद्यालय योग संस्थान, लायंस क्लब अलवर मत्स्य, लायंस क्लब अलवर सिटी, लायंस क्लब अलवर, स्काउट गाइड फ़ेलोशिप अलवर, रोटरी क्लब अलवर, रोटरी क्लब ग्रेटर, रोटरी क्लब अलवर फोर्ट, रोटरी क्लब अलवर सरिस्का, रोटरी क्लब अलवर शालीमार, रोटरी क्लब अरावली, रोटरी क्लब सेंट्रल, रोटरी क्लब शौर्य, भारत विकास परिषद्, इनर व्हील क्लब, वामा क्लब, नेक कमी समूह, विज़न संसथान, सद्भाव मंच, सहयोग सेवा संसथान, संयुक्त व्यापार महासंघ, लघु उद्योग भारती, जय कृष्णा क्लब, देवेश फाउंडेशन, सब्जी मंडी / फल मंडी व्यापर संघ, ऑटो मोबाइल एसोसिएशन, कंपनी बाग़ विकास समिति, नेहरु उद्यान विकास समिति, होटल एसोसिएशन, टेंट एसोसिएशन, एन.सी.सी., स्काउट एंड गाइड, अलवर जिला व्यापर महासंघ, चूड़ी मार्किट विकास समिति, अलवर चैम्बर ऑफ़ कॉमर्स, कृषि उपज मंडी विकास समिति, ई.एस.आई.सी. मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल, मेडिकल कॉलेज अलवर, इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, केमिस्ट एसोसिएशन, मेडिकल सेल्स रिप्रेजेन्टेटिव एसोसिएशन, अधिवक्ता एवं बार एसोसिएशन, मत्स्य उद्योग संघ, एक पहल संस्था, बंधुआ मुक्ति मोर्चा, सतीश भाटिया चैरिटेबल ट्रस्ट, नारायण सेवा संसथान, सभी प्राइवेट कोचिंग इंस्टिट्यूट, सभी सरकारी-गैरसरकारी स्कूल, कॉलेज, संस्थानों, को सम्पर्क करके बुलाने का प्रयास किया गया है जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग आकर योग करे ओर अपने जीवन को स्वस्थ एवं खुशहाल बनाये।

योग को लेकर आमजन में दिख रहा उत्साह, कर रहे योगाभ्यास

आयुष विभाग एवं विभिन्न योग संस्थानों के प्रशिक्षकों द्वारा करवाया जा रहा योगाभ्यास

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। क पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग" थीम पर मनाये जा रहे 11 वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में आयुष विभाग एवं विभिन्न योग संस्थानों के तत्वाधान में जयपुर महानगर के 13 प्रमुख धार्मिक एवं पर्यटक स्थलों-एस.एम.एस स्टेडियम, अल्बर्ट हाल, हवामहल, आमेर महल, बिरला मंदिर, श्री गोविंद देव जी मंदिर, श्री गलता जी मंदिर, जलमहल, पत्रिका गेट, सिटी पार्क, सेंट्रल पार्क, सिटी पैलेस, जयगढ पर प्रातः 07.00 बजे योग का पूर्वाभ्यास कार्यक्रम करवाया गया, जिसमें लगभग 7000 स्थानीय लोगों ने उत्साह के साथ भाग लिया। इसके पश्चात् अतिरिक्त निदेशक आयुर्वेद विभाग, जयपुर संभाग ने आयुष भवन, प्रताप नगर में योग दिवस के सफल आयोजन के लिए सभी समितियों की बैठक ली।

नगर निगम ग्रेटर सतर्कता शाखा की टीम द्वारा की गई कार्यवाही

8 हजार रुपये का किया कैरिंग चार्ज वसूल, 4 केन्टर सामान जब्त

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। नगर निगम ग्रेटर आयुक्त रुकमणि रियाड़ के निर्देशानुसार उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार शर्मा के नेतृत्व में गुरुवार को सतर्कता शाखा की टीम द्वारा नगर निगम जयपुर ग्रेटर के क्षेत्राधिकार में चरक भवन, बांगड़, जेके लॉन, लालकोठी मण्डी, स्वेजफार्म सोडाला, पत्रकार सर्किल वन्देमातरम रोड आदि स्थानों से अस्थाई अतिक्रमण को करने वालों के विरुद्ध 8 हजार रुपये का कैरिंग चार्ज वसूल कर 4 केन्टर सामान जब्त किया गया। उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार ने बताया कि नगर निगम ग्रेटर क्षेत्राधिकार में चरक भवन, बांगड़, जेके लॉन, लालकोठी मण्डी, स्वेजफार्म सोडाला, पत्रकार सर्किल वन्देमातरम रोड आदि स्थानों से अस्थाई अतिक्रमण हटवाया गया। उपरोक्त कार्यवाही के दौरान 4 केन्टर सामान जब्त कर गोदाम में भिजवाया गया व अस्थाई अतिक्रमण करने वालों से मौके पर 8 हजार रुपये का कैरिंग चार्ज वसूल किया गया तथा दौरे के दौरान कार्यवाही सतर्कता टीम द्वारा मौके पर समझाइश करते हुए मौखिक पाबंद करवाया कि भविष्य में अस्थाई अतिक्रमण समय से हटा ले अन्यथा नगर निगम जयपुर ग्रेटर के क्षेत्राधिकार में अवैध अतिक्रमण करने वालों के विरुद्ध भारी चालान या प्रभावी कार्यवाही अमल में लाई जायेगी।

आरयूएचएस अस्पताल में शुरू हुई स्पोर्ट्स इंजरी और लिगामेंट सर्जरी की सुविधा, महिला खिलाड़ी की हुई सफल सर्जरी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा की पहल एवं चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर के मार्गदर्शन में आरयूएचएस अस्पताल, जयपुर में विशेषज्ञ चिकित्सा सेवाओं का लगातार विस्तार किया जा रहा है। इसी क्रम में गुरुवार को अस्पताल में स्पोर्ट्स इंजरी और आर्थोस्कोपिक लिगामेंट सर्जरी की सुविधा भी शुरू कर दी गई। इस नई सुविधा के तहत पहली सर्जरी 23 वर्षीय एक महिला खिलाड़ी की सफलतापूर्वक की गई। चाकसू निवासी उक्त खिलाड़ी को खेल के दौरान घुटने में गंभीर चोट लग गई थी, जिससे उसे चलने-फिरने में परेशानी के साथ-साथ घुटने में सूजन और जोड़ के अटकने जैसी समस्याएं हो रही थीं। समय पर इलाज नहीं मिलने की स्थिति में यह चोट भविष्य में विकलांगता का कारण बन सकती थी। आरयूएचएस के अधीक्षक डॉ. महेश मंगल ने बताया कि अस्थि रोग विभाग के डॉ. सिद्धार्थ शर्मा एवं उनकी टीम ने इस जटिल लिगामेंट सर्जरी को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। डॉ. मंगल ने यह भी बताया कि इस प्रकार की सर्जरी निजी अस्पतालों में अत्यधिक महंगी होती है, लेकिन आरयूएचएस में यह सर्जरी मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना के तहत पूरी तरह निशुल्क की गई, जिससे मरीज को बड़ी राहत मिली। इससे पहले भी आरयूएचएस में लगातार सेवाओं का विस्तार किया गया है। चिकित्सा शिक्षा सचिव अम्बरीश कुमार ने जानकारी दी कि 2 जून को अस्पताल में एंजियोग्राफी एवं एंजियोप्लास्टी की सुविधा शुरू की गई थी, इसके बाद प्लास्टिक सर्जरी की सुविधा भी शुरू की गई। अब स्पोर्ट्स इंजरी एवं लिगामेंट सर्जरी की शुरुआत से अस्थि रोगियों व खिलाड़ियों को अत्याधुनिक उपचार मिल सकेगा। इस नई पहल से प्रदेश के खिलाड़ियों एवं आमजन को बड़ी राहत मिलने की उम्मीद है।

पेड़ की टहनियों में उलझे विद्युत तारों से हादसे की आशंका

नावां सिटी(निसं.)। नांवा सिटी के निकटवर्ती मीठड़ी कस्बे की मुख्य सड़क पर बिजली विभाग की लापरवाही से बड़ा हादसा हो सकता है। जाल के बालाजी मंदिर के पास पीपल के पेड़ की टहनियां बिजली के तारों में उलझी हुई हैं। तेज हवा, आंधी और बारिश के समय तारों में स्पार्किंग होती है। ऊपर का एक तार स्पार्किंग से कमजोर हो चुका है। इससे कभी भी जानलेवा हादसा हो सकता है। स्पार्किंग के दौरान दुकानदारों और आसपास के लोगों में डर फैल जाता है। यह पीपल का पेड़ पदमपुरा-लिचाणा मुख्य सड़क मार्ग पर है। इस मार्ग से रोज हजारों वाहन गुजरते हैं। पास ही गोपेश्वर महादेव, जाल का बालाजी और भादीपीठ मंदिर जैसे धार्मिक स्थल हैं। सुबह और शाम श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है। बारिश के मौसम में पेड़ करंट से प्रभावित हो सकता है। ग्रामीण इन्द्रसिंह, कैसर सिंह, नरेन्द्र सिंह और भवानीसिंह ने बताया कि इस समस्या की कई बार ऑनलाइन शिकायत की गई। मीठड़ी पावर हाउस पर कनिष्ठ अभियंता को भी कई बार जानकारी दी गई।

जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने की जनसुनवाई

जिला स्तरीय जनसुनवाई में आमजन का समस्याओं का हुआ समाधान

एक ही दिन में सुनीं 182 परिवेदनाएं, 22 फरियादियों को मौके पर ही मिली राहत

संबंधित अधिकारियों को परिवेदनाओं के समयबद्ध एवं प्रभावी निस्तारण के दिये निर्देश

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। गुरुवार को जिला कलक्ट्रेट सभागार में जिला स्तरीय जनसुनवाई का आयोजन किया गया। जिला स्तरीय जनसुनवाई कार्यक्रम में जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने राजस्व प्रकरणों से जुड़े 86 परिवादों सहित 182 फरियादियों के परिवाद सुने, जिनमें से 22 प्रकरणों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। अन्य प्रकरणों के त्वरित निस्तारण के लिए कलक्टर ने संबंधित विभाग के अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिये। इस मौके पर विधायक प्रशांत शर्मा भी मौजूद रहे। जिला स्तरीय जनसुनवाई में कुल 182 प्रकरण प्राप्त हुए जिनमें प्रमुख रूप से अतिक्रमण हटवाने पेंशन शुरू करवाने, सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ दिलवाने, पेयजल की सप्लाई सुचारू कराने, पत्थरगढ़ी, कृषि भूमि में आवागमन हेतु रास्ता खुलवाने, वृद्धावस्था पेंशन, सड़क, आवासीय पट्टा, बनवाने नामांतरण जमीन विवाद सहित विभिन्न विषयों से संबंधित शिकायतें प्राप्त हुई। जनसुनवाई में प्राप्त प्रकरणों का जिला कलक्टर ने संबंधित अधिकारियों को आमजन के प्रति जवाबदेही के साथ समस्याओं का निस्तारण करते हुए राहत देने के निर्देश दिए। उल्लेखनीय है कि माननीय मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा आमजन के अभाव अभियोगों के समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण को लेकर संवेदनशील हैं। मुख्यमंत्री भजनलाल ने पारदर्शी एवं संवेदनशील वातावरण में आमजन की परिवेदनाओं एवं समस्याओं की सुनवाई एवं त्वरित समाधान के लिए जिला प्रशासन को नियमित जनसुनवाई के निर्देश दिये हैं। जनसुनवाई में जिला परिषद की मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रतिभा वर्मा, अतिरिक्त जिला कलक्टर (प्रथम) विनीता सिंह, अतिरिक्त जिला कलक्टर (द्वितीय) आशीष कुमार, अतिरिक्त जिला कलक्टर (तृतीय) कुंतल विश्नोई, अतिरिक्त जिला कलक्टर (चतुर्थ) संतोष कुमार मीणा अतिरिक्त जिला कलक्टर (दक्षिण) संतोष कुमार मीणा, अतिरिक्त जिला कलक्टर (उत्तर) मुकेश कुमार मूंड सहित चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, पुलिस विभाग, विद्युत विभाग, सार्वजनिक निर्माण विभाग, जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग, कृषि विभाग, वन विभाग, राजस्व विभाग सहित अन्य संबंधित विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

हमसफर एक्सप्रेस के विजयनगर ठहराव को लेकर केंद्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी ने रेल मंत्री को लिखा पत्र

प्रवासी यात्रियों की सुविधा के लिए उठाई मांग, जल्द निर्णय की उम्मीद

जयपुर टाइम्स

किशनगढ़ (अजमेर) केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री तथा अजमेर सांसद भागीरथ चौधरी ने अजमेर लोकसभा क्षेत्र के हजारों प्रवासी नागरिकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए एक अहम पहल की है। उन्होंने केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को पत्र लिखकर हमसफर एक्सप्रेस ट्रेन का ठहराव विजयनगर (ब्यावर) रेलवे स्टेशन पर सुनिश्चित करने की मांग की है। केंद्रीय मंत्री ने पत्र में कहा कि मसूदा विधानसभा क्षेत्र के चेलनगढ़, मायावरम, श्रीकाली, गुलाबपुर, नसीराबाद, विजयनगर, बांदनवाड़ा सहित अन्य गांवों के अनेक निवासी रोजगार के लिए दक्षिण भारत के विभिन्न राज्यों में प्रवास करते हैं। ऐसे में अजमेर और भीलवाड़ा को जोड़ने वाली हमसफर एक्सप्रेस ट्रेन इन प्रवासी नागरिकों के लिए प्रमुख रेल संपर्क माध्यम है। किंतु वर्तमान में यह ट्रेन केवल अजमेर और भीलवाड़ा स्टेशनों पर ही रुकती है, जिससे इन यात्रियों को भारी असुविधा का सामना करना पड़ता है। राज्यमंत्री चौधरी ने बताया कि ट्रेन से उतरने के बाद इन यात्रियों को विशेष रूप से रात के समय लंबी दूरी निजी साधनों से तय करनी पड़ती है, जिससे न केवल आर्थिक बोझ बढ़ता है बल्कि सुरक्षा की चिंता भी बनी रहती है। उन्होंने कहा कि यदि हमसफर एक्सप्रेस का महज दो मिनट का ठहराव विजयनगर स्टेशन पर स्वीकृत कर दिया जाए, तो हजारों यात्रियों को इसका सीधा लाभ मिलेगा। उन्होंने बताया कि इस जनहित के मुद्दे को गंभीरता से लेते हुए रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने आश्वस्त किया है कि विजयनगर स्टेशन पर हमसफर एक्सप्रेस के ठहराव को लेकर शीघ्र सकारात्मक निर्णय लिया जाएगा। इस पहल को लेकर क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों और नागरिकों ने आभार व्यक्त किया है।

प्री-मानसून की पहली बारिश में ही खुली रेलवे व पालिका प्रशासन की पोल

डेढ़ घंटे की बारिश में अंडरपास में भरे पांच फीट पानी, फंसी बोलेरो गाड़ी, ड्राइवर ने कूदकर बचाई जान

जयपुर टाइम्स

फुलेरा(निसं.)। क्षेत्र में प्री-मानसून की पहली बारिश ने जहां लोगों को गर्मी से राहत दी, वहीं प्रशासन की तैयारियों की पोल भी खोलकर रख दी। शनिवार शाम करीब डेढ़ घंटे तक झमाझम बारिश हुई, जिससे कस्बे के चारों ओर बने रेलवे अंडरपास जलभराव के कारण आमजन के लिए मुसीबत बन गए। फुलेरा को रेलवे कॉलोनी से जोड़ने वाला न्यू कॉलोनी के पास स्थित अंडरपास जो कि फुलेरा-जोधपुर रेल लाइन पर बना है और रेलवे कॉलोनी, श्याम नगर, ढ़ाणी नागान समेत दर्जनों गांवों को जोड़ता है । महज कुछ ही देर की बारिश में लबालब भर गया। अंडरपास में करीब पांच फीट पानी जमा हो गया, जिससे एक बोलेरो गाड़ी बीचोंबीच फंस गई। स्थिति इतनी गंभीर हो गई कि वाहन चालक को अपनी जान बचाने के लिए गाड़ी छोड़कर पानी में उतरना पड़ा। गनीमत रही कि गाड़ी में ड्राइवर के अलावा कोई अन्य सवार नहीं था। इस जलभराव से दोपहिया व चारपहिया वाहन चालकों की भी सांसें अटक गईं और उन्हें वैकल्पिक मार्ग तलाशने पड़े। वहीं पालिका प्रशासन की लचर व्यवस्थाओं की पोल तब खुली जब कस्बे की विभिन्न कॉलोनियों में पानी भर गया। सब्जी मंडी के पास स्थित कॉलोनी, बालाजी रोड और हरिजन बस्ती में करीब दो से तीन फीट तक पानी जमा हो गया, जिससे स्थानीय निवासियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि हर साल यही स्थिति बनती है, लेकिन न तो रेलवे प्रशासन और न ही नगर पालिका कोई स्थायी समाधान करती है। यदि समय रहते जल निकासी की समुचित व्यवस्था नहीं की गई, तो आगामी मानसून में हालात और भी बदतर हो सकते हैं।

राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय का नवम दीक्षांत समारोह संपन्न, 1770 विद्यार्थियों को प्रदान की गई उपाधियाँ

जयपुर टाइम्स

अजमेर(निसं.)। राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय का नवम दीक्षांत समारोह गुरुवार को विश्वविद्यालय परिसर में भव्यता के साथ संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी उपस्थित रहे। समारोह की अध्यक्षता कुलपति प्रो. आनंद भालेराव ने की। दीक्षांत समारोह में 2024 व 2025 बैच के 1770 विद्यार्थियों को उपाधियाँ प्रदान की गईं, जिनमें 263 स्नातक, 1430 स्नातकोत्तर और 77 पीएच.डी. शोधार्थी शामिल रहे। शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए 94 स्वर्ण पदक वितरित किए गए, जिनमें 34 छात्रों और 60 छात्राओं को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि प्रधान ने कहा, "यह दीक्षांत नहीं, बल्कि जीवन भर सीखते रहने की यात्रा का एक पड़ाव है।" उन्होंने नई शिक्षा नीति, वैश्विक शिक्षा सहयोग, और भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में युवाओं की भूमिका पर बल दिया। समारोह में कुलपति प्रो. भालेराव ने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों की प्रस्तुति दी और विद्यार्थियों से देश के विकास में योगदान देने का आह्वान किया। इस अवसर पर प्रधान ने विश्वविद्यालय के अनेक नव निर्मित भवनों का लोकार्पण एवं शिलान्यास भी किया। समारोह का समापन कुलसचिव अमरदीप शर्मा द्वारा किया गया। संचालन डॉ. शीतल प्रसाद महेन्द्र और अनुराधा मित्तल ने किया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की पूर्व संध्या पर आज सेंट्रल पार्क में 'सरस योग संगम', राज्यपाल होंगे मुख्य अतिथि

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की पूर्व संध्या पर राजस्थान को-ऑपरेटिव डेयरी फैडरेशन द्वारा आज शाम 5.30 बजे सेंट्रल पार्क में भव्य 'सरस योग संगम' का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े होंगे। इस अवसर पर खेल एवं युवा मामलात मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़, संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल तथा सिविल लाइन्स विधायक गोपाल शर्मा भी उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम में योग साधकों और आमजन के लिए निःशुल्क सामूहिक योगाभ्यास का आयोजन किया जाएगा, जिसका नेतृत्व प्रसिद्ध योग प्रशिक्षक डॉ. महेन्द्र सिंह राव करेंगे। योगाभ्यास के साथ-साथ निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर भी लगाया जाएगा, जिसमें एलोपैथी, होम्योपैथी और आयुर्वेद के अनुभवी चिकित्सक सेवाएं देंगे। बीपी, शुगर जैसी सामान्य जांचें भी निःशुल्क कराई जाएंगी। राजस्थान को-ऑपरेटिव डेयरी फैडरेशन की प्रशासक एवं प्रबंध संचालक श्रुति भारद्वाज ने बताया कि सरस योग संगम का उद्देश्य आमजन को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना और योग को दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाना है। कार्यक्रम में योग, ध्यान, कथक और जल का फ्यूजन विशेष आकर्षण रहेगा। जयपुर कथक केंद्र के कलाकार कथक नृत्य के माध्यम से योग व ध्यान की मुद्राओं की मोहक प्रस्तुति देंगे। साथ ही बाल योगाचार्य तन्मय सिंह राव और नेशनल योग प्लेयर अंकुश जांगिड़ भी योग की विशेष मुद्राओं का प्रदर्शन करेंगे। इस अवसर पर सरस डेयरी द्वारा सभी प्रतिभागियों को निःशुल्क छाछ और लस्सी वितरित की जाएगी। भारद्वाज ने जयपुरवासियों से स्वास्थ्य लाभ के लिए बड़ी संख्या में इस कार्यक्रम में भाग लेने की अपील की है।

बजट घोषणाओं के समयबद्ध क्रियान्वयन को लेकर अतिरिक्त मुख्य सचिव ने दिए सख्त निर्देश

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव भास्कर ए सावंत ने गुरुवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से विभागीय अधिकारियों के साथ बैठक लेकर बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन, अमृत 2.0 योजना, अवैध जल कनेक्शन, जल जीवन मिशन सहित विभिन्न बिंदुओं की गहन समीक्षा की। उन्होंने अभियंताओं को निर्देश दिए कि बजट घोषणाओं के तहत स्वीकृत सभी हैंडपंप व नलकूप निर्माण कार्यों को गुणवत्ता के साथ समयबद्ध रूप से पूर्ण किया जाए। सावंत ने दौसा जिले में हैंडपंप निर्माण कार्यों की शून्य प्रगति पर नाराजगी जताते हुए कहा कि जिन कार्यों को वित्तीय स्वीकृति मिल चुकी है, उनका शीघ्र निर्माण प्रारंभ कर मुख्यालय स्तर पर नियमित मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि बजट घोषणाओं को केवल कागजों में नहीं, बल्कि धरातल पर लागू करने के लिए अभियंताओं को तत्परता दिखानी होगी। अतिरिक्त मुख्य सचिव ने 22 मार्च से चल रहे अवैध जल कनेक्शन हटाने के अभियान की प्रगति की समीक्षा करते हुए कहा कि चिन्हित अवैध कनेक्शनों को नियमित करने के साथ-साथ राइजिंग मेन लाइन से कनेक्शन लेने वाले व्यक्तियों पर एफआईआर दर्ज कर कानूनी कार्रवाई की जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि अवैध कनेक्शन के कारण आमजन को जल आपूर्ति में समस्या नहीं होनी चाहिए, विशेषकर अंतिम छोर पर बसे उपभोक्ताओं को भी निर्बाध जलापूर्ति सुनिश्चित की जाए। सावंत ने अमृत 2.0 योजना के अंतर्गत स्वीकृत कार्यों की स्थिति की समीक्षा करते हुए कहा कि जहां कार्य प्रारंभ हो चुके हैं, उन्हें तय समयसीमा में पूरा किया जाए और जिन परियोजनाओं की निविदा प्रक्रिया लंबित है, उन्हें शीघ्र पूर्ण किया जाए। उन्होंने विधानसभा से संबंधित लंबित प्रश्नों के उत्तर समय पर भेजने तथा 'वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान' और आगामी 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा अभियान' की प्रभावी तैयारी के निर्देश भी दिए। अतिरिक्त मुख्य सचिव ने जल मित्र एप पर प्राप्त नवीन जल कनेक्शन आवेदनों को प्राथमिकता से निपटाने की बात कही। उन्होंने कहा कि औद्योगिक क्षेत्रों में निवेशकों को शीघ्र जल कनेक्शन देना राज्य सरकार की प्राथमिकता है, इसलिए राज निवेश एप पर प्राप्त आवेदनों का शीघ्र समाधान सुनिश्चित किया जाए। अनावश्यक विलंब करने वाले अभियंताओं पर विभागीय कार्रवाई की जाएगी। वीडियो कॉन्फ्रेंस में जल जीवन मिशन के मिशन निदेशक कमर उल जमान चौधरी, मुख्य अभियंता एवं अतिरिक्त सचिव संदीप शर्मा, मुख्य अभियंता (ग्रामीण) के.डी. गुप्ता, मुख्य अभियंता (शहरी) मनीष बेनीवाल सहित विभिन्न क्षेत्रीय अधिकारी उपस्थित रहे।

आत्मचिंतन की मांग करता उत्तराखंड

> *2013 की त्रासदी के बाद भूगर्भीय बदलावों से पैदल मार्ग को 14 किमी से बढ़ाकर 19 किमी करना पड़ा। अब यह मार्ग और कठिन हो गया है, विशेषकर बुजुर्गों के लिए। अब पैदल मार्ग पर घोड़े भी चलते हैं, जो यात्रा को असुरक्षित बना रहे हैं। राहत के रूप में शुरू की गई हेलीकाप्टर सेवा भी आज सुविधा के साथ एक चुनौती बन गई है। ये उड़ानें ध्वनि प्रदूषण करती हैं, जीवाश्म ईंधन जलाती हैं और पर्वतीय जलवायु को क्षति पहुंचाती हैं। हेलीकाप्टर से लोग अल्प समय में गंतव्य तक पहुंच जाते हैं, जहां तापमान, हवा का दबाव और आक्सीजन भी कम होती है। इससे व्यक्ति खुद को मौसम के अनुकूल नहीं ढाल पाता, जिससे स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी पैदा होती हैं। उत्तराखंड सिविल एविएशन डेवलपमेंट अथारिटी हेलीकाप्टर सेवा का संचालन करती है। यात्रियों के टिकट का मूल्य 7,000 से भी कम रखा है, जो आज किफायती ही कहा जा सकता है, क्योंकि इतने में तो कभी-कभी घोड़े भी नहीं मिलते।*

केदारनाथ यात्रा भारत की पवित्र तीर्थयात्राओं में से एक है। इसकी जड़ें सैकड़ों वर्षों पुरानी हैं और आदिगुरु शंकराचार्य के समय तक जाती हैं। यह केवल एक भौतिक यात्रा नहीं, बल्कि श्रद्धा और तप से भरी आध्यात्मिक यात्रा है। पिछले दस वर्षों में इस यात्रा का स्वरूप पूरी तरह बदल गया है। 2013 की भीषण बाढ़ और उसके बाद हुए पुनर्निर्माण एवं प्रधानमंत्री की यात्रा के बाद केदारनाथ में तीर्थयात्रियों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है।

1990 के प्रारंभ में जहां प्रतिदिन औसतन केवल 2,500 श्रद्धालु दर्शन के लिए आते थे, वहीं आज यह संख्या 30,000 से अधिक हो चुकी है। प्रतिवर्ष 20 लाख से भी अधिक यात्री हर सीजन में केदारनाथ यात्रा करते हैं। इतनी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की केदारनाथ जी में आस्था जहां सुखद अनुभूति है, वहीं व्यवस्था और पर्यावरण की दृष्टि से एक चुनौती भी। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ संवेदनशील हिमालयी वातावरण और पहाड़ों की भारवाहक क्षमता पर दबाव डाल रही है। जब विषय आस्था और भावना से जुड़ा हो, तब भीड़ रोकने के नियमों का पालन कराना कठिन हो जाता है। दुर्भाग्यवश अब यह यात्रा कुछ लोगों के लिए 'स्टेटस सिंबल' बन गई है।

2013 की त्रासदी के बाद भूगर्भीय बदलावों से पैदल मार्ग को 14 किमी से बढ़ाकर 19 किमी करना पड़ा। अब यह मार्ग और कठिन हो गया है, विशेषकर बुजुर्गों के लिए। अब पैदल मार्ग पर घोड़े भी चलते हैं, जो यात्रा को असुरक्षित बना रहे हैं। राहत के रूप में शुरू की गई हेलीकाप्टर सेवा भी आज सुविधा के साथ एक चुनौती बन गई है। ये उड़ानें ध्वनि प्रदूषण करती हैं, जीवाश्म ईंधन जलाती हैं और पर्वतीय जलवायु को क्षति पहुंचाती हैं। हेलीकाप्टर से लोग अल्प समय में गंतव्य तक पहुंच जाते हैं, जहां तापमान, हवा का दबाव और आक्सीजन भी कम होती है। इससे व्यक्ति खुद को मौसम के अनुकूल नहीं ढाल पाता, जिससे स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी पैदा होती हैं।

उत्तराखंड सिविल एविएशन डेवलपमेंट अथारिटी हेलीकाप्टर सेवा का संचालन करती है। यात्रियों के टिकट का मूल्य 7,000 से भी कम रखा है, जो आज किफायती ही कहा जा सकता है, क्योंकि इतने में तो कभी-कभी घोड़े भी नहीं मिलते। इससे हेलीकाप्टर टिकट प्राप्त करना एक चुनौती बन गया है। लंबी कतारें,

टिकटों की कालाबाजारी, फर्जी वेबसाइटों के जाल में फंसना आम है। जब मौसम पूरा दिन साफ रहे, तब भी अधिकतम 2,000 यात्री ही प्रतिदिन हेलीकाप्टर से यात्रा कर सकते हैं, लेकिन टिकटों की मांग 10,000 से भी अधिक होती है। इससे वीआइपी सिफारिशों का प्रशासन पर दबाव बना रहता है। इस क्षेत्र में मौसम अत्यंत अनिश्चित होता है। कभी-कभी तो कुछ ही मिनटों में दृश्यता (विजिबिलिटी) शून्य तक पहुंच सकती है, जिससे सुरक्षित लैंडिंग कठिन हो जाती है।

ऐसे में सुरक्षा मानकों की अवहेलना कर उड़ान भरने का दबाव पायलटों और प्रशासन पर बना रहता है। अगर मानक संचालन प्रक्रियाओं(एसओपी) को सख्ती से लागू किया जाए, तो दुर्घटनाओं की आशंका घट सकती है, पर इससे उड़ानों की संख्या घटेगी, जो व्यावसायिक रूप से हेलीकाप्टर संचालकों के लिए अनुकूल नहीं। श्रद्धालुओं में भी असंतोष बढ़ता है और वे खराब मौसम में भी हेलीकाप्टर संचालन की मांग करते हैं। इन कारणों से हेलीकाप्टर आवश्यकता से अधिक चक्कर लगाते हैं, जिससे उनके रखरखाव की उपेक्षा होती है और तकनीशियनों पर सीमित समय में उनकी सर्विसिंग का दबाव होता है, ताकि अधिक उड़ानों की अव्यावहारिक मांग पूरी की जा सके।खराब मौसम, कठिन भौगोलिक परिस्थितियों और समय के दबाव में कभी-कभी तकनीकी त्रुटि हो जाती है, जो जानलेवा साबित होती है। इसी 15 जून को केदारनाथ से गुप्तकाशी जा रहा हेलीकाप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इसमें पायलट और एक बच्चे सहित सात तीर्थयात्रियों की मृत्यु हो गई। खराब मौसम और दृश्यता की कमी इस दुर्घटना के मुख्य कारण रहे। पायलट ने निर्धारित समय से पहले उड़ान भरी और प्रतिकूल मौसम के बावजूद उड़ान जारी रखी। यह इस वर्ष की चारधाम यात्रा की पांचवीं हेलीकाप्टर दुर्घटना थी।

हेलीकाप्टर आपरेटरों, वीआइपी यात्रियों और तीर्थयात्रियों के दबाव के चलते हेलीकाप्टर सेवा संचालन में आवश्यक एसओपी के उल्लंघन ने इस सेवा को असुरक्षित बना दिया है। यह स्थिति गहन आत्मचिंतन की मांग करती है। सुरक्षित और टिकाऊ यात्रा के लिए बहुआयामी उपायों की आवश्यकता है। सबसे आवश्यक है एक उच्च गुणवत्ता और बड़ी क्षमता वाला रोपवे सिस्टम, जैसा स्विट्जरलैंड में है। यह घोड़ों और हेलीकाप्टर यात्रा, दोनों का एक सुरक्षित विकल्प हो सकता है। यह पर्यावरण हितैषी भी होगा। इसके अस्तित्व में आने पर घोड़ा संचालकों के लिए समुचित पुनर्वास योजना बनाई जानी चाहिए। मौसम-आधारित उड़ान प्रतिबंध अनिवार्य किए जाने चाहिए।

सभी हेलीपैड्स पर रीयल-टाइम मौसम निगरानी प्रणाली होनी चाहिए। पायलटों को पर्वतीय उड़ान का विशेष प्रशिक्षण दिया जाए और उनके ड्यूटी घंटे नियंत्रित किए जाएं। हेलीपैड्स को तकनीकी रूप से उन्नत किया जाए और केवल दोहरे-इंजन, उच्च रखरखाव वाले हेलीकाप्टरों को ही अनुमति दी जानी चाहिए। सभी हेली सेवाओं के लिए एटीसी की तरह एक केंद्रीकृत कमांड सेंटर स्थापित किया जाना चाहिए। इसके साथ एसओपी तथा सुरक्षा सलाह को व्यापक रूप से प्रचारित एवं लागू किया जाने की भी आवश्यकता है। ऐसा ही कुछ देश के अन्य पर्वतीय स्थलों में भी किया जाना चाहिए और विशेष रूप से वहां, जहां हेलीकाप्टर सेवाएं शुरू कर दी गई हैं।

सम्पादकीय

कश्मीर और पाकिस्तान मसलों में तीसरे पक्ष की कोई जगह नहीं

कश्मीर मसले समेत पाकिस्तान से जुड़े अन्य मुद्दों पर भारत का रुख हमेशा से द्विपक्षीय बातचीत पर केंद्रित रहा है। किसी तीसरे पक्ष की भूमिका को भारत ने कभी स्वीकार नहीं किया। संयुक्त राष्ट्र और कुछ अन्य देशों की ओर से कश्मीर मसले पर मध्यस्थता की पेशकश की जाती रही है, लेकिन भारत ने उन्हें सिरे से खारिज कर दिया। पिछले दिनों पहलगाम आतंकी हमले के बाद 'आपरेशन सिंदूर' से सहमे पाकिस्तान ने भारत पर हमले का नाकाम प्रयास किया था। मगर, इससे पहले कि कार्रवाई तेज होती, दोनों देशों की सहमति से संघर्ष विराम की घोषणा कर दी गई। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कई मौकों पर यह दावा किया कि अमेरिका की मध्यस्थता की बदौलत ही भारत-पाकिस्तान के बीच संघर्ष विराम हो पाया है। भारत ने इस दावे को तत्काल खारिज कर दिया था। अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्रंप से फोन पर बातचीत में भी स्पष्ट कर दिया कि पाकिस्तान के आग्रह पर ही भारत ने संघर्ष विराम पर सहमति जताई थी। इसमें अमेरिका की कोई भूमिका नहीं है। दरअसल, भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष विराम की सबसे पहले घोषणा डोनाल्ड ट्रंप ने दस मई को सोशल मीडिया के जरिए की थी। उन्होंने यह दावा भी किया था कि संघर्ष रोकने पर सहमत न होने पर उन्होंने दोनों देशों के साथ व्यापार रोकने की चेतावनी दी थी। इसके बाद ट्रंप ने कई बार इस दावे को दोहराया कि अमेरिका ने ही दोनों देशों को संघर्ष विराम के लिए राजी किया। हालांकि, ट्रंप के दावे से पैदा हुई भ्रम की स्थिति को दूर करने के लिए सरकार ने कई दफा स्पष्ट किया कि इसमें अमेरिका की कोई भूमिका नहीं है। अभी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कनाडा में जी-7 देशों के सम्मेलन में भाग लेने गए थे, जहां डोनाल्ड ट्रंप भी मौजूद थे। मगर, इस दौरान दोनों राष्ट्राध्यक्षों के बीच सम्मेलन से इतर बातचीत नहीं हो पाई। प्रधानमंत्री ने बीते मंगलवार को ट्रंप से फोन पर बातचीत की। विदेश सचिव विक्रम मिसरी के मुताबिक, इस दौरान भारत-पाकिस्तान के बीच पिछले दिनों हुए संघर्ष पर भी बात हुई और प्रधानमंत्री ने दो टूक कहा कि भारत और पाकिस्तान ने बिना किसी मध्यस्थता के अपने शीर्ष सैन्य अधिकारियों के बीच सीधी बातचीत के बाद सैन्य कार्रवाई रोकी थी। मोदी ने स्पष्ट कर दिया कि भारत ने किसी तीसरे पक्ष की मध्यस्थता स्वीकार नहीं की है और न कभी स्वीकार करेगा। यह भी साफ किया चुका है कि अब आतंकवाद को छद्म युद्ध के रूप में नहीं, बल्कि एक युद्ध के ही रूप में देखा जाएगा। इसमें दोराय नहीं है कि आपरेशन सिंदूर के तहत कार्रवाई नपी-तुली, सटीक तथा तनाव को और बढ़ावा नहीं देने वाली थी।

भविष्य की फिक्र

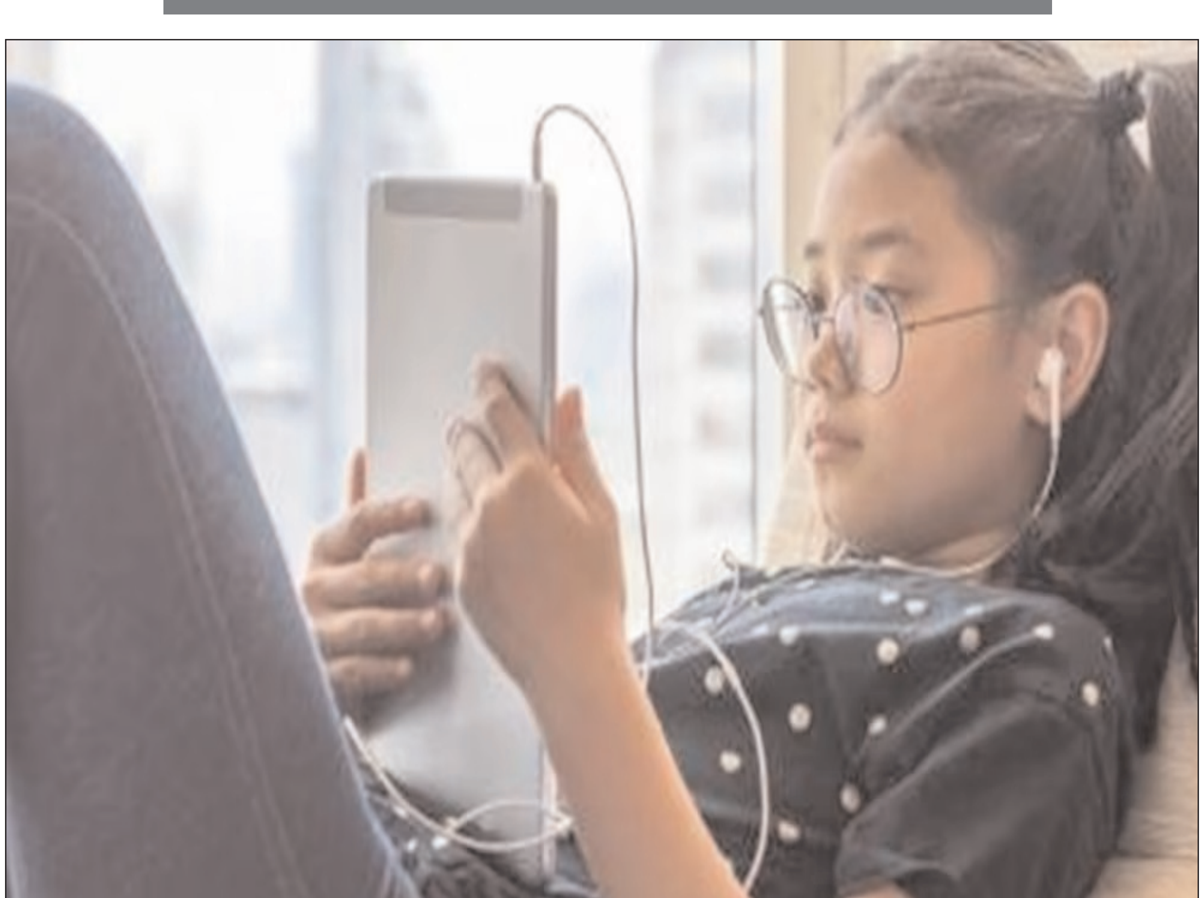

कहावत है कि एक सिक्के के दो पहलू होते हैं। परामर्शदाता के अनुसार दवा मरीज के लिए वरदान है, पर दवा की लत जानलेवा हो सकती है। आज संपूर्ण विश्व नवाचारों के आविष्कार में खोया हुआ है और उसी का परिणाम है कि लोगों के पास घड़ी दो घड़ी अपनों के बीच गुफ्तगू करने का भी समय नहीं है। आनलाइन इंटरनेट युग में लोग विकास की डींगे हांकते जरूर हैं, पर इसने बच्चों के बचपन को लील लिया है। लोगों के बीच संचार क्रांति की उपाधि से विभूषित मोबाइल, लैपटाप, टैबलेट एवं अन्य इलेक्ट्रानिक्स सामानों की लत बच्चों के लिए मुसीबत बनते जा रहे हैं। आए दिन बच्चों में मोबाइल और आनलाइन खेल की लत की खबरों का चर्चा में रहना और अप्रत्याशित घटनाओं का होना माता-पिता की चिंता का कारण बनता जा रहा है। बच्चों के बीच मोबाइल का नशा अफीम और अन्य मादक पदार्थों की तरह होता जा रहा है। अस्पतालों में बच्चों और युवाओं के चिड़चिड़ापन और बिना मोबाइल के खाना न खाना जैसे मामलों ने समाज को एक नई उलझन में डाल दिया है। आखिर विकास के चकाचौंध में आने वाली पीढ़ियों को कैसे बेहतर इंसान बनाया जाए। कहीं ऐसी समस्या के बीज औपनिवेशिक मानसिकता में तो नहीं? क्या इसके लिए भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता से भारतीयों के विमुक्त होने की मानसिकता जिम्मेदार नहीं? क्या ऐसी स्थिति एकाकी परिवार की सोच तो नहीं? ऐसे विचारणीय प्रश्न है जिस पर चिंतन किए जाने की आवश्यकता है। कोई भी देश अपनी संस्कृति को दरकिनार कर प्रगतिशील नहीं हो सकता और न ही खुशहाल जीवन एवं स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकता है। इसलिए शिखर पर पहुंचने की तमन्ना को साकार करना है तो पश्चिमी चश्मे से नहीं, बल्कि भारतीय नजरिए से विकास की गाथा लिखनी होगी, अन्यथा भविष्य अवसाद और क्रूरतम नस्ल की विचारधारा वाला होगा। 'बच्चों में बढ़ती आक्रामकता' (लेख, 3 अगस्त) पढ़ा, जो एक अत्यंत विचारणीय मुद्दा है और समय की आवश्यकता भी। आज बच्चों का फोन के प्रति जुड़ाव का मुख्य कारण बचपन से ही उनके आसपास रहने वाले परिवार के लोगों का फोन से ऐसे चिपके रहना है, मानो वह उनके शरीर का हिस्सा है। एकल परिवार की धारणा ऐसी मजबूत हुई है कि आज बुजुर्ग लोग परिवार का हिस्सा नहीं रह गए हैं। अगर कहीं वे हैं भी तो उनको बच्चों से दूर रखा जाता है, ताकि वे पुरानी बातें न सीखें। जबकि बुजुर्ग जीवन का मूल्य भी समझाते हैं। कहानियां, कविताएं सब कुछ फोन देकर पढ़ाया और याद कराया जा रहा, बजाय इसके कि उसे खुद परिवार द्वारा सुनाया जाए। इसी तरह, युवा वर्ग अगर वीडियो गेम और अन्य को सिर्फ एक 'रिफ्रेशमेंट' की तरह लेते है, पर कब उनके कई घंटे बीत जाते हैं, इसका अंदाजा भी उन्हें नहीं हो पाता। कब गेम में मारते-मारते व्यक्ति के अंदर की संवेदनशीलता, करुणा, दया मर जा रही है, पता नहीं चलता। स्व-अनुशासन की बहुत आवश्यकता है जो बचपन से परिवार और लोगों द्वारा सुनिश्चित करके बच्चों के भीतर उतारा जा सकता है। बच्चे वही सीखते हैं, जो देखते है। वही करते हैं, जो देखते है कि उनके परिवार वाले क्या करके खुश हैं। आज लोग साथ खाना नहीं खाते, चाय साथ नहीं पीते, बातचीत नहीं करते हैं। ये छोटी-छोटी बातें ही कल का भविष्य तय करने वाली है।

यादों की बारात

बताया गया था कि उनका जीवन समाजवाद के आदर्शों के प्रति समर्पित था। वे पूरी तरह जमीन से जुड़े हुए थे और उन्हें गैर-स्वदेशी जीवन-शैली से बेहद परहेज था। पर 1984 के चुनाव अभियान के दौरान एक शाम गांव में स्थित उनके घर पर जाने का संयोग हो गया था, जिसकी याद टिप्पणी पढ़ते ही एकाएक दिमाग खाने लगी। नेताजी अपना दिन भर का चुनावी कार्यक्रम खत्म कर के अपने दो सहयोगियों के साथ जाड़े की शाम को बैठे हुए थे। वे एक सहयोगी से बेहद खफा थे। 'तुम क्या चाहते हो?'

यादें बरातों जैसी होती हैं। जब आती हैं तो बड़े धूम-धड़ाके के साथ आती हैं। वे शोर भी करती हैं और रोमांचित भी। हर याद का एक दूल्हा होता है और उसके इर्दगिर्द नागिन डांस करते हुए कुछ हमसाये होते हैं। बरात का माहौल उन्हीं से बनता है। उनका काम दूल्हे को वेदी तक पहुंचाना होता है। फिर वे रात के अंधेरे में गायब हो जाते हैं। दूल्हा वहीं फंस जाता है और वह सुबह का तारा देख कर ही वेदी से उठ पाता है। यादों की बरात और भी लंबी हो जाती है, जब जिंदगी का बड़ा हिस्सा सार्वजनिक जीवन की चश्मदीदगी में बीता हो। ऐसे में अक्सर बरात बिन बुलाए मेहमान की तरह ड्योढ़ी पर आकर खड़ी होती है और अगर उसकी खातिर तवज्जो में कोई कमी-बेशी रह जाती है, तो उसमें मौजूद तमाम फूफा और सलहजें मुंह फुला कर फुंकार मारने लगते हैं। वैसे उनका नाराज होना वाजिब भी है। आखिर रिश्तों का मतलब ही क्या, अगर उन्हें एहसान बना कर दूसरे पर लादा न जा सके।

रिश्तों की राजनीति नायब होती है। उसके दांव-पेच ठीक हसीना की जुल्फ के खमो-पेच की तरह होते हैं, जिनको कभी सुलझाया नहीं जा सकता है। जब भी, जैसे भी वे बिखर जाएं उनको बिखर जाने देना चाहिए। यह रिश्तों की अदा है- इस अदा पर मर मिट कर ही हम रिवाजों से अपनी आशिकी का सबूत दे सकते हैं। वैसे भी आशिक का जनाजा धूम से निकलता है। बरात की धूम उससे अलग नहीं होती है। बरातें कांड भी कर देती हैं। वे माहौल बिगाड़ देती हैं, स्वाद को बेस्वाद कर देती हैं। अच्छे-भले लोगों का वह रूप दिखा जाती हैं, जिस पर वक्त मिट्टी डाल चुका होता है। अभी एकाध दिन पहले ही एक पूर्व प्रधानमंत्री, जो पूर्वी उत्तर प्रदेश के बेहद गरीब इलाके से थे, के बारे में सोशल मीडिया पर फोटो के साथ टिप्पणी थी। उसमें लिखा था कि वे खेतों तक में जाने से नहीं हिचकते थे। बताया गया था कि उनका जीवन समाजवाद के आदर्शों के प्रति समर्पित था। वे पूरी तरह जमीन से जुड़े हुए

थे और उन्हें गैर-स्वदेशी जीवन-शैली से बेहद परहेज था। पर 1984 के चुनाव अभियान के दौरान एक शाम गांव में स्थित उनके घर पर जाने का संयोग हो गया था, जिसकी याद टिप्पणी पढ़ते ही एकाएक दिमाग खाने लगी। नेताजी अपना दिन भर का चुनावी कार्यक्रम खत्म कर के अपने दो सहयोगियों के साथ जाड़े की शाम को बैठे हुए थे। वे एक सहयोगी से बेहद खफा थे। 'तुम क्या चाहते हो?' उन्होंने ऊंची आवाज में पूछा, 'मैं अपनी कमर तुड़वा लूं? तुम्हारी इस खचड़ा एंबेसडर में बैठ कर क्षेत्र की सड़कों के हर गड्ढे में गोते लगाऊं?' 'नहीं नेताजी', सहयोगी हमारी उपस्थिति की वजह से उनकी डांट पर कुछ हड़बड़ा गए थे। 'तो फिर, क्या करोगे?' नेताजी जारी रहे, 'अभी तक तो कुछ किया नहीं तुमने! तुम्हारी नजर में तो हम सिर्फ एंबेसडर के ही लायक हैं। क्या हुआ उस मर्सिडीज का? जब हम आए थे तभी कहा था कि दिल्ली से मंगवा लो, पर तुम तो बसज' नेताजी ने अपने को थोड़ा संभाला था। 'मैंने आज ही टैक्सी वाले से बात की है। आपकी पसंदवाली मर्सिडीज कल सुबह दिल्ली से निकल लेगी।' नेताजी ने लंबी सांस भरी। 'चलो देखते हैंज वैसे तुम्हारी मंशा ठीक नहीं है।' सहयोगी मुस्करा रहे थे। उन्होंने चुहल की, 'हमने सोचा था कि आपकी छवि के साथ एंबेसडर ठीक चलेगी।' 'तुम ज्यादा मत सोचा करोज और सुन लो, वोट हनक पर पड़ते हैं। हमारी क्षेत्र में हनक है, इसलिए एंबेसडर नहीं चलेगी। ये गरीब गुरबा मर्सिडीज पर टूटते हैं, समझेज अगर तुम ठीक से उगाही किए होते तो हम हेलीकॉप्टर मंगातेज पर चलो, अब मर्सिडीज ही सहीज कुछ आराम तो मिलेगा, नहीं तो ये गांव-देहात हमें तोड़ देगा।' अपनी बात करते-करते उन्होंने अपने भतीजे को पुकार लगाई और अंग्रेजी में कहा, 'हैव यू ड्रान माय बाथ। इज द वाटर वार्म एनफ? ऐंड पुट माय बाथिंग साल्ट्स इन इटज ज्यादा सेज ऑयम वेरी टायर्ड।' हम अवाक सब सुन रहे थे। बेहद गरीब परिवार से उपजा, गरीबों का मसीहा, समाजवादी क्रांति का सतत संघर्षशील सिपाही, अंग्रेजों के महंगे नमक से नहाने की तैयारी कर रहा था। गरीबों की राजनीति ने उसे इतना मोहताज कर दिया था कि हेलीकॉप्टर की जगह उसे मर्सिडीज से काम चलाना पड़ रहा था। हमारे अंदर का वोटर उनकी दशा पर बेहद शर्मिंदा हुआ था।

फिर दिलजीत दोसांझ के साथ काम करेंगे इम्तियाज अली

फिल्म निर्माता इम्तियाज अली अमर सिंह चमकीला के बाद एक बार फिर दिलजीत दोसांझ के साथ एक और फिल्म बनाने को तैयार हैं। फिल्म प्यार और लालसा की कहानी होगी और साल 2026 में रिलीज होगी। इस फिल्म में दिलजीत के साथ नसीरुद्दीन शाह, वेदांग रैना और शरवरी जैसे सितारे स्क्रीन स्पेस साझा करेंगे। फिल्म की शूटिंग अगस्त 2025 से शुरू होगी और 2026 में बैसाखी पर सिनेमाघरों में रिलीज होगी। लेखक-निर्देशक इम्तियाज अली ने एक बयान में कहा- तुम मेरे पास होते हो गोया, जब कोई दूसरा नहीं होता – मोमिन। क्या वाकई प्यार खो सकता है? क्या किसी के दिल से घर छीना जा सकता है? अली ने बताया कि फिल्म बहुत बड़ा दिल रखती है। डायरेक्टर ने आगे कहा, इसका कैनवास बड़ा है, फिर भी यह बहुत निजी है। यह एक लड़के और लड़की की कहानी है, हमें उम्मीद है कि अगले साल आपके नजदीकी थिएटर में यह कहानी आपको काफी पसंद आएगी। फिल्म के बारे में अभी सारी बातों को गुप्त रखा गया है। यह पहली बार होगा जब दिलजीत, वेदांग और शरवरी के साथ स्क्रीन शेयर करते नजर आएंगे। वहीं, इम्तियाज, ए.आर. रहमान और इरशाद कामिल की जादुई तिकड़ी एक बार फिर साथ में काम करेगी। इससे पहले भी तीनों ने रॉकस्टार, हाईवे, तमाशा, अमर सिंह चमकीला में साथ काम किया है। फिल्म निर्माता और दिलजीत के साथ काम करने के बारे में बात करें तो, दोनों ने 2024 की ब्लॉकबस्टर फिल्म अमर सिंह चमकीला में साथ काम किया था, यह एक बायोग्राफिकल ड्रामा फिल्म थी, जो कि संगीतकार अमर सिंह चमकीला के जीवन पर आधारित थी। इसका निर्देशन, निर्माण और सह-लेखन इम्तियाज अली ने किया। फिल्म में दिलजीत दोसांझ मुख्य भूमिका में थे, जबकि परिणीति चोपड़ा उनकी दूसरी पत्नी अमरजोत की भूमिका में थीं। फिल्म का संगीत ए.आर. रहमान ने तैयार किया, जबकि गीत इरशाद कामिल ने लिखे थे।

किताबों से नहीं, असली अभ्यास से बेहतर होती है एक्टिंग

हाउसफुल 5 की एक्ट्रेस सौंदर्या शर्मा का मानना है कि एक्टिंग सीखने का सबसे अच्छा तरीका है, असलियत में एक्टिंग करना। उन्होंने कहा कि चाहे कितनी भी किताबें पढ़ लो या बातें सुन लो, लेकिन अभिनय की समझ और कला सिर्फ अभ्यास से ही बेहतर होती है। सौंदर्या ने आईएएनएस को दिए इंटरव्यू में बताया कि उन्होंने थिएटर और सिनेमा, दोनों में काम किया है। साथ ही दोनों जगहों के अनुभव को साझा किया।

सौंदर्या ने दिल्ली के नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा (एनएसडी) में वर्कशॉप किया है। इसके अलावा, उन्होंने अमेरिका के लॉस एंजेलिस में ली स्ट्रासबर्ग थिएटर में पढ़ाई की और वहां एनवाईएफए से एक्टिंग का कोर्स भी किया है। उन्होंने कहा कि वह थिएटर और सिनेमा दोनों में अभी नई हैं। वह अभी भी सीख रही हैं कि इस इंडस्ट्री में काम कैसे होता है और चीजें कैसे चलती हैं।

एक्ट्रेस ने कहा, थिएटर और सिनेमा पर काम करना अलग होता है। थिएटर में जब आप एक्टिंग करते हो, तो आपको स्टेज के आखिरी कतार में बैठे लोगों तक अपनी बात पहुंचानी होती है। वहां हर भावना, हर किरदार को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाना होता है। उन्होंने आगे कहा, भावनाएं तो वही होती हैं, लेकिन उन्हें दिखाने का तरीका अलग होता है। हाउसफुल 5 पूरी तरह से अलग फिल्म है। इसमें ज्यादा अलग-अलग भावनाएं नहीं हैं। इसमें खुशी और मस्ती का माहौल रहता है, जैसे रोजमर्रा की जिंदगी में होता है। लेकिन हां, जब मैं और काम करूंगी, तो बहुत कुछ सीख पाऊंगी। इंसान सिर्फ काम करके ही अच्छा बनता है। एक्टिंग सीखने से नहीं, बल्कि असलियत में करने से आती है और अभ्यास से बेहतर होती है। यह मेरी राय है।

इससे पहले आईएएनएस को दिए इंटरव्यू में सौंदर्या ने बताया था कि उनके लिए लाल परी का खिताब क्या मायने रखता है। उन्होंने अपने जवाब में कहा था, जब कहीं से कोई अचानक कहता है, अरे देखो, लाल परी सौंदर्या, तो यह सुनकर अच्छा लगता है। इस टाइटल ने मुझे नई पहचान दी है। इससे ऐसा लगता है जैसे लोग मेरे काम को सच में पसंद कर रहे हैं। मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूं। जब उनके लाल परी टाइटल की तुलना मलाइका अरोड़ा की मुन्नी बदनाम और कैटरीना कैफ की शीला की जवानी से की गई थी, तो उन्होंने जवाब देते हुए कहा था, आप जिन दो कलाकारों की बात कर रहे हैं, वे मेरी सीनियर्स हैं। उनसे मेरी तुलना होना बहुत बड़ी बात है। मेरा सफर तो अभी शुरू ही हुआ है। मैं ज्यादा अच्छा काम करना चाहती हूं, ताकि लोगों से मुझे ऐसे ही ढेर सारा प्यार मिलता रहे।

सैयारा में अहान पांडे को लेकर बोले निर्देशक मोहित सूरी

अनन्या पांडे के चचेरे भाई अहान पांडे सैयारा फिल्म में अनीत पड्डा के साथ डेब्यू करने के लिए तैयार हैं। फिल्म का निर्देशन मोहित सूरी कर रहे हैं। हाल ही में एक इंटरव्यू में मोहित ने बताया है कि वह फिल्म में अहान को लेने के लिए पूरी तरह से संतुष्ट नहीं थे। उन्हें फिल्म में सीधे लेने के बजाए उनको परखने का रास्ता अपनाया। बाद में उन्हें एहसास हुआ कि अहान का ऑफ-कैमरा व्यवहार, किरदार से काफी मेल खाता है। बातचीत में मोहित सूरी से फिल्म सैयारा में अहान पांडे और अनीत पड्डा को लिए जाने के बारे में पूछा गया। इस पर उन्होंने कहा शानू शर्मा जो यश राज फिल्म्स के लिए कास्ट करते हैं, ने मुझे ऑडिशन दिखाया। यह बहुत सिंपल था। जब मैंने अहान का ऑडिशन देखा, तो मैं आश्वस्त नहीं था। तो मैंने बहाना किया कि मैंने उन्हें पसंद किया। मोहित सूरी ने आगे बताया मैंने उन्हें नहीं बताया कि वह मेरी फिल्म में ले लिए गए हैं, लेकिन मैंने उनसे कहा चलो डिनर पर चलते हैं। हम एक घंटे के लिए डिनर के लिए जाने वाले थे लेकिन पूरी रात हम बाहर रहे। मुझे लगता है कि जब कैमरा बंद होता है, और जब आप किसी को काम करते हुए नहीं देखते हैं, असल टेस्ट वही होता है। इस तरह मैंने उन्हें बिना कैमरे के टेस्ट किया। इसके बाद मैंने जाना कि वह क्या हैं। मुझे महसूस हुआ कि अगर यह इसका 50 प्रतिशत भी हैं, तो ये मेरी फिल्म के लिए उचित हैं।

अल्लू अर्जुन होंगे नए शक्तिमान डायरेक्टर के नाम पर भी मुहर!

शक्तिमान जैसी बड़ी सीरीज को वापस लाने के लिए कई सालों से बात चल रही है लेकिन कोई भी एक्टर इस रोल के लिए फिट नहीं बैठ रहा था। अब आखिरकार शक्तिमान को नया चेहरा मिल गया है और वो कोई और नहीं बल्कि लाखों फैंस के फेवरेट अल्लू अर्जुन हैं। कई सारी अटकलों और इंतजार के बाद भारतीय सुपरहीरो शक्तिमान इस बार बड़े पर्दे पर लौटने के लिए तैयार है, जिसमें भारतीय सुपरस्टार अल्लू अर्जुन इस रोल को निभाएंगे। शक्तिमान आधिकारिक तौर पर वापस आ गया है और भारतीय पौराणिक कथाओं की ये कहानी नए तरीके से पेश की जाएगी। बॉलीवुड सूत्रों के अनुसार, शक्तिमान अब अल्लू अर्जुन के साथ फिर से शुरू होने वाला है। इस एक्साइटमेंट को और बढ़ाते हुए बता दें कि मलयालम सुपरहीरो बेसिल जोसेफ को इस मेगा वेंचर का निर्देशन करने के लिए चुना गया है। वह शक्तिमान के रोल के लिए अल्लू अर्जुन के साथ बातचीत कर रहे हैं। दो बड़े अंतरराष्टीय स्टूडियो गीता आर्ट्स के साथ सहयोग करने के लिए तैयार हैं।

अल्लू अर्जुन होंगे नए शक्तिमान!

यह AA23 य AA24 हो सकती है। इसके अलावा अल्लू को दिल राजू के प्रोडक्शन में लीड रोल के लिए चुना गया है। हालांकि, इसमें समय लगेगा लेकिन माना जा रहा है कि यह फिल्म प्रशांत नील के साथ अल्लू अर्जुन की पहली फिल्म होगी। यह फिल्म अल्लू अर्जुन के करियर में मील का पत्थर साबित होगी, संभवत: यह उनकी 23वीं या 24वीं फिल्म होगी।

पुष्पा 2 की भारी सफलता के बाद अल्लू पूरे भारत में एक जाना-माना नाम बन गए हैं और शक्तिमान उनकी पैन इंडिया अपील को और मजबूत कर सकता है। एक प्यारे हीरो, एक दूरदर्शी निर्देशक और एक वैश्विक स्टूडियो के पावरहाउस के मिलन के साथ शक्तिमान भारत का अगला बड़ा सुपरहीरो बनने के लिए तैयार है।

मुकेश खन्ना को भी पसंद हैं अल्लू अर्जुन

मुकेश खन्ना ने 2024 में अपलोड किए गए एक वीडियो में सुझाव दिया था कि अल्लू अर्जुन अगले सुपरहीरो के रोल के लिए एक अच्छा विकल्प होंगे। मुकेश ने एक वीडियो पोस्ट किया था जिसमें उन्होंने चर्चा की कि उन्हें क्यों लगता है कि अर्जुन अगले शक्तिमान हो सकते हैं। हालांकि उन्होंने अंतिम निर्णय मेकर्स पर छोड़ दिया था। उन्होंने कहा, मैं किसी भी बात के लिए प्रतिबद्ध नहीं हूं, लेकिन मुझे लगता है कि अल्लू अर्जुन शक्तिमान हो सकते हैं। उनके पास अच्छी शक्ल और लंबाई है, लेकिन पुष्पा के मेकर्स ने उन्हें खलनायक में बदल दिया है। फिर भी वो शक्तिमान के रोल में फिट बैठेंगे।

सिर्फ टच में रहना काफी नहीं, दिल से जुड़ना भी रिश्ते में जरूरी आदित्य रॉय कपूर

एक्टर आदित्य रॉय कपूर अपनी आने वाली फिल्म मेट्रो... इन दिनों को लेकर काफी चर्चा में हैं। आईएएनएस से बात करते हुए एक्टर ने दिल से जुड़े रिश्तों पर जोर दिया। उन्होंने बताया है कि आजकल के जमाने में लोग लगातार बात करते रहते हैं, लेकिन असल में जुड़ाव कम होता है। उनका मानना है कि सिर्फ टच में रहना ही काफी नहीं होता, दिल से जुड़ना भी जरूरी होता है, ताकि रिश्ते गहरे और मजबूत बने रहें। आदित्य ने कहा कि फिल्म मेट्रो... इन दिनों में कई कहानियां हैं, जो आज के प्यार और रिश्तों के बारे में हैं, जहां कभी-कभी लोग जुड़ते हैं और कभी-कभी टूटते भी हैं। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि ये कहानियां सिर्फ अलगाव की नहीं हैं, बल्कि जुड़ाव की भी हैं। आजकल की दुनिया में हम पहले से ज्यादा जुड़े हुए हैं। उन्होंने कहा, अगर आप चाहें तो किसी से तुरंत जुड़ सकते हैं, पर मुझे नहीं पता कि इससे रिश्ते और बेहतर होंगे या नहीं। और यह एक सवाल है जो हमें खुद से बार-बार पूछना चाहिए। क्योंकि कभी-कभी हम किसी से हमेशा बात करते रहते हैं, लेकिन अगर वह बातचीत दिल से नहीं है, तो फिर वह बात करने का मतलब क्या रह जाता है?

आदित्य ने आगे कहा, कभी-कभी हमें लगता है कि हम अपने दोस्तों से जुड़े हुए हैं क्योंकि हम एक-दूसरे को लगातार मीम्स भेजते रहते हैं, लेकिन मुझे नहीं पता कि ये बातें सच में मतलब वाली बातचीत हैं या नहीं। ये मैसेज गहरी बातचीत की जगह नहीं ले सकतीं। एक्टर ने कहा, इसलिए मेरा मानना है कि यह बहुत जरूरी है कि हम अपने रिश्तों के बारे में सोचते रहें और समझें कि क्या सिर्फ बात करते रहने का मतलब है कि हम सच में जुड़े हुए हैं, या फिर यह सिर्फ दिखावा है।

फिल्म में आदित्य रॉय कपूर के साथ एक्ट्रेस सारा अली खान हैं।

मेट्रो... इन दिनों में आधुनिक और जटिल रिश्तों की कहानी है। फिल्म में आदित्य रॉय कपूर और सारा अली खान के अलावा, अली फजल, फातिमा सना शेख, पंकज त्रिपाठी, कोंकणा सेन शर्मा, अनुपम खेर और नीना गुप्ता जैसे मशहूर कलाकार हैं। यह फिल्म 4 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

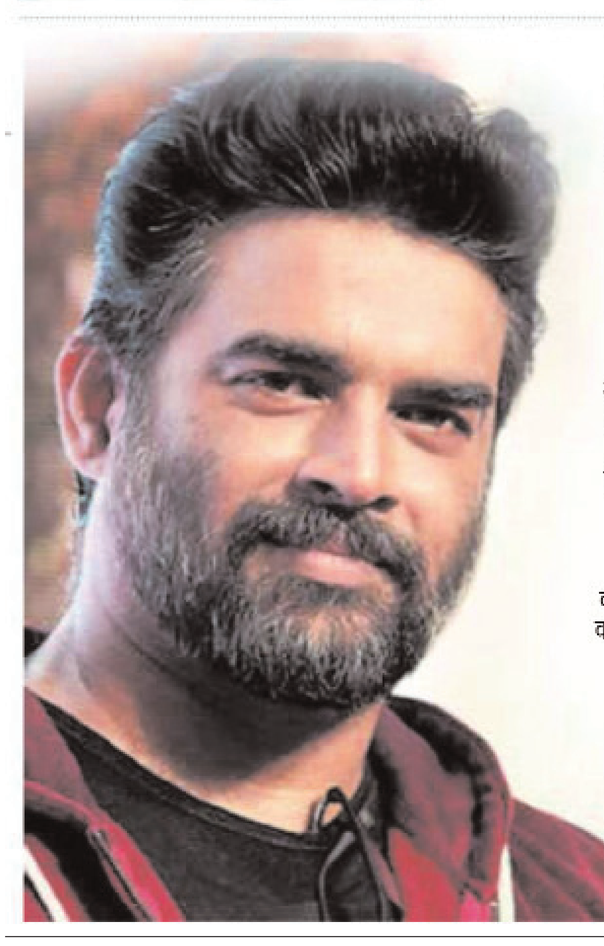

आप जैसा कोई में दिखेगी माधवन और फातिमा सना शेख की लव स्टोरी

बॉलीवुड के सबसे बड़े फिल्म मेकर्स एक करण जौहर का प्रोडक्शंस अब अपनी पारंपरिक भव्य और NRI-केंद्रित प्रेम कहानियों से हटकर, देश के छोटे शहरों और कस्बों की कहानियां पेश करने की तैयारी में है। उनकी आने वाली दो फिल्में आप जैसा कोई और धड़क 2 इस नए बदलाव की गवाह बन रही हैं। आप जैसा कोई में आर. माधवन और फातिमा सना शेख लीड रोल में हैं। फिल्म की कहानी जमशेदपुर और कोलकाता के बीच घूमती है। वहीं सिद्धांत चतुर्वेदी और तृप्ति डिमरी अभिनीत फिल्म धड़क 2 भोपाल की पृष्ठभूमि पर बेस्ड है।

छोटे शहरों की कहानियों पर बेस्ड फिल्म लाएंगे करण जौहर

अब तक करण जौहर की फिल्में जैसे कभी खुशी कभी गम और कभी अलविदा ना कहना, विदेशों में रहने वाले भारतीय प्रवासियों और उनकी जीवनशैली को प्रमुखता से दिखाती थीं। कभी अलविदा ना कहना तो सीधे तौर पर न्यूयॉर्क शहर में रहने वाले अनिवासी भारतीयों के रिश्तों पर केंद्रित थी। हालांकि रॉकी और रानी की प्रेम कहानी जैसी फिल्मों ने भारतीय संदर्भ में वापसी की, लेकिन वे भी दिल्ली के अमीर बंगाली और पंजाबी परिवारों की कहानियां थीं। करण खुद इस धारणा को तोड़ने की बात करते रहे हैं कि वे केवल पारिवारिक फिल्में या एनआरआई-फ्रेंडली फिल्में बनाते रहे हैं। उनकी फिल्म ऐ दिल है मुश्किल भले ही लंदन और पेरिस में सेट थी, लेकिन अब उनके बैनर से टियर 3 और छोटे शहरों की कहानियों आने वाली हैं।

फिल्म में दिखेगी माधवन और फातिमा की केमिस्ट्री

पहले भी धर्मा प्रोडक्शंस ने छोटे शहरों का रुख किया है, जैसे हम्प्टी शर्मा की दुल्हनिया जो अंबाला में घूमती थी, और बद्रीनाथ की दुल्हनिया जिसकी कहानी झांसी में सेट थी, जिनमें छोटे शहर का बैकड्रॉप और उत्तर भारतीय संस्कृति देखने को मिली थी। फिल्म से जुड़े सूत्रों के अनुसार... धर्मा प्रोडक्शंस अब देश के और अंदरूनी इलाकों में प्रवेश कर रहा है। आप जैसा कोई में माधवन का किरदार जमशेदपुर का एक युवक है, जो कोलकाता में रहने वाली फातिमा से प्यार करता है। यह फिल्म बाकायदा इन लोकेशन्स पर शूट की गई है।

दोनों की यह फिल्म बनकर तैयार है

आप जैसा कोई सीधे ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी। वहीं केसरी: चैप्टर 2 एक थिएट्रिकल रिलीज थी। सूत्रों के मुताबिक... खुद नेटफ्लिक्स ने धर्मा से ऐसी फिल्म बनाने का अनुरोध किया था। यह फिल्म बनकर तैयार है और अगले महीने तक इसकी घोषणा हो जाएगी। माधवन और फातिमा के अलावा इसमें नमित दास, मनीष चौधरी, आएशा रजा मिश्रा भी हैं। इसमें कई बंगाली फिल्म इंडस्ट्री के एक्टर्स हैं। तेज दौड़ती भागती जिंदगी जीने वाले लोगों के लिए धर्मा की ओर से एक ठहराव वाली कहानी लाई जा रही है।

एक अलग लुक में दिखाई देंगे माधवन

इसमें धर्मा ने अपनी परंपरा से हटकर एक और अलग प्रयोग किया है। माधवन के किरदार को भी एक नया लुक दिया गया है। उनकी रॉकेट्री, केसरी: चैप्टर 2 जैसी फिल्मों में दिखने वाले चिर-परिचित दाढ़ी-मूंछ वाले लुक के बजाय, उन्हें रहना है तेरे दिल में जैसा वाला लुक दिया गया है।

खुशहाली के मंत्र...

हमें जीवन में रोज नया अनुभव होता है, इस दौरान हमसे अच्छे और बुरे काम भी होते हैं, इनसे गम और खुशी होती है, लेकिन इन सब रुकावटों और मुश्किलों को पीछे छोड़कर इन मंत्रों से जीवन को खुशहाल बनाएं।

ठहाके लगाएं

हंसी को सबसे ताकतवर औषधि माना जाता है। जो हंसी के ठहाके लगाते हैं उनका जीवन खुशहाल रहता है। हंसने से हमारे शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, तनाव कम होता है, दर्द से निजात मिलती है, दिल की मांसपेशियां मजबूत होती हैं जिससे दिल संबंधी बीमारियां नहीं होती हैं। हंसने से मनोवैज्ञानिक रूप से फायदा होती है और हंसकर आप आसानी से अपना तनाव दूर कर सकते हैं। दोस्तों के साथ हों या सहकर्मियों के साथ, परिवार के लोग हों या रिश्तेदार हंसने का कोई मौका गंवाएं नहीं।

जीवन का उद्देश्य बनाएं

अगर आपको अपने जीवन का उद्देश्य पता चल जाए तो आपके सारे दुखों और दुविधाओं का ह्रास हो जाए। सभी के जीवन का एक उद्देश्य होता है और आप उससे अछूते नहीं। कुछ लोगों को जीवन का उद्देश्य पता चल जाता है तो इसे पूरा करने के लिए वे निरंतर प्रयास करते हैं और जिन्हें अपने जीवन का उद्देश्य नहीं पता वे हमेशा भटकते हैं और दुखी रहते हैं।

वर्तमान में जिएं

हमें दुःख तभी होता है जब भविष्य के बारे में सोचते हैं या फिर भूतकाल की गलतियों और दुखों को याद करते हैं। जबकि वास्तविकता वर्तमान ही है। भूतकाल में जो हो गया उसे भूल जाइए। भविष्य में क्या होना उसका पता किसी को नहीं, तो जिसके बारे में आप नहीं जानते उसे लेकर तनाव क्यों लेना। वर्तमान में जीने की कोशिश कीजिए और इस पल को हसीन बनाइए।

धन्यवाद जरूर करें

एक शोध में यह बात सामने आई है कि जो लोग अपने जीवन में दूसरों को धन्यवाद बोलते हैं वे अधिक खुशहाल होते हैं। तो आप भी अपने जीवन को खुशहाल बनाने के लिए दूसरों को धन्यवाद कहना क्यों नहीं शुरू करते हैं। इससे आपको खुशी मिलेगी साथ ही आप जिसका आभार प्रकट करेंगे उसे दूसरों की मदद करने की प्रेरणा मिलेगी।

माइग्रेन भगाने वाला सीफेली...

दुनिया के हर कोने में माइग्रेन पीड़ितों की तादात में दिन-ब-दिन इजाफा होता जा रहा है। बाजार में ढेरों दवाइयां मौजूद हैं। लेकिन कारगर इलाज आज भी संभव नहीं। अब इलेक्ट्रोनिक हेडबैंड यानी सीफेली आया है। मेडिकल वर्ल्ड इस पर भरोसा जता रहा है। इलेक्ट्रोनिक हेडबैंड यानी बिजली से चलने वाला एक ऐसा उपकरण जो माथे पर आसानी से फिट हो जाता है और दिमाग की नसों में खास कंपन पैदा कर सिरदर्द को भगा देता है। इस हेडबैंड को हालांकि अमेरिका और यूरोप के कुछ हिस्सों में इस्तेमाल किया जा रहा है लेकिन अब इसे यूरोप की नेशनल हेल्थ सर्विसेज से भी हरी झंडी मिल गई है। उम्मीद की जा रही है कि जल्द ही दुनिया के बाकी मुल्कों समेत भारत में भी हेडबैंड उपलब्ध हो जाएगा। जानकारों की मानें तो इस हेडबैंड को दिन में एक बार इस्तेमाल करना है। एक बात काबिल-ए-गौर है कि इस्तेमाल तभी करें जब माइग्रेन का दर्द हो। हेडबैंड आंखों के ठीक ऊपर के हिस्से यानी माथे पर लगाने से माइल्ड इलेक्ट्रिकल तरंगें मस्तिष्क के संपर्क में आती हैं। महज 20 मिनट के इस्तेमाल से माइग्रेन में आराम मिलता है। दावा किया गया है कि 10 में से 4 मरीजों को फायदा जरूर मिलता ही है। जानकार बताते हैं कि माइग्रेन में राहत पहुंचाने के अलावा ये हेडबैंड दर्द से निपटने की क्षमता में बढ़ोतरी भी लाता है। यही नहीं, कुछ मरीजों की नशे की लत भी छुड़वा सकता है। माइग्रेन की वजह से 80 लाख की आबादी वाले ब्रिटेन में 20 लाख महिलाओं को चक्कर, उल्टी और ऐंठन की शिकायत अक्सर रहती है। हालांकि बाजार में बहुत सी ऐसी दवाइयां हैं जो माइग्रेन के दर्द में फौरी राहत देती हैं लेकिन परमानेंट हल किसी के पास नहीं है। बैटरी से चलने वाला सीफेली हेडबैंड उसी हिट रेट के साथ चलता है और 40 से 70 फीसदी मरीजों तक को फायदा पहुंचाता है। लेकिन चिकित्सकीय प्रयोगों के मुताबिक इस हेडबैंड के साइड इफेक्ट भी हैं। हां, ये बात ठीक है कि इसे गर्भावस्था के दौरान महिलाएं इस्तेमाल कर सकती हैं। फिलहाल यूके के बाजार में इस हेडबैंड की कीमत 250 पाउंड है।

पहला ग्राफिन बेस्ड ई-पेपर...

कौन कहता है कि ई-पेपर पुरानी टैक्नोलॉजी हो गई है। चाइना में अभी भी इस पर आधारित नए प्रोजेक्ट बन रहे हैं। गुआंग ओईडी टैक्नोलॉजी ने अपने-आप में पहला ग्राफिन बेस्ड ई-पेपर तैयार किया है। ग्राफिन के साथ बना पेपर काफी मजबूत और हल्की स्क्रीन पेश करता है, जिसमें ब्राइटनेस और फ्लेक्सीबिलिटी पूरी तरह मौजूद है।

खास बात यह है कि सूरज की रौशनी में भी यह ई-पेपर आसानी के साथ पढ़ने में मदद करती है। दूसरे ई-पेपर भी इस तरह कर सकते हैं लेकिन ग्राफिन में इस्तेमाल किया गया कार्बन आसानी से मिल सकता है इसलिए यह काफी सस्ता होगा बल्कि दूसरे ई-पेपर डिवाइसिस में इंडियम मेटल होती है। कंपनी का कहना है कि एक साल के अंदर-अंदर ग्राफिन ई-पेपर का प्रोडक्शन शुरू हो जाएगा। अगर टैक्नोलॉजी आगे बढ़ी तो शायद ग्राफिन, एलईडी और ओएलईडी की जगह भी ले सकती है।

अब वह दौर आ गया है जब ड्रोन मिलिट्री और एडवेंचर स्पोर्ट की रेंज से बाहर निकल सकता है। आने वाला वक्त ड्रोन का होगा और हर व्यक्ति की चाहत होगी कि उसके पास भी एक ड्रोन हो। जानकारों के मुताबिक आगामी पांच से 10 साल के भीतर हर घर में एक ड्रोन हो सकता है। हाल ही में चीन की स्मार्टफोन निर्माता कंपनी शाओमी का बनाया पहला ड्रोन सामने आया है। शाओमी एमआई ने इस ड्रोन की कीमत ड्रोन बनाने में मार्केट लीडर चीनी कंपनी डीजेआई के ड्रोन फैंटम 3 की कीमत की तुलना में काफी कम रखी है। फिल्मों की शूटिंग के लिए हवा से लिए जाने वाले शॉट्स के लिए हेलिकॉप्टरों का इस्तेमाल होता आया है, लेकिन तकनीक के विस्तार के कारण यह ड्रोन से भी मुमकिन हो गया है।

अब किफायती ड्रोन की ओर...

वर्तमान दौर में भले ही लोग स्मार्टफोन के पीछे दीवाने हों, लेकिन आने वाला वक्त ड्रोन का होगा और हर व्यक्ति की चाहत होगी कि उसके पास भी एक ड्रोन हो। जानकारों के मुताबिक आगामी पांच से 10 साल के भीतर हर घर में एक ड्रोन हो सकता है। वैज्ञानिकों के मुताबिक, ड्रोन का इस्तेमाल माल का वितरण, बुनियादी ढांचे की निगरानी, तलाश व बचाव तथा कृषि निगरानी कार्य में किया जा सकता है। जब ड्रोन बेहद मशहूर हो जाएंगे, तो आसमान में ड्रोन ही ड्रोन दिखाई देंगे, क्योंकि तब उनका वाणिज्यिक तौर पर इस्तेमाल शुरू हो जाएगा। गूगल, एमेजॉन, लॉकहिड मार्टिन, रेथेयॉन, एयरवेयर, ड्रोनडिप्लॉय, मैटरनेट, सिस्को तथा वेरिजॉन के साथ मिलकर नासा छोटे तथा कम ऊंचाई पर उड़नेवाले ड्रोन के एक एयर ट्रैफिक कंट्रोल प्रणाली के विकास की दिशा में काम कर रहा है।

मिलिट्री रेंज से बाहर

अब वह दौर आ गया है जब ड्रोन मिलिट्री और एडवेंचर स्पोर्ट की रेंज से बाहर निकल सकता है। अमेजन लगातार ड्रोन के जरिए सामान को पहुंचाने के तरीकों पर काम कर रही है। वहीं गूगल ड्रोन के जरिए दूरदराज के इलाकों में इंटरनेट की सुविधा देने की तकनीक विकसित कर रहा है। अब साल ड्रोन के कमर्शियल इस्तेमाल की शुरुआत हो सकती है, हालांकि रेग्युलेटर्स की मंजूरी जरूरी होने के कारण शुरुआत सीमित होने की संभावना है। अगर ये टेक्नोलॉजी शुरू होती है तो आपको दुनिया में कहीं भी सामान और इंटरनेट मिल जाएगा। वहीं आम लोगों के लिए ज्यादा सुरक्षित ड्रोन भी मार्केट में उतरेंगे, इसमें सेल्फी ड्रोन भी शामिल है जो आपकी पहचान कर आपके आस पास सुरक्षित दूरी पर उड़ने और फोटो खींचने के लिए प्रोग्राम्ड होगा।

आम लोगों का ड्रोन

चीन की स्मार्टफोन निर्माता कंपनी शाओमी का बनाया पहला ड्रोन सामने आया है। शाओमी एमआई ने इस ड्रोन की कीमत ड्रोन बनाने में मार्केट लीडर चीनी कंपनी डीजेआई के ड्रोन फैंटम 3 की कीमत की तुलना में काफी कम रखी है। एमआई ड्रोन की कीमत लगभग 25 हजार रुपए है जबकि फैंटम-3 की कीमत 50 हजार रुपए है। शाओमी का ड्रोन तकरीबन आधे घंटे तक हवा में रह सकते हैं। इसमें स्टेब्लाइज्ड कैमरे का भी विकल्प मौजूद है। पिछले दिनों मोबाइल बाजार मंदा रहा है और शाओमी अपने टार्गेट पूरे नहीं कर पाई है। कंपनी अपने इस कदम से ड्रोन के तेजी से बढ़ रहे कारोबार में कुछ कर दिखाना चाहती है। एमआई ड्रोन अपने आप एक जगह घेरे में घूम सकता है। एमआई ड्रोन और डीजेआई के फैन्टम-3 के फीचर लगभग एक से हैं। यह नया ड्रोन लोगों को अपील करेगा। लेकिन अनुभवी फ्लाएर्स को विश्वसनीय उत्पाद चाहिए और डीजेआई ने तकनीक के इस क्षेत्र में लंबा समय तय किया है। हालांकि यह नहीं कहा जा सकता कि शाओमी के ड्रोन कितने विश्वसनीय हैं, इसका वीडियो फुटेज कितना सच्चा है या इसका सॉफ्टवेयर कितने बेहतर तरीके से काम कर सकता है। अभी शाओमी को खुद को साबित करने में कुछ समय लगेगा।

एमआई ड्रोन की खासियत

शाओमी के एमआई ड्रोन में हाई-डेफिनेशन कैमरा होगा जिसकी रेंज 1 किलोमीटर होगी। इसकी कीमत है 25,000 रुपए। अगले वर्जन में 4के रेजोल्यूशन का कैमरा होगा और इसकी रेंज 2 किलोमीटर होगी और कीमत होगी लगभग 30,000 रुपए। एमआई ड्रोन काफी उच्च रेजोल्यूशन पर लाइव वीडियो को स्ट्रीम कर सकता है। डीजेआई के फैंटम-3 में भी 4के रेजोल्यूशन का कैमरा है और इसकी रेंज 1200 मीटर है। फैंटम-3 की कीमत है 50,000 रुपए है। शाओमी का कहना है कि ड्रोन आमतौर पर अमीर लोगों के लिए होते हैं, लेकिन शाओमी आम लोगों तक इसकी पहुंच बनाना चाहती है।

सबसे छोटा ड्रोन

अलग अलग तरह के ड्रोन कैमरे के साथ अब मार्केट में आ रहे हैं, लेकिन अब ऑक्सीस कंपनी ने वीडीएस नाम का सबसे छोटा ड्रोन लॉन्च किया है। ड्रोन का सबसे ज्यादा इस्तेमाल एरियल फोटोग्राफी में आजकल ज्यादा हो रहा है। ऑक्सीस कंपनी ने अपना यह पहला ही ड्रोन बनवाया है। इस ड्रोन की लंबाई 4.3 सेंटीमीटर है तो 2.5 सेमी की चौड़ाई है। इसमें एक छोटा सा कैमरा लगवाया गया है जिसकी मदद से आप 420 पिक्सल वीडियो शूट कर सकते हो और आप इसकी लाइव स्ट्रीमिंग अस ड्रोन कैमरे के ऐप के साथ आपके मोबाईलपर देख सकते है। यह ऐप आपके मोबाइल और रिमोट के साथ कंट्रोल किया जा सकता है। इस ड्रोन के साथ 150 मिली एम्पिअर की बैटरी आती है जिसकी मदद से आप लगभग 20 मिनट तक इसे हवा में उड़ा सकते है। इस ड्रोन को कंपनी ने हर तरह से सुरक्षित बनाने का प्रयास किया है। अंधेरे में आपको यह ठीक से दिखाई दे इसलिए इसे एलईडी लाईट्स लगवाए गए है। इसकी कीमत लगभग 75 यूएस डॉलर्स है और जल्द ही यह ग्राहकों को उपलब्ध होगा।

नौकरियों पर खतरा

वैश्विक बाजार में ड्रोन नौकरियों पर बड़ा खतरा बनकर मंडरा रहा है। एक शोध में दावा किया गया है कि ड्रोन तेजी से इनसानों की जगह ले रहे हैं। ड्रोन का वैश्विक बाजार अभी करीब दो अरब डॉलर का है जो 2020 तक बढ़कर 127 अरब डॉलर का हो जाएगा। गूगल और अमेजॉन जैसी बड़ी कंपनियां ग्राहकों तक सामानों की जल्द डिलीवरी के लिए इनका इस्तेमाल कर रही हैं। शोध के मुताबिक, छोटे ड्रोन न केवल कुरियर पहुंचा रहे हैं, बल्कि गगनचुंबी इमारतों की खिड़कियां साफ करने, बीमा दावों की जांच और फसलों पर कीटनाशकों के छिड़काव में भी प्रयुक्त हो रहे हैं। परामर्श देने वाली कंपनी पीडब्ल्यूसी के शोध के अनुसार, ड्रोन तकनीक बहुत जल्द ही हमारे रोजमर्रा के जीवन का अंग बन जाएगी।

ड्रोन को लेकर गाइड लाइन

देश में ड्रोन को लेकर कोई पॉलिसी नहीं है और इस वजह से ड्रोन स्टार्टअप समेत सभी स्टेक होल्डर कई मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। अब एविएशन रेगुलेटर डीजीसीए ने भारतीय आसमान में मानवरहित विमान के इस्तेमाल से जुड़ी ड्राफ्ट गाइडलाइंस जारी कर दी हैं। गाइडलाइंस की कमी की वजह से न तो देश में ड्रोन का सही तरीके से इस्तेमाल हो पा रहा था, और न ही सुरक्षा को होने वाले खतरे से निपटने का कोई कानून था। अब डीजीसीए ने जो ड्राफ्ट जारी किया है, उस पर स्टेकहोल्डरों से फीडबैक मांगा है। इसके आधार पर बाकायदा रेगुलेशन जारी कर दिया जाएगा। देश में ड्रोन को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहे स्टार्टअप ने सरकार के इस कदम की तारीफ की है। ड्रोन पर आए ड्राफ्ट गाइडलाइंस के मुताबिक ड्रोन के कमर्शियल इस्तेमाल के लिए भी नियम-कायदे बनेंगे जैसे हर गाड़ी का नंबर प्लेट होता है ठीक उसी तरह ड्रोन को भी यूआईएन यानी यूनीक आइडेंटिफिकेशन नंबर दिया जाएगा। ये यूआईएन पाने के लिए आपको भारतीय नागरिक होना जरूरी होगा। साथ ही आपका बिजनेस भारत में ही होना होगा। ड्रोन के आइडेंटिफिकेशन प्लेट में आरएफ आईडी टैग या सिम होगा, जिसके जरिए ड्रोन की कंपनी के बारे में पता लगाया जा सकेगा। गाइडलाइंस के मुताबिक चार कैटेगरी के ड्रोन होंगे। आम लोग 2 किलो से कम वजन के ड्रोन 200 फीट से कम ऊंचाई पर उड़ा पाएंगे। ड्रोन पर जारी ड्राफ्ट गाइडलाइंस के मुताबिक जो 4 कैटेगरीज होंगी, उनमें 2 किलो से कम तक के ड्रोन माइक्रो कहलाएंगे। 2 किलो से 20 किलो तक के ड्रोन मिनी कैटेगरी में आएंगे। 20 किलो से 150 किलो तक के ड्रोन स्मॉल कैटेगरी में आएंगे, वहीं इससे बड़े ड्रोन लार्ज कहलाएंगे। उम्मीद है कि इस मसले पर अंतिम गाइडलाइंस आने के बाद देश में ड्रोन का बड़े पैमाने पर बिजनेस में इस्तेमाल होने लगेगा और आपके घर की छत पर सामान की डिलीवरी सीधे ड्रोन से होगी।

फिल्मों की शूटिंग

फिल्मों की शूटिंग के लिए हवा से लिए जाने वाले शॉट्स के लिए हेलिकॉप्टरों का इस्तेमाल होता आया है, लेकिन तकनीक के विस्तार के कारण यह ड्रोन से भी मुमकिन हो गया है। शूटिंग के लिए हेलिकॉप्टर का इस्तेमाल काफी महंगा साबित होता है। ड्रोन का इस्तेमाल युद्ध के मैदान में पिछले कुछ सालों से अमेरिका और अन्य ताकतवर देश करते आए है। फिल्म की शूटिंग में हालांकि यह नया नया प्रयोग है। एशिया में सस्ते प्रोसेसर और सेंसर मिलते हैं, जिनसे ड्रोन बनाना आसान और सस्ता हो गया है। जर्मनी के हैम्बर्ग स्थित ड्रोन कंपनी के लिए भी कारोबार का नया रास्ता खुल गया है। किस तरह का वीडियो बनाना है इस आधार पर ड्रोन चुना जाता है। फिर उस पर कैमरे लगाए जाते हैं। यह तकनीक पेशेवर फिल्म बनाने वालों के लिए वरदान साबित हो रही है। साथ ही इस तरह के ड्रोन को ऑपरेट करना बेहद आसान है।

ड्रोन इन ए फोन

अगर आपको सेल्फी क्लिक करना हो तो, स्मार्टफोन का उपयोग करते है। अगर ग्रुप में एरियल फोटो खींचनी हो तो आजकल ड्रोन का इस्तेमाल किया जा रहा है। लेकिन अगर आपको एक ऐसा फोन मिल जाए, जिसमें ड्रोन भी हो, तो कैसा रहेगा। हाल ही में एक नया कॉन्सेप्ट तैयार किया गया है, जिसका नाम है ड्रोन इन ए फोन, इसमें फोन के साथ एक छोटा सा फोल्डेबल क्वाडकॉप्टर रहता है, जो फोन में बने बॉक्स के अंदर रखा जा सकता है। इस ड्रोन को फोन की बैटरी से पावर मिलती है और यह 25 मिनट तक उड़ सकता है। यह ड्रोन एक वायर के जरिए फोन से जुड़ा रहता है, ताकि तेज हवा में वह खो न जाए। लंदन की बज टेक्नोलॉजी नाम की एक कंपनी ने इस प्रोजेक्ट को फाइनल किया है। ड्रोन में कैमरे की क्षमता के बराबर ही कैमरा होगा। यानी 8 मेगापिक्सल कैमरा वाले फोन के ड्रोन भी इतनी ही क्षमता का कैमरा होगा। इसमें लगे कैमरे से स्टैंडर्ड, वाइड एंगल और मैक्रो तस्वीरें क्लिक की जा सकती हैं। बज टेक्नोलॉजी का कहना है कि इस प्रोटोटाइप के फाइनल होते ही इस साल सितंबर में इस स्मार्टफोन-ड्रोन को लॉन्च कर दिया जाएगा।

एक डुअल सिम वाले फोन पर दो व्हाट्सऐप अकाउंट

व्हाट्सऐप दुनिया भर में सबसे ज्यादा चलने वाला फ्री मैसेज सर्विस है। 100 करोड़ लोग से भी ज्यादा इसे इस्तेमाल करते हैं और भारत में अब करीब 10 करोड़ लोग इसे इस्तेमाल करते हैं। एंड्रायड फोन भारत में काफी पसंद किया जाता है और 80 फीसदी से ज्यादा लोग एंड्रायड ऑपरेटिंग सिस्टम वाले फोन ही इस्तेमाल करते हैं। डुअल सिम वाले फोन भारत में बहुत पसंद किए जाते हैं और बड़े और छोटे शहर में सभी लोगों के पास ऐसे फोन आपको मिल जाएंगे। कई बार लोग अपने काम और निजी नंबर को अलग रखते हैं और इसलिए व्हाट्सऐप भी अलग अलग रखने का प्रचलन बढ़ रहा है। ऐसा करने के लिए आपको थोड़ी मशक्कत करनी पड़ेगी और स्मार्टफोन की सेटिंग में थोड़ा बदलाव करना होगा। लेकिन एक बार आपने ये कर लिए तो एक ही डुअल सिम वाले स्मार्टफोन पर दो व्हाट्सऐप अकाउंट चला सकेंगे।

पहली स्टेप इसके लिए आपको डुअल सिम वाला स्मार्टफोन चाहिए और उस पर दो एक्टिव मोबाइल नंबर चाहिए। डेटा सर्विस एक पर भी एक्टिव हो तो ये दोनों आपके लिए काम करेंगे। सबसे पहले अपने व्हाट्सऐप पर जाइए और वहां पर सेटिंग को चुनिए और फिर चैट सेटिंग को चुनिए। इसके बाद बैकअप चैट पर क्लिक कर दीजिए ताकि आपके सभी मैसेज का एक बैकअप तैयार हो जाए।

दूसरी स्टेप अब समय है अपने स्मार्टफोन की सेटिंग में जाने का और सेटिंग में ही जो ऐप का विकल्प है उसे चुन लीजिए। वहां पर व्हाट्सऐप को चुन लीजिए और क्लियर डेटा के विकल्प पर क्लिक कर दीजिए और उसे ओके कर दीजिए।

तीसरी स्टेप अब अपने डिवाइस के फाइल एक्सप्लोरर पर जाइये और व्हाट्सऐप फोल्डर में पहुंच जाइए। वहां पर ऑप्शन पर क्लिक करके आप उसका नाम बदल कर ओ जी व्हाट्सऐप रख दीजिये और फिर ओके पर क्लिक कर दीजिए।

चौथी स्टेप इसके बाद फिर से सेटिंग में जाना होगा, उसके बाद ऐप और फिर व्हाट्सऐप। इसके बाद और व्हाट्सऐप को अनइंस्टॉल कर दीजिए। इसके बाद ओ जी व्हाट्सऐप को इस लिंक से डाउनलोड कर के इंस्टॉल कर लीजिए। इंस्टॉल करने के बाद इसे लॉन्च कर दीजिए। इनस्टॉल करते समय जो आप पहले मोबाइल नंबर इस्तेमाल कर रहे थे उसे लिख दीजिए। उसके बाद अपने पुराने चैट के बैकअप को आप रिस्टोर कर पाएंगे। अपनी सेटिंग को पूरा करने के बाद आपके पुराने नंबर का व्हाट्सऐप काम करने लगेगा।

पांचवी स्टेप अपने स्मार्टफोन के होमस्क्रीन पर आप ओ जी व्हाट्सऐप नाम के दो आइकॉन देख सकेंगे। अब अपने स्मार्टफोन के दूसरे नंबर के लिए आपको गूगल प्लेस्टोर पर जाकर व्हाट्सऐप डाउनलोड कर के इनस्टॉल करना होगा। उसके बाद जब उसमें अपना नंबर देने के समय आएगा तो वहां अपना दूसरा नंबर एंटर कर दीजिए। हो सकता है आपके अपना वेरिफिकेशन कोड भी एंटर करना पड़े। अगर आप ये वेरिफिकेशन कोड नहीं चाहते हैं तो व्हाट्सऐप से कॉल का विकल्प भी चुन सकते हैं। यह कॉल के समय जो छह डिजिट का वेरिफिकेशन कोड आपको बताया जाता है उसे आपको एंटर करना होगा। उसके थोड़ी देर के बाद आपका दूसरे नंबर वाला व्हाट्सऐप काम करने लगेगा। दोनों व्हाट्सऐप नंबर के अकाउंट के आइकॉन अलग अलग होंगे। ये करने के बाद आप काम के नंबर और निजी नंबर के व्हाट्सऐप को अलग अलग कर सकते हैं।

'गोल्ड व्हॉट्सेप' को न करें इंस्टॉल...

अधिकतर लोग व्हॉट्सेप पर एक्टिव रहते हैं। अगर आप भी व्हॉट्सेप यूजर हैं तो हो सकता है आपके पास पिछले कुछ दिनों में एक मैसेज आया होगा, जिसमें आपको अपग्रेड वर्जन 'गोल्ड व्हॉट्सेप' डाउनलोड करने की सलाह दी गई होगी। अगर आपके पास भी यह मैसेज आया है तो आप सतर्क हो जाएं। इस मैसेज में लोगों को सूचना दी जा रही है कि ये अपग्रेड वर्जन लीक हो चुका है और इसे सिर्फ बड़ी हस्तियां इस्तेमाल करती हैं। इसके साथ ही यूजर्स को ये बताकर चकमा दिया जा रहा कि इसमें वीडियो कॉल, गलती से भेजे गए मैसेज को हटाने की सुविधा और एक साथ 100 फोटोज भेजने की जैसी सुविधाएं हैं। आपके पास अब तक ये मैसेज नहीं आया है तो आप खुशकिस्मत हैं। वो इसलिए क्योंकि जिसके पास भी ये मैसेज आया है उनके साथ बहुत बड़ा धोखा दिया जा रहा है। व्हॉट्सेप ने ऐसा गोल्डन वर्जन जैसा कोई अपडेट लॉन्च ही नहीं किया है। दरअसल यह हैकर्स की सोची समझी चाल है। इसमें यूजर्स को जाल में फसाने की कोशिश की गई है। इसकी काफी संभावना है कि जिन यूजर्स के पास ये मैसेज आया है उस डिवाइस में वायरस आ चुका है। जल्द से जल्द मोबाइल में एंटी वायरस डाउनलोड कर लें ताकि हैकर्स आपके फोन का व्यक्तिगत डेटा इस्तेमाल न कर पाए।

पुलिस पार्टी पर फायरिंग के इनामी आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं)।। कौलारी थाना पुलिस ने पुलिस पार्टी पर फायरिंग कर फरार चल रहे 10,000 रुपये के इनामी बदमाश रविन्द्र उर्फ रवि पुत्र रामदीन निवासी रजई खुर्द थाना बसई डांग जिला धौलपुर को गिरफ्तार किया है। थाना प्रभारी हरेन्द्र सिंह ने बताया कि मुखबिर से मिली सूचना पर कार्रवाई कर आरोपी को गिरफ़्तार किया। गिरफ्तारी के बाद अवैध कट्टा व रेता भरने के स्थान की जांच जारी है। पुलिस अधीक्षक द्वारा आरोपी पर पहले ही 10,000 रुपये का इनाम घोषित किया गया था। आरोपी रविन्द्र उर्फ रवि पर 11 फरवरी 2025 को अवैध चंबल रेता के परिवहन के दौरान पुलिस कार्रवाई में पुलिस पार्टी पर जान से मारने की नीयत से ट्रैक्टर चढ़ाने और अवैध कट्टे से फायरिंग करने का आरोप था। घटना के बाद आरोपी करीब पांच महीने से फरार चल रहा था। मामले में थाना कौलारी में धारा वन्य जीव संरक्षण अधिनियम एवं फॉरेस्ट एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज किया गया था।

चोरी छुपे अवैध चंबल रेता परिवहन करने के मामले में वांछित आरोपी गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

धौलपुर। जिले के राजाखेड़ा थाना पुलिस ने बड़ी कार्यवाही करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। राजाखेड़ा थानाधिकारी रामकिशन यादव ने बताया कि 02 जून 2025 को मुखबिर की सूचना पर मुकेशकुमार एचसी मय टीम ने महाराणा प्रताप कोलोनी डोंगरपुर के पास से एक ट्रैक्टर स्वराज मय ट्रोली जिसमें अबैध चम्बल रेता भरा हुआ को जब्त किया गया जिसका चालक मौके से ट्रैक्टर ट्रोली को मौके पर छोडकर भाग गया था। जिसके सम्बन्ध में थाना पर वन्य जीव सरक्षण अधिनियम 41/42 की धाराओं में मामला दर्ज किया था। एसपी सुमित मेहरड़ा के निर्देशन में वांछित आरोपियों के खिलाफ धर पकड़ अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के दौरान फरार चालक की तलाश के लिए संभावित स्थानों दबिश दी गई। पुलिस ने वाछित आरोपी रन्जीतसिहं पुत्र बालूसिहं ठाकुर निवासी वींजला थाना निवोहरा जिला आगरा को गिरफ्तार किया है। थानाधिकारी ने बताया कि थाना क्षेत्र में अबैध चम्बल रेता निकासी रोकथाम हेतु सतत निगरानी जारी है तथा अबैध चम्बल रेता परिवहन करने वाले अपराधियों के विरूद्ध कार्यवाही जारी है।

वनकर्मी के साथ राज्यकार्य में बाधा पहुंचाने वाले फरार आरोपी को पुलिस ने बरौली गांव के पास से किया गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। जिले की सरमथुरा थाना पुलिस ने कार्यवाही करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। सरमथुरा थानाधिकारी कृपाल सिंह ने बताया कि 30 मार्च 25 को वनकर्मी प्रदीप शर्मा ने आरोपी मुकेश उर्फ मुक्के वगैराह के विरूद्ध मारपीट व राज्यकार्य में वाधा पहुंचाने का मामला दर्ज कराया था। थानाधिकारी ने बताया कि एसपी सुमित मेहरड़ा के निर्देशन में वांछित इनामी बदमाशों के विरुद्ध धरपकड़ अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के दौरान आरोपी कीर्तनसिंह पुत्र जगनसिंह मीना निवासी बरौली को मुखबिर की सूचना पर बरौली गाँव के पास से गिरफतार किया गया उन्होंने बताया कि मामले में आरोपी मुकेश को पूर्व में गिरफतार किया जा चुका है। गिरफ्तार आरोपी से पुलिस पूछताछ कर रही है

ग्रामीण ब्लॉक कांग्रेस कमेटी धौलपुर ने केक काटकर और मिठाई बांटकर मनाया कांग्रेस नेता राहुल गांधी का जन्मदिन

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। ग्रामीण ब्लॉक कांग्रेस कमेटी धौलपुर की ओर से कांग्रेस नेता एवं सांसद राहुल गांधी का जन्मदिन हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने एकत्रित होकर केक काटा और एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर जन्मदिन की बधाई दी। कार्यक्रम में उपस्थित कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने राहुल गांधी के दीर्घायु, स्वस्थ जीवन और उनके नेतृत्व में देश में भाईचारा, समता और न्याय की स्थापना की कामना की। इस अवसर पर कार्यकर्ताओं ने जरूरतमंदों को भोजन व मिठाई वितरित कर सेवा भाव भी प्रदर्शित किया। समारोह की अध्यक्षता ग्रामीण ब्लॉक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष धौलपुर शिब्बू सिंह लोधा ने की इस अवसर पर राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी अल्पसंख्यक विभाग सोशल मीडिया भरतपुर आजाद मिर्जा ने कहा कि आज हम सभी ने मिलकर राहुल गांधी का जन्मदिन मनाया और कहा कि राहुल गांधी आज देश में युवाओं, गरीबों, मजदूरों और वंचितों की आवाज बने हुए है हम सब कामना करते हैं कि बे आने वाले समय में देश का नेतृत्व करें और देश में मोहब्बत की दुकान के जरिए तरक्की और भाईचारे को आगे बढ़ाएं इस अवसर पर बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे। सभी ने राहुल गांधी के विचारों और संघर्ष को प्रेरणा बताते हुए उनके नेतृत्व में पार्टी को और मजबूत करने का संकल्प लिया। इस दौरान धौलपुर शहर ब्लॉक उपाध्यक्ष लोकेन्द्र कन्डेरा, महासचिव मुन्ना अब्बासी, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी अल्पसंख्यक विभाग सोशल मीडिया भरतपुर आजाद मिर्जा, नूनहेरा मंडल अध्यक्ष राजेश कुमार, सुरेन्द्र सिंह दरियापुर, अल्पसंख्यक कांग्रेस धौलपुर सह संयोजक मोहम्मद मुस्तफा, डॉक्टर रविन्द्र मंगल, मेघ सिंह कुशवाह मुरैना, विक्रम सिंह, राजू पहाड़िया, शाहरुख सिद्दीकी, अभिषेक यादव सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा के निर्वाचन क्षेत्र की दूदू- नरैना सड़क वेंटीलेटर पर

जयपुर टाइम्स

नरैना(निसं)। चुनाव आने पर चुनाव जीतने के लिए प्रत्याशी कई तरह के जतन करता है ओर चुनाव जीतकर अपने क्षेत्र में विकास की गंगा बहाता है। लेकिन यह बात दूदू विधानसभा क्षेत्र से पूर्व मंत्री व दूदू के तत्कालीन विधायक बाबूलाल नागर के क्षेत्र में विरोध होने की वजह से चुनाव जीतकर दूसरी बार विधायक व बाद में उपमुख्यमंत्री बने डॉ. प्रेमचंद बैरवा पर लागू नहीं होती है। जहां मोदी राज में जगह जगह पर केन्द्रीय राष्ट्रीय राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने सड़कों का महाजाल बिछाकर आमजन को सुविधाजनक व शीघ्र आवागमन की सौगात दी। गांवों में प्रधानमंत्री सड़क योजना के तहत सड़कों का निर्माण कर ग्रामीणों को राहत प्रदान की, वहीं उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा के विधानसभा क्षेत्र दूदू से नरैना जाने वाली सड़क की हालत गत दो वर्ष से बेहद खराब है। गत वर्ष गणतंत्र दिवस पर दूदू में आयोजित जिला स्तरीय समारोह में झंडा फहराने के लिए उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी जयपुर से राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 48 से कार से आई थी। दिया कुमारी के पास में सार्वजनिक निर्माण विभाग, वित्त, पर्यटन, कला, साहित्य, संस्कृति और पुरातत्व, महिला और बाल विकास,बाल अधिकारिता आदि विभागों के मंत्रालय भी है। दूदू में झंडा फहराने के पश्चात दिया कुमारी को नरैना होकर फुलेरा जाना था। पूर्व में दिया कुमारी का दूदू से सीधे नरैना जाने का कार्यक्रम था जिसके लिए सार्वजनिक निर्माण विभाग दूदू ने अपने विभाग के मंत्री जी उर्फ उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी के कोप भाजन से बचने के लिए उबड़-खाबड़ खड्डो में तब्दील रोड़ पर मिट्टी डालकर अपने बचाव का साधन किया लेकिन उबड़-खाबड़ खड्डो में तब्दील सड़क की पोल खुलती देख ऐन वक्त पर दिया कुमारी के मार्ग में बदलाव कर उन्हें सावरदा होकर नरैना ले जाया गया। मार्ग में बदलाव करने से जहां उपमुख्यमंत्री को अधिक समय लगा व सरकारी गाड़ी ने अधिक किलोमीटर चलने की वजह से तेल की खपत भी ज्यादा हुई। बेवजह तेल की खपत ज्यादा होने से सरकारी धन का दुरूपयोग हुआ। वहीं यदि महलों में रहने वाली राजकुमारी उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी अपने समकक्ष उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा के विधानसभा क्षेत्र दूदू से सीधे नरैना आती तो आमजन को प्रतिदिन होने वाली उबड़-खाबड़ खड्डो में तब्दील सड़क की यात्रा से रूबरू होती ओर क्या पता अब तक सड़क का निर्माण ही हो जाता। चूंकि उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा मूल रूप से ग्रामीण क्षेत्र के रहने वाले हैं ओर उन्हें उबड़-खाबड़ खड्डो में तब्दील सड़क पर चलने की अच्छी खासी आदत है। शायद यही कारण रहा कि महलों में रहने वाली राजकुमारी उपमुख्यमंत्री को वाया सावरदा होकर नरैना ले जाया गया जबकि ग्रामीण परिवेश में रहें, पले-बढ़े उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा को गत वर्ष बीजोंलाव स्थित एक कार्यक्रम में सीधे दूदू से उबड़-खाबड़ खड्डो में तब्दील सड़क मार्ग से बींजोलाव आना पड़ा। जब उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा इस मार्ग से आये तो उन्हें आमजन को होने वाली प्रतिदिन की असुविधा का पता चल गया लेकिन फिर भी उन्होंने अपने समकक्ष उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी को कहकर इस रोड़ को तुरंत निर्माण कराने में रूचि नहीं दिखाई। जबकि दूदू से 7 किमी दूर नरैना रोड़ के मध्य स्थित मालेड़ा सहित अन्य ग्राम-ढ़ाणिया दूदू विधानसभा क्षेत्र में आती है ओर वहां के निवासी प्रतिदिन इस उबड़-खाबड़ खड्डो में तब्दील रोड़ से जान जोखिम में डालकर यात्रा करते हैं। नाम प्रकाशित नहीं करने की शर्त पर दूदू के भाजपा नेता ने बताया कि डॉ. प्रेमचंद बैरवा अपनी योग्यता व भाजपा के वोटों की वजह से नहीं जीते अपितु पूर्व मंत्री व तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के सलाहकार रहे बाबूलाल नागर के क्षेत्र में विरोध होने की वजह से जीतकर दूसरी बार विधायक बने। जहां पूर्व मंत्री बाबूलाल नागर ने दूदू में विकास की अनवरत गंगा बहाते हुए सीधे ग्राम पंचायत से दूदू को जिला बनवाकर अपनी योग्यता व तत्कालीन मुख्यमंत्री से नजदीकी होने का प्रमाण पूरे राज्य को दिया। वहीं उपमुख्यमंत्री जैसे अहम पद पर रहते हुए डॉ. प्रेमचंद बैरवा जिला बचाना तो दूर की बात रही, अपने विधानसभा क्षेत्र स्टेट हाइवे संख्या 2 नरैना-दूदू रोड़ को भी सही नहीं करवा सकें। डॉ. प्रेमचंद बैरवा के विकास कार्यों का रिपोर्ट कार्ड प्रधानमंत्री व केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह के पास भेजा जाये तो शायद उन्हें भी डॉ. प्रेमचंद बैरवा को उपमुख्यमंत्री बनाने के अपने निर्णय पर पछतावा हो। बहरहाल बरसात का मौसम आने वाला है ओर बरसात के दिनों में यह रोड़ अन्य दिनों के मुकाबले में ज्यादा खराब होकर दुर्घटना का अंदेशा बारंबार बनाये रखेगी। स्टेट हाइवे संख्या 2 दूदू-नरैना रोड़ की उबड़-खाबड़ खड्डो में तब्दील सड़क की स्थिति से क्षेत्र के विधायक के विकास कार्यों की स्थिति का न सिर्फ आमजन अपितु इस क्षेत्र से गुजरने वाला हर मुसाफिर आसानी से लगा सकता है।

गुणवत्तापूर्ण शिकायत समाधान कर अधिकतम परिवादियों को करें संतुष्ट -डीएम

जिला स्तरीय जनसुनवाई में जिला कलक्टर ने अधिकारियों को परिवादों के तीव्र निस्तारण के दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। जिला स्तरीय जनसुनवाई का आयोजन जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी की अध्यक्षता में अटल सेवा केन्द्र में किया गया। उन्होंने कहा कि जनसुनवाई के दौरान लंबित चल रहे प्रकरणों का प्राथमिकता से त्वरित निस्तारण करायें जिससे परिवादियों की समस्या का समाधान हो सके। उन्होंने कहा कि प्रत्येक राजकीय कार्यालय में शिकायत समाधान पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। सभी अधिकारी सम्पर्क पोर्टल 2.0 पर लंबित परिवादों का प्रतिदिन नियमित फॉलोअप करें। प्राथमिकता से यथासंभव परिवादो का निस्तारण गुणवत्तापूर्वक सुनिश्चित किया जाए। जिला कलेक्टर ने बताया कि जनसुनवाई के दौरान, अतिक्रमण हटवाने, विद्युत कनेक्शन, राजस्व, प्रधानमंत्री आवास योजना सहित अन्य प्रकरण प्राप्त हुए जिनका शीघ्र निस्तारण करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिये। जनसुनवाई में परिवादी राजकुमार द्वारा राजाखेड़ा वार्ड संख्या 11 के आवासीय भूखण्ड को नगरपालिका राजाखेड़ा से भूमि रूपान्तरण कराने व पट्टा प्राप्त करने के लिए परिवाद प्रस्तुत किया। जिस पर जिला कलक्टर द्वारा अधिशाषी अधिकारी राजाखेड़ा को शीघ्र कार्यवाही करने के निर्देश दिए। परिवादी रामाबाई ग्राम नगलादानी द्वारा अपने खेत में दंबगों द्वारा फसल न करने एवं धमकियों के विरूद्ध कार्यवाही हेतु परिवाद प्रस्तुत किया। जिस पर उन्होंने उपखण्ड अधिकारी बाड़ी को त्वरित कार्यवाही करने के निर्देश दिए। परिवादी राममूर्ति व अन्य द्वारा राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 3 हेतु अवाप्त भूमि के मुआवजा के लिए परिवाद प्रस्तुत किया। जिस पर जिला कलक्टर द्वारा भूमि अवाप्ति अधिकारी अतिरिक्त जिला कलक्टर को समुचित कार्यवाही हेतु निर्देशित किया। लक्ष्मीनारायण ग्राम पीतम का पुरा द्वारा आधार कार्ड में नाम दुरुस्त कराने हेतु परिवाद प्रस्तुत करने पर विकास अधिकारी पंचायत समिति धौलपुर को आधार कार्ड में शीघ्र अपडेट करवाने हेतु निर्देश प्रदान किए। जनसुनवाई के दौरान 80 से अधिक परिवाद प्राप्त हुए। जनसुनवाई में अतिरिक्त जिला कलक्टर हरिराम मीना, उपनिदेशक महिला एवं बाल विकास विभाग धीरेन्द्र सिंह, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. धर्मसिंह मीना सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

गौरव पथ स्थित सिल्वर सिटी जुबली हॉल में संचालित राजकीय पुस्तकालय अब उभरेगी नए रूप में

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। कदम मिलते गए... और कारवां बनता गया" ये पंक्तियाँ बिल्कुल सटीक बैठती हैं शहर के एसपी सुमित मेहरड़ा और जिला परिषद के सीईओ एन. सोमनाथ की उस प्रेरणादायक मुहिम पर जो धौलपुर के होनहार युवाओं को एक स्वर्णिम भविष्य देने की ओर अग्रसर है प्रशासनिक अधिकारियों की इस संयुक्त पहल से शहर में एक सर्वसुविधायुक्त लाइब्रेरी का निर्माण हो रहा है, जो न केवल पढ़ाई का केंद्र बनेगी बल्कि प्रतिभाओं के सपनों को उड़ान भी देगी जिला परिषद सीईओ आव्हाद निवृत्ति सोमनाथ ने बताया कि गौरव पथ स्थित सिल्वर सिटी जुबली हॉल में संचालित राजकीय पुस्तकालय अब एक नए रूप में उभरने जा रहा है लंबे समय से देखरेख और बजट के अभाव में उपेक्षित पड़ी इस लाइब्रेरी में अब सुधार कार्य तेजी से चल रहा है. जहां एक साथ लगभग 150 विद्यार्थियों के बैठने की व्यवस्था होगी. इस लाइब्रेरी को छात्रों की सभी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किया जा रहा है. यहां रीट, बैंक, रेलवे, मेडिकल, पुलिस, शिक्षा, प्रशासनिक सहित,-टू' प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए समुचित किताबें उपलब्ध होंगी. विद्यार्थियों की सुविधा के लिए टेबल-कुर्सी से लेकर केबिन, कंप्यूटर, एलईडी स्क्रीन, वाई-फाई और मौसम के अनुसार वातानुकूलित वातावरण की भी व्यवस्था की जा रही है. शहर के कई होनहार छात्र संसाधनों के अभाव में कोचिंग सेंटर नहीं जा पाते, जिसे देखते हुए यह योजना शुरू की गई. शुरुआत में कुछ ही लोग जुडे थे, लेकिन अब 83 से अधिक लोग इस मुहिम से समर्थन के साथ जुड चुके हैं. समाज के डॉक्टर, वकील, समाजसेवी, अधिकारी और आम नागरिक भी सहयोग कर रहे हैं. यह पहल न सिर्फ शिक्षा को नया आयाम दे रही है, बल्कि सामूहिक प्रयासों से समाज में सकारात्मक बदलाव की मिसाल भी बन रही है।

वंदे गंगा जल संरक्षण जनअभियान के तहत आयोजित हुये विभिन्न कार्यक्रम

जयपुर(निसं)। वंदे गंगा जल संरक्षण जनअभियान के तहत नगर निगम ग्रेटर की टीमों द्वारा कार्यक्रम आयोजित किये गये। मालवीय नगर जोन के वार्ड नं. 147 में जल सरंक्षण की शपथ दिलवाई गई। वार्ड नं. 109 में सफाई मित्र सम्मान समारोह एवं स्वच्छता शपथ का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्वच्छता के क्षेत्र में कार्य कर रहे सफाई मित्रों को सम्मानित कर नागरिकों को स्वच्छता एवं जल सरंक्षण के प्रति जागरूक करना है। मुरलीपुरा जोन के वार्ड नं. 02 तिरूपति विहार में वृक्षारोपण किया गया इस अवसर पर 50 पौधे (नीम, पीपल, अमलतास, गुलमोहर आदि) अधिकारियों एवं कॉलोनीवासियों द्वारा लगाये गये साथ ही उपस्थित सभी प्रतिभागियों द्वारा जल सरंक्षण की सामूहिक शपथ ली गई। मानसरोवर के वार्ड नं. 76 में स्थित लैंड स्कैप पार्क में जल सरंक्षण शपथ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में संबंधित जोन उपायुक्त, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

बाबू महाराज पर विकास कार्यों के लिए प्रभारी मंत्री ने मंजूर की राशि, मेला में आने वाले श्रद्धालुओं को मिलेगी सुविधा

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। भारतीय गुर्जर समाज कल्याण के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिलीप कसाना के द्वारा धौलपुर प्रभारी मंत्री जवाहर सिंह बेड़म से जयपुर आवास पर मुलाकात की गई। मुलाकात के दौरान बाड़ी उपखंड में कुदिन्ना धाम बाबू महाराज के मंदिर पर विकास कार्यों को लेकर चर्चा की गई। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बताया कि आगामी समय में कुदिन्ना धाम पर बाबू महाराज का लख्खी मेला लगता है। जिसमें लाखों की संख्या में श्रद्धालु मेला में शामिल होते है। उन्होंने बताया कि बाबू महाराज मंदिर परिसर पर श्रद्धालुओं के ठहराने के लिए भवन निर्माण पानी और शौचालय के बनाने के लिए राशि की मांग की गई थी। जिस पर प्रभारी मंत्री के द्वारा लगभग एक करोड़ रुपए की राशि मंजूर की गई है। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बताया कि साथ ही आठ मील से बाबू महाराज मंदिर जाने के लिए सड़क के लिए निर्माण की चर्चा की गई। जिस पर प्रभारी मंत्री के द्वारा जल्द कार्य शुरू कराने का आश्वासन दिया गया है। कसाना ने बताया कि सेंचुरी के लिए भी प्रभारी मंत्री से चर्चा की गई है। जिस पर जल्द ही समस्या का समाधान का प्रभारी मंत्री के द्वारा आश्वासन दिया गया है। मुलाकात के दौरान सोमेंद्र कसाना प्रधान, मोनू घुरैया मौजूद रहे।

नाम परिवर्तन

मेरे आधार कार्ड, पैन कार्ड, मूल निवास, जाति प्रमाण पत्र आदि में मेरा नाम इमरान नसवाण (EMRAN NASWAN SON-OF HABIB KHAN) पुत्र हबीब खां जो सही है। जबकि मेरे पासपॉर्ट में भूल से इमरान (EMRAN) दर्ज हो गया। जबकि अब मेरे पासपॉर्ट में मेरा नाम इमरान नसवाण (EMRAN NASWAN) दर्ज करवाना चाहता हूं।
इमरान नसवाण (EMRAN NASWAN) पुत्र हबीब खां (HABIB KHAN) पता- वार्ड 25 मदीना मस्जिद के पास तहसील सरदारशहर जिला चूरू

कार्यालय नगरपालिका मण्डल राजलदेसर जिला चूरू (राज.)

Email-raj.churu.bika@gmail.com Phone number 01567-294504
क्रमांक- न.पा.रा./2025-26/2352 दिनांक- 19/6/25

आपत्ति विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्थान नगरीय क्षेत्र (कृषि भूमि को गैर कृषि प्रयोजन उपयोग के लिए उपयोग की अनुज्ञा और आंवटन) नियम 2012 के तहत कृषि भूमि रूपान्तरण उपरान्त कृषि भूमि के पट्टे के तहत स्वामित्व पट्टे आवंटन व नीचे वर्णित भूमि मे अपने अधिकार राजस्थान नगरपालिका अधिनियम 2009 की धारा 69-क के तहत आवासीय प्रयोजन हेतु पत्रावलीया प्राप्त हुई है। उक्त वर्णित पत्रावलीयो के पट्टे के आवंटन के संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो अपनी आपत्ति मय दस्तावेजो के अन्दर मियाद 7 दिवस मे इस कार्यालय में प्रस्तुत करे। अन्यथा बाद गुजर मियाद प्रस्तुत आपत्तियो पर कोई विचार नहीं किया जायेगा ।

क्र.सं.	नाम आवेदनकर्ता	पता	क्षेत्रफल	प्रयोजन
01	श्रीमती नसीम बानो पत्नी श्री रफीक मनिहार	वार्ड न. 21 राजलदेसर	153.98 वर्गमीटर	69-क

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका राजलदेसर

Rajasthan State Road Development And Construction Corporation Ltd.,JAIPUR.

No. NIT/2025-26/ 9380-93 निविदा सूचना / 2025-26 Date- 19.06.2025

निम्नलिखित कार्यो के लिए केन्द्र / राज्य सरकार के अभियांत्रिकी विभागों एवं उनके अधिकृत संगठनों में पंजीकृत एवं अनुभवी संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्युरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑनलाइन निविदायें आमंत्रित की जाती है

कार्य का विवरण	कार्य की अनुमानित लागत (रु.)	निविदा सूचना संख्या
Treatment of CC Road on Jodhpur-Osian-Phalodi Road. UBN: RRC2526WSOB00315	12.91 Lakh	ई-170/ 25-26
SITC of Fire Fighting, MGPS and Bed Elevator work in CCB at District Nagaur. (03 No. works) UBN (1) RRC2526WSOB00318 (2) RRC2526WSOB00319 (3) RRC2526WSOB00320	236.89 Lakh	ई-171/ 25-26
SITC of Fire Fighting, MGPS and Bed Elevator work in CCB at District Bhilwara. (03 No. works) UBN (4) RRC2526WSOB00321 (5) RRC2526WSOB00322 (6) RRC2526WSOB00323	124.78 Lakh	
Electrification and ELV, Air conditioning, Fire Fighting and Bed Elevators work in CCB at Bharatpur. (04 No. works) UBN: (1)RRC2526WSOB00327 (2) RRC2526WSOB00330 (3) RRC2526WSOB00331 (4) RRC2526WSOB00332	388.39 Lakh	ई-172/ 25-26

निविदा से सम्बन्धित प्रपत्र में निविदा शुल्क, धरोहर राशि, डाउनलोड करने व खोलने की तारीख सहित सम्पूर्ण विवरण एवं संशोधन वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.nic.in तथा http://pwd.rajasthan.gov.in/rsrdc पर देखा जा सकता है । इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है।

महाप्रबंधक

कार्यालय नगरपालिका मण्डल राजलदेसर जिला चूरू (राज.)

Email-raj.churu.bika@gmail.com Phone number 01567-294504
क्रमांक- न.पा.रा./2025-26 / 2316 दिनांक- 19/6/2025

आपत्ति विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्थान नगरीय क्षेत्र (कृषि भूमि को गैर कृषि प्रयोजन उपयोग के लिए उपयोग की अनुज्ञा और आवंटन) नियम 2012 के तहत कृषि भूमि रूपान्तरण उपरान्त कृषि भूमि के पट्टे के तहत स्वामित्व पट्टे आवंटन व नीचे वर्णित भूमि मे अपने अधिकार राजस्थान नगरपालिका अधिनियम, 2012 के तहत कृषि आधारित उद्योग प्रयोजन हेतु पत्रावलिया प्राप्त हुई है। उक्त वर्णित पत्रावलियों के पट्टे आवंटन के सम्बन्ध में किसी को कोई आपत्ति हो तो अपनी आपत्ति मय दस्तावेजो के अन्दर मियाद 7 दिवस में इस कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद गुजर मियाद प्रस्ततु आपत्तियो पर कोई विचार नहीं किया जायेगा ।

क्र.सं.	नाम आवेदनकर्ता	पता	क्षेत्रफल	खसरा सं.	प्रयोजन
01	श्री राकेश माहिचा पुत्र श्री गणेश राम माहिचा	एन. एच. 11 श्रीमाल फार्म हाउस के सामने राजलदेसर	4124.00 वर्ग मीटर	2369/ 324	कृषि भूमि

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका राजलदेसर

Office of grampanchayat jeelo p.s. patan (sikar)

S.r. no. 110 Date 18.6.2025

Notice Inviting Bid

Bid for construction works under other scheme are invited from interested bidders upto 18-06-2025,9:30am to 24-06-2025,01:00pm. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://sppp.raj.nic.in)of the state .The apporoximate value of the work is max.RS 5.00 Lac.

UBN NO. PKP2526WSOB00078-85

Shakti singh tanwar
VDO
Gram panchayat jeelo

shanti saini
Administration gram panchayat jeelo

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, शुक्रवार
20 जून, 2025

संदीप बजाज बने प्रदेश महामंत्री

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष गोपाल शरण गर्ग के निर्देशानुसार प्रदेश अध्यक्ष गिरीश गर्ग की सहमति से प्रदेश महामंत्री सन्मति हरकारा लक्ष्मणगढ़ निवासी संदीप बजाज के प्रशंसनीय सेवा कार्यों व समाज में सक्रियता को देखते हुए अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन पूर्वी राजस्थान के प्रदेश युवा महामंत्री पद पर मनोनयन किया गया है। बजाज के मनोनयन पर अग्रवाल समाज के प्रबुद्धजनों ने बधाई देते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष गोपाल शरण गर्ग प्रदेश अध्यक्ष गिरीश गर्ग प्रदेश महामंत्री सन्मति हरकारा, युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष हेमराज जिंदल, राष्ट्रीय महामंत्री राजेश गर्ग, युवा प्रदेश अध्यक्ष नितिन अग्रवाल, प्रदेश महामंत्री विनीत का आभार व्यक्त किया है।

भाजपा शहर मण्डल आयोजित करेगा योग कार्यक्रम

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर लक्ष्मणगढ़ भाजपा शहर मण्डल की ओर से योग कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इस संबंध में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के मण्डल संयोजक जयप्रकाश सरावगी ने जानकारी देते हुए बताया कि यह कार्यक्रम 21 जून को प्रातः 6 बजे से 7 बजे तक संस्कार मैरिज गार्डन में आयोजित किया जाएगा। शहर मण्डल अध्यक्ष ललित पंवार ने सभी पदाधिकारियों, पार्षदों, कार्यकर्ताओं, नागरिकों व आमजन से कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने की अपील की है। कार्यक्रम का उद्देश्य लोगों को योग के प्रति जागरूक करना और स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देना है।

शैक्षिक भ्रमण से लौटे राज्य स्तरीय स्काउटर गाइडर

जयपुर टाइम्स

दांतारामगढ़(निस)। राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड राज्य मुख्यालय जयपुर के तत्वावधान में राज्य स्तरीय स्काउटर गाइडर शैक्षिक भ्रमण शिविर स्थान ऊटी तमिलनाडु में 14 से 18 जून तक आयोजित हुआ। इस शिविर में स्थानीय संघ दांता के सचिव राम लाल चौधरी, सहायक सचिव फूल मोहम्मद, लीडर ट्रेनर प्रभूदयाल कुमावत, ट्रेनिंग काउंसलर हेमराज कुमावत, भंवरलाल रोहिल, सहायक कमिश्नर हनुमान प्रसाद सिंगल, स्काउटर तुलसीराम कुमावत, का राज्य स्तर पर चयन होने पर भाग लेकर लौटे। शिविर के दौरान मद्रास रेजिमेंट वेलिंग्टन, दक्षिण रेलवे, रोज गार्डन, टी गार्डन, डॉल्फिन नोज, सिम्स पार्क,पाईकारा बोटिंग व वाटर फॉल,बॉटनिकल गार्डन, ऊटी लेक व मार्केट, टी फैक्ट्री व चॉकलेट फैक्ट्री का भ्रमण व अवलोकन किया। शिविर संचालक राज्य संगठन आयुक्त पी एस शेखावत, सी ओ एल आर शर्मा, डॉ दीपेश शर्मा,महेश कालावत,सुनीता मीणा, निशु कंवर के मार्ग दर्शन में शिविर का सफल आयोजन हुआ। भ्रमण शिविर से लौटने पर सीओ बसंत लाटा, प्रभारी सहायक जिला कमिश्नर रजनीश कुमार शर्मा, प्रभारी सहायक जिला कमिश्नर गाइड नीलम शर्मा, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी हेमाराम वर्मा व समस्त स्काउटर गाइडर ने बधाई दी।

वाहिदपुरा में पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। कस्बे के समीपवर्ती वाहिदपुरा गांव में गुरुवार को भागीरथमल मीणा की माता के निधन पर शोकसभा में शामिल होने आए आगंतुक आई आर एस महावीर सिंह मीणा जी एस टी कमिश्नर जयपुर, बी. एल. मीणा, विकास अधिकारी लक्ष्मी नारायण मीणा पंचायत समिति मंडावा, एडवोकेट धर्मवीर मीणा, अनिल मीणा बजावा, ओमप्रकाश मीणा प्रधानाध्यापक हंसासरी, जसवंत मीणा पातुसरी, रामचन्द्र मीणा कोलिण्डा, अमित बाजीसर, मदन सिंह मीणा आदि ने माताजी की याद में पौधारोपण किया। इस मौके पर काफी संख्या में परिवार के सदस्य व वाहिदपुरा के ग्रामीण उपस्थित रहे।

गौड़ ब्राह्मण महासभा युवा कार्यकारिणी का विस्तार

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। गौड़ ब्राह्मण महासभा युवा कार्यकारिणी का गुरुवार को विस्तार किया गया। जिलाध्यक्ष जितेन्द्र इन्दोरिया ने बताया की जिला महामंत्री जय राम दीक्षित नवलगढ़, जिला महासचिव डॉक्टर प्रीतम शर्मा सूरजगढ़, जिला उपाध्यक्ष निरंजन लाल शर्मा वृंदावन,जिला संरक्षक बाबूलाल शर्मा,झुंझुनू को बनाया गया। वहीं जिला संगठन मंत्री मलसीसर के लक्ष्मीकांत मिश्रा को नियुक्त किया गया है।

कलेक्शन-एजेंट ने रची थी 8 लाख की लूट की कहानी

ऑनलाइन गेम की लत के चलते किया गबन

झुंझुनूं की सूरजगढ़ पुलिस ने किया खुलासा

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। झुंझुनूं जिले के चिड़ावा कस्बे में हिंदुजा लेलैंड फाइनेंस की शाखा के कलेक्शन एजेंट ने 8 लाख की लूट की झूठी कहानी गढ़ी थी। ऑनलाइन गेम की और लालच के चलते उसने पहले 8 लाख का गबन किया। फिर गबन छुपाने के लिए लूट की कहानी गढ़ दी। आरोपी ने सूरजगढ़ थाना इलाके में लूट होना बताया था, जिसका पुलिस ने खुलासा कर दिया। पुलिस ने शिकायतकर्ता एजेंट को ही इस मामले गिरफ्तार कर लिया है। कार्यवाहक एसपी देवेंद्र राजावत ने बताया कि 16 जून की दोपहर संदीप ने सूरजगढ़ थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई कि वह दोपहर 3.10 बजे पांच रसीदों का कुल 3 लाख 6 हजार 270 रुपए लेकर पिलानी स्थित एयरटेल पेमेंट बैंक में जमा करवाने जा रहा था। जीणी गांव के पास एक सफेद बिना नंबर की स्विफ्ट कार ने उसे ओवरटेक कर रोका। कार से चार लोग उतरे, जिनमें से एक के हाथ में पिस्तौल थी। उन्होंने उसे डरा-धमकाकर सारा पैसा लूट लिया और फरार हो गए। इस मामले की जांच के बाद पता चला कि चूरू के डिगली गांव का निवासी संदीप कुमार (32) ने लूट की झूठी कहानी गढ़ी थी। उसे गिरफ्तार किया गया है। वह झुंझुनूं जिले के चिड़ावा कस्बे में हिंदुजा लेलैंड फाइनेंस की शाखा में पिछले 7 साल से कलेक्शन एजेंट के तौर पर कार्यरत था। पुलिस की सतर्कता और सीसीटीवी फुटेज की तकनीकी मदद से उसकी सारी चालाकी बेनकाब हो गई। संदीप कुमार हिंदुजा लेलैंड फाइनेंस की शाखा में कलेक्शन एजेंट था। कुछ महीनों पहले संदीप को ऑनलाइन गेमिंग की लत लग गई। उसने गेम खेलते हुए मोटी रकम जीतने की उम्मीद में अपनी सैलरी के साथ-साथ ग्राहकों से वसूली गई किस्तों के पैसे भी ऑनलाइन गेम में झोंकने शुरू कर दिए। संदीप ने शुरुआत में छोटी राशि से गेम खेलना शुरू किया। शुरुआत में थोड़ा-बहुत फायदा हुआ, तो उसका लालच बढ़ता गया। इसके बाद उसने अपनी फाइनेंस कंपनी की वसूली से प्राप्त बड़ी-बड़ी किस्तों को भी ऑनलाइन गेम में लगाना शुरू कर दिया। वह हर बार यह सोचकर पैसा लगाता था कि "इस बार जीतूंगा तो सब भर दूंगा", लेकिन किस्मत हर बार उसे धोखा देती रही और वह गहरे दलदल में फंसता चला गया। पिछले चार महीनों में संदीप ने लगभग 8 लाख की बड़ी रकम, जो ग्राहकों से वसूली के दौरान जमा करानी थी, उसे गेम में उड़ा दिया। उसने न तो पैसे जमा किए और न ही कंपनी को कोई स्पष्टीकरण दिया। जब बार-बार रसीदों की मांग और कंपनी का दबाव बढ़ने लगा, तो संदीप ने एक खतरनाक कदम उठाया, एक फर्जी लूट की कहानी गढ़ दी।

पुलिस को हुआ शकः सीसीटीवी ने खोली पोल

संदीप की रिपोर्ट पर पुलिस तत्काल हरकत में आई। सूरजगढ़ थानाधिकारी हेमराज मीणा के नेतृत्व में एक पुलिस टीम और एजीटीएफ (एंटी गैंग टास्क फोर्स) का गठन किया गया। घटनास्थल का गहन निरीक्षण किया गया और आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले गए। लेकिन हैरानी की बात यह रही कि जिस जगह लूट की बात कही गई, वहां न तो कोई स्विफ्ट कार नजर आई और न ही किसी संदिग्ध की आवाजाही। बल्कि सीसीटीवी में संदीप अकेला ही मोटरसाइकिल से आता-जाता दिखाई दिया। यह बात पुलिस के संदेह को और गहरा कर गई। पुलिस ने जब कड़ाई से पूछताछ की, तो आखिरकार संदीप ने खुद ही कबूल कर लिया कि लूट की कोई वारदात नहीं हुई, यह सब झूठ था। उसने जो रकम गबन की थी, उसे ऑनलाइन गेम में हार चुका था। जांच में यह भी सामने आया कि यह पहला मौका नहीं था जब संदीप ने रकम का गलत इस्तेमाल किया हो। वह पहले भी वसूली के पैसे को समय पर जमा नहीं करता था और गेम खेलने के लिए राशि एडजस्ट कर देता था। मगर हर बार मामला संभल जाता था। इस बार बात बहुत बड़ी रकम की थी, और कंपनी का भी दबाव काफी बढ़ चुका था, जिससे वह फंस गया।

पुलिस की सख्ती और सतर्कता से हुआ खुलासा

सूरजगढ़ पुलिस और एजीटीएफ की सतर्कता ने इस पूरे फर्जी लूट कांड का पर्दाफाश किया। पुलिस ने आरोपी संदीप कुमार को गिरफ्तार कर लिया है और उसे पीसी रिमांड पर लेकर पूछताछ जारी है। उसके पास से गबन की गई रकम और घटना में इस्तेमाल बाइक भी बरामद की गई है। झुंझुनूं जिले के कार्यवाहक पुलिस अधीक्षक देवेंद्र सिंह राजावत ने बताया कि यह केस एक मिसाल है कि किस तरह लालच, टेक्नोलॉजी की गलत लत और गलत राह इंसान को अपराध की ओर धकेल सकती है। पुलिस टीम की सूझबूझ और आधुनिक तकनीक के उपयोग से यह मामला समय रहते खुल गया।

अनुशासन और परिश्रम ही सफलता की चाबी हैः एसड़ीएम

मण्डावा में प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। राज्य सरकार की ओर से मण्डावा ब्लॉक के राजकीय विद्यालयों में 90% से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सीबीईओ अशोक कुमार शर्मा ने की। कार्यक्रम में उपखण्ड अधिकारी मुनेश कुमारी, तहसीलदार डॉ.सुरेन्द्र भास्कर, एसीबीईओ दामोदर प्रसाद जांगिड़ आदि मंचासीन अतिथि रहे। उपखण्ड अधिकारी मुनेश कुमारी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि अनुशासन और मेहनत ही सफलता की चाबी है। विशिष्ट अतिथि तहसीलदार डॉ सुरेन्द्र भास्कर ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि लगातार मेहनत करते रहने से ही सफलता मिलती है। समारोह में नानी बाई जैपुरिया राबाउमावि मण्डावा की बालिकाओं ने स्वागत गीत व सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। मण्डावा ब्लॉक में कक्षा 10 में 8 विद्यार्थियों ने और कक्षा 12 में 32 विद्यार्थियों ने 90%से अधिक अंक प्राप्त किए जिन्हें इस समारोह में सम्मानित किया गया। समारोह में ब्लॉक टापर अनिता राउमावि भारू, कक्षा 12 विज्ञान में प्रियांशी वर्मा व कक्षा 10 अर्जुन कुमार सेठ बद्रीप्रसाद केजरीवाल राउमावि चूड़ी अजीतगढ़ सहित 16 विद्यालयों के विद्यालयों के 40 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। समारोह का आयोजन डीआरडी राउमावि मण्डावा व नानी बाई जैपुरिया राबाउमावि की ओर से किया गया जिसमें इन विद्यालयों के शिक्षकों राजपाल सिंह, विरेन्द्र सिंह, संजय कुमार, सुनीता कुमारी, हेमंत राठोड, सलमा बानो, विजेन्द्र सिंह, रिछपाल सिंह, मन्जू जाखड़, विकास कुमार ने समारोह की व्यवस्था में योगदान दिया। कार्यक्रम में ब्लॉक के प्राचार्य राकेश कडाहयला, फारूक अहमद, सहीराम,सुमन शेखसरिया, सन्तरा मंगावा, मन्जू, संगीता नायक, अरूणा अरडावतिया सहित विभिन्न विद्यालयों के शिक्षक व अभिभावक और सीबीईओ कार्यालय के संदर्भ व्यक्ति उत्तम दाधीच, लोकेश कुमार, प्रशासनिक अधिकारी आनन्द देवठिया, रमेश कुमार, अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी संजीव जांगिड़, ब्लॉक साक्षरता समन्वयक मूल सिंह शेखावत, कनिष्ठ लेखाकार शीतल शर्मा सहायक प्रशासनिक अधिकारी आलोक कौशिक,एमआईएस कृष्ण सिंह व सहायक कर्मचारी मदनलाल उपस्थित रहे।

झुंझुनूं में वक्फ भूमि पर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई, टूटते घर देख रो पड़ीं महिलाएं

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। शहर में ऐतिहासिक दरगाह कमरूद्दीन शाह की वक्फ भूमि पर चल रही प्रशासनिक कार्रवाई ने इंसानी जज़्बातों को झकझोर कर रख दिया। जैसे ही बुलडोजर ने मकानों को गिराना शुरू किया, मौके पर मौजूद लोगों की आंखों से आंसू बह निकले। महिलाओं की सिसकियाँ, बच्चों की चीखें और टूटते आशियानों की आवाज़ों ने माहौल को भावुक कर दिया। तहसीलदार महेंद्र मुंड ने बताया कि यह भूमि वक्फ बोर्ड के अधीन आती है और हाई कोर्ट ने इस पर बने 339 अवैध अतिक्रमणों को हटाने के आदेश दिए हैं। कार्रवाई उसी आदेश के तहत की जा रही है। उन्होंने बताया कि अब तक 339 में से 5 अतिक्रमण हटाए गए हैं। केवल उन्हीं मकानों पर कार्रवाई की गई जो मौके पर खाली थे।" उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि कोर्ट के निर्देश हैं कि किसी को बेघर न किया जाए, लेकिन जिनके पास वैकल्पिक आवास हैं और फिर भी अतिक्रमण किया है, उनके खिलाफ कार्रवाई जारी रहेगी। मौके पर एक महिला प्रशासन से बिलखती रही, मिन्नते मांगती रही मत तोड़ो साहब, मेरा घर मत तोड़ोज अगर तोड़ना है तो सबका तोड़ोज मैंने पैसे देकर ली थी ये जमीन।"घ लेकिन पुलिस ने महिला को हटाया और मकान को गिरा दिया गया। यह केवल उसी महिला की कहानी नहीं थी। कई लोग अपनी गाढ़ी कमाई से बनाए घरों के टूटने को देख फूट-फूटकर रोते रहे। पीड़ित आरिफ ने कहा कि हम गरीब मजदूर हैं। दिन भर काम करते हैं तभी घर चलता है। सालों की कमाई से ये घर बनाया था। हमें नहीं पता था ये वक्फ की जमीन है। हमने पैसे देकर ली थी। प्रशासन ने हमारा घर गिरा दिया। हम कोर्ट का दरवाजा खटखटाएंगे। कार्रवाई की सूचना मिलते ही सैकड़ों लोग मौके पर एकत्र हो गए। कुछ लोग प्रशासन के समर्थन में थे, जबकि अधिकांश लोग पीड़ितों के पक्ष में खड़े दिखाई दिए। कई बार माहौल तनावपूर्ण भी हुआ, लेकिन पुलिस जाब्ते की सतर्क मौजूदगी के चलते स्थिति नियंत्रण में रही। यह कार्रवाई कानून और आदेश के पालन का हिस्सा थी, लेकिन मानवीय दृष्टिकोण से यह उन सैकड़ों परिवारों के लिए एक त्रासदी साबित हुई, जो वर्षों से इन आशियानों में रह रहे थे। सवाल यह नहीं कि जमीन किसकी थी, सवाल यह भी है कि क्या इन परिवारों को पहले से वैकल्पिक व्यवस्था दी गई थी।

लालगढ़ के किसान बनेंगे बेसहारा पशुओं का सहारा

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। लालगढ़ में बेसहारा गायों के लिए गोचर में घास उगाई जाएगी। करीब एक हजार बीघा गोचर पर ग्रामीणों ने बीस से अधिक ट्रेक्टर चलाकर तई निकाल दी है। गोचर जमीन पर गायों के लिए घास उगाने का निर्णय लेकर ग्रामीणों ने सराहनीय कार्य किया है। अब जोधपुर व नागौर के बाजार से घास के चार सौ किलो बीज बुक करवाये हैं। ग्रामीणों ने बताया कि बरसात के समय यहां पर घास के बीजों का छिडकाव कर देंगे, जिसे लालगढ़ की बेसहारा गायों के बड़ी अच्छी व्यवस्था हो जाएगी। सरपंच व प्रशासक मोतीसिंह ने बताया की गांव लालगढ के पूर्वी दिशा में लगभग एक हजार बीघा जमीन सरकारी (गोचर) जमीन है। जिसे बरसात के बाद बेसहारा पशुओं के चराने में काम लेते है, लेकिन इस बार ग्रामीणो ने सामुहिक रूप से निर्णय लिया कि चौमासे के समय में बेसहारा गायों व पशुओं को घास की जरूरत होती है। इसलिए इस गोचर जमीन पर घास लगाने का ग्रामवासियों की ओर से सर्व सहमति से निर्णय लिया गया है।

योग, आयुर्वेद और एलोपैथी के समन्वय से सशक्त जीवन की प्राप्ति

जयपुर टाइम्स

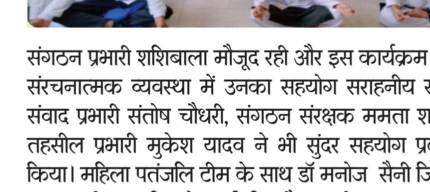

झुंझुनूं(निस)। महिला पतंजलि योग समिति झुंझुनू की जिला अध्यक्ष गीता नूनिया ने सीकेआरडी मेमोरियल हॉस्पिटल व रिसर्च इंस्टीट्यूट झुंझुनू में गुरुवार को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस से पूर्व योग जागरूकता व अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की अपार सफलता के लिए अपनी टीम के साथ अस्पताल के निदेशक लालचंद ढ़ाका, प्रबंधक नरेंद्र माहीच व नर्सिंग इंचार्ज नेमीचंद भांबू की उपस्थिति में समस्त नर्सिंग स्टाफ को बताया कि योग, आयुर्वेद और एलोपैथी – ये तीनों स्वास्थ्य की देखभाल के अलग-अलग, लेकिन पूरक मार्ग हैं। योग -शरीर और मन के संतुलन के लिए, आयुर्वेद- जीवनशैली और रोग की जड़ पर ध्यान देने के लिए, एलोपैथी- तीव्र और आपातकालीन स्थितियों के त्वरित समाधान के लिए। गीता नूनिया व उनकी टीम ने समस्त शारीरिक अंगों को प्राण वायु के माध्यम से स्वस्थ बनाने के लिए वैज्ञानिक पद्धति पर खरे उतरते हुए आठों प्राणायामों का अंतर्राष्ट्रीय प्रोटोकॉल अनुसार अभ्यास करवाया। जिला प्रभारी ने बताया की योग, आयुर्वेद व एलोपैथ तीनों का समन्वय कर हम एक स्वस्थ, सशक्त और संतुलित जीवन की ओर बढ़ सकते हैं। कार्यक्रम में जिला प्रभारी के साथ सह संगठन प्रभारी शशिबाला मौजूद रही और इस कार्यक्रम की संरचनात्मक व्यवस्था में उनका सहयोग सराहनीय रहा। संवाद प्रभारी संतोष चौधरी, संगठन संरक्षक ममता शर्मा, तहसील प्रभारी मुकेश यादव ने भी सुंदर सहयोग प्रदान किया। महिला पतंजलि टीम के साथ डॉ मनोज सैनी जिला सह प्रभारी पतंजलि योग समिति और तहसील युवा भारत प्रभारी मनीष शर्मा का भी अतुल्य सहयोग रहा। डॉ मनोज सैनी ने भी जिला प्रभारी के साथ-साथ कार्यक्रम में उपस्थित समस्त चिकित्सक व नर्सिंग स्टाफ को अनेक लाभदायक योगाभ्यास समझाएं।

22 लाख पौधे और नदी को पुनर्जीवित करने का लक्ष्य

कलेक्टर ने मां के नाम लगाया पेड़, बोलेः वृक्ष भविष्य की नींव

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। झुंझुनूं जिले में पर्यावरण और जल संरक्षण को लेकर प्रशासन पूरी गंभीरता से कार्य कर रहा है। इसी क्रम में, जिला कलेक्टर रामवतार मीणा ने अपनी माता की स्मृति में एक पौधा लगाकर एक अनूठी पहल की है। उन्होंने कलेक्ट्रेट आवास पर यह पौधरोपण करते हुए इसे भावनात्मक रूप से जोड़ा और कहा कि यह उनकी मां की याद में है, जिससे न केवल पर्यावरण को लाभ मिलेगा बल्कि व्यक्तिगत भावनात्मक जुड़ाव भी मजबूत होगा। कलेक्टर मीणा ने बताया कि यह पहल केवल एक व्यक्तिगत भाव नहीं है, बल्कि यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'वंदे गंगा' जल संरक्षण अभियान और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के 'हरियालो राजस्थान' अभियान को सफल बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे भी अपने माता-पिता, परिजनों या किसी प्रेरणास्रोत के नाम एक पेड़ लगाएं और उसकी देखरेख करें। उनका मानना है कि पेड़ सिर्फ ऑक्सीजन का स्रोत नहीं होते, ये हमारी भावनाओं, परंपराओं और भविष्य की नींव होते हैं। अगर हर व्यक्ति एक पेड़ किसी की याद में लगाए, तो यह अभियान एक जनआंदोलन बन सकता है।

कलेक्टर ने दिलवाई शपथ 22 लाख पौधों का लक्ष्य और नदी का पुनर्जीवन

जिला प्रशासन ने हरियालो राजस्थान अभियान के तहत इस मानसून सीजन में 22 लाख से अधिक पेड़ लगाने का लक्ष्य रखा है। कलेक्टर मीणा ने बताया कि मानसून के शुरुआती दौर में व्यापक स्तर पर पौधारोपण कार्यक्रमों का शुभारंभ किया गया है। इसके अतिरिक्त, जिले की जीवनदायिनी काटली नदी को पुनः जीवित करने का कार्य भी एक अभियान के रूप में शुरू किया जा रहा है। इस पुनर्जीवन अभियान में जनसहभागिता से श्रमदान, जल स्रोतों की सफाई, जल संरक्षण संरचनाएं और पौधरोपण जैसे कार्य किए जाएंगे।

वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान

कलेक्टर मीणा ने यह भी बताया कि जिले में वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान के तहत भी कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों में स्कूली छात्रों, सामाजिक संस्थाओं, ग्राम पंचायतों और स्वयंसेवी संगठनों की भागीदारी से जागरूकता रैलियों, श्रमदान, जल स्रोतों की मरम्मत और संरक्षण कार्य शामिल हैं।

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, शुक्रवार
20 जून, 2025

लालपीर की दरगाह पर गिरी आकाशीय बिजली, मीनार ढही

जयपुर टाइम्स

सांभरलेक(निस)। कस्बे की समीपवर्ती ग्राम पंचायत बरडोती के कोच्या की ढ़ाणी स्थित लालपीर की डूंगरी में लालपीर शाह की दरगाह के दरवाजे की मीनार पर सोमवार देर रात को तेज धमाके के साथ आकाशीय बिजली गिरी जिससे एक तरफ की मीनार का ऊपरी हिस्सा ढह गया। बिजली की तेज गति के कारण मीनार और दरवाजे की छत को भी काफी नुकसान पहुंचा है। मीनार ढहने से उसका मलबा दरवाजे की छत पर ही बिखर गया और कुछ हिस्सा नीचे भी गिर गया। वहीं दरगाह के पास ही स्थित विद्युत ट्रांसफार्मर भी आकाशीय बिजली की चपेट में आ गया और जल गया। यह तो गनीमत रही कि उस दौरान यहां दरगाह की देखरेख करने वाला खादिम और उसका परिवार बरामदे में बैठा था अन्यथा बड़ी जनहानि हो भी सकती थी।

सुबह दरगाह के बुलंद दरवाजे के पास आया था सांप

लालपीर शाह दरगाह के खादिम रफीक मोहम्मद ने बताया कि सोमवार सुबह को बुलंद दरवाजे के पास एक काला सांप आया था जो करीब आठ दस फीट लंबा था। इस सांप के पीछे एक कुत्ता भी भोंक रहा था और सांप जमीन पर आधा खड़ा होकर कुत्ते को काटने का प्रयास कर रहा था। रफीक के मुताबिक यह बिजली सोमवार देर रात 8.30 बजे संभवत उस सांप पर ही गिरी जिसके कारण मीनार चपेट में आ गई।

खादिम परिवार के छूट गई धूजणी

लालपीरशाह दरगाह के खादिम रफीक मोहम्मद ने बताते है कि जिस वक्त तेज आवाज के साथ धमाका हुआ उस दौरान मैं, पत्नी रूखसाना, पुत्र मोइन और वहीद बरामदे में बैठे थे। मानो ऐसा लगा कि कोई बम गिरा है या कोई भूकंप आ गया। इतने तेज धमाके और रोशनी के कारण हमारी तो एक तरह से आंखे ही बंद हो गई। उस दौरान हम 50 फीट ऊंची मीनार के पास करीब सौ फीट की दूरी पर दरगाह परिसर में ही बने बरामदे में बैठे थे। अचानक हुए धमाके से हम सहम गए, हमें पलभर के लिए कुछ भी नहीं दिखा। इसके बाद हम डरकर अंदर कमरे में चले गए। करीब आधा घंटे बाद बाहर आकर टॉर्च जलाकर देखा तो पता चला कि मीनार पर बिजली गिरने से क्षतिग्रस्त हो गई है। लाल पत्थरों की पहाड़ी पर स्थित लालपीर की डूंगरी का सालाना उर्स मजार साहब के चांद की तारीख 16 व 17 को भरता है। उर्स में हनुमानगढ़ के बंजारे, चितौड़गढ़ के अग्रवाल, मकराना, नांवा, कुचामन, सीकर, बाय, खाटू, लोसल, सांभरलेक, जयपुर, नरैना, दूदू, मौजमाबाद, रूपनगढ़, सलेमाबाद, पनेर, फुलेरा सहित कई जगहों से लोग शिरकत करते है।

हिंदु-मुस्लिमों की आस्था का प्रतीक है लालपीर

लालपीर शाह की यह दरगाह काफी पौराणिक है। यहां मुस्लिमों के साथ ही काफी संख्या में हिंदु समुदाय के लोग भी मन्नतें मांगने आते है। बारिश नहीं होने पर आज भी लोग यहां दरगाह पर अरदास करते है और पुए पूड़ी चढ़ाते है। ऐसी मान्यता है कि यहां मन्नत मांगने पर उसकी मन्नत पूरी जरूर होती है। खादिम रफीक मोहम्मद बताते है कि अंग्रेजी शासन काल में सांभर सॉल्ट में अंग्रेज अफसर आए थे जो डेम बनने के दौरान यहां से पत्थर लेने आए। इस लालपीर की डूंगरी से जब वह पत्थर ले जाने लगे तो वह पत्थर से ही चिपक गए। इसके बाद उसने लालपीर से माफी मांगी और यहां से पत्थर ले जाना बंद कर दिया। बुजुर्ग लोग बताते है कि यहां डूंगरी में आज भी कोई पत्थर ले जाने की कोशिश करता है तो सांप आ जाते है।

जलदाय विभाग ने हटाएं अवैध जल कनेक्शन

ग्रामीण क्षेत्रों में जलदाय विभाग ने चलाया अभियान

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। राज्य सरकार की ओर से चलाए गए वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान के तहत क्षेत्र में जलदाय विभाग की ओर से राज्य सरकार के निर्देशानुसार चलाए जा रहे अभियान के तहत जल संरक्षण को लेकर अभियान के तहत जागरूकता कार्यक्रम के तहत जल को बचाने के लिए अनेक कार्यक्रम आयोजित किया जा रहे हैं। उसी के तहत जलदाय विभाग की ओर से शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान के तहत अवैध जल कनेक्शनों को हटाकर अब जल कनेक्शनों पर कार्रवाई की जा रही है। जलदाय विभाग के एक्सईएन रामदेव पारीक ने बताया कि वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान के तहत राज्य सरकार के निर्देशानुसार अवैध जल कनेक्शनों व पानी बचाने के लिए आमजन को जागरुक करते हुए अनेक कार्यक्रमों के तहत लोगों को जल बचाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। वहीं साथ ही शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में अभियान के तहत पाइप लाइनों में अवैध जल कनेक्शन कर रखे हैं उनके खिलाफ कार्रवाई भी की जा रही है। जलदाय विभाग के कर्मचारियों की ओर से तहसील के गांव खेजड़ा में अवैध जल कनेक्शन पर कार्रवाई की। राज्य सरकार के निर्देशानुसार अभियान लगातार जारी रहेगा।

सीए मरोठिया बने कांग्रेस सीए सेल के जिला अध्यक्ष

पार्टी पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने किया स्वागत

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। कांग्रेस पार्टी के उच्च नेतृत्व की ओर से सीए विकास मरोठिया को कांग्रेस सीए सेल का जिला अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। इस महत्वपूर्ण दायित्व की घोषणा से जिले भर के कांग्रेस कार्यकर्ताओं में हर्ष और उत्साह का माहौल है। इस अवसर पर कांग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ता और पदाधिकारीयों ने सीए परमानंद प्रजापत, राजेन्द्र कालवा, सीए सुभाष गौड़ और सीए मनीष सैनी ने सीए विकास मरोठिया का माल्यार्पण कर उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। उन्हें नई जिम्मेदारी के लिए शुभकामनाएं दीं। सीए मरोठिया ने पदभार ग्रहण करते हुए कांग्रेस आलाकमान का आभार जताया और कहा कि संगठन को नई ऊर्जा देने, सीए वर्ग की समस्याओं को उठाने और युवाओं को जोड़ने के लिए पूरी निष्ठा से कार्य करेंगे। सभी उपस्थित कार्यकर्ताओं ने इस नियुक्ति को संगठन के लिए एक मजबूत और दूरदर्शी कदम बताया और पार्टी के नेतृत्व का आभार व्यक्त किया।

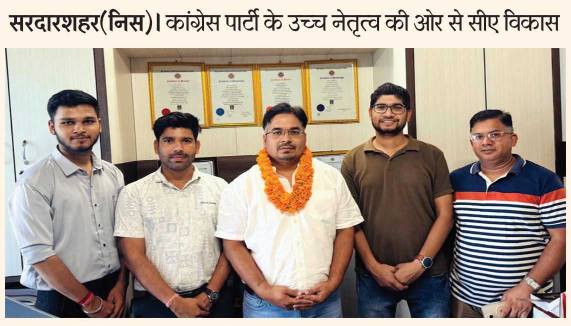

किसानों को बाजरा, मूंग व मोठ के बीजों का वितरण

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। कृषि विभाग की ओर से लघु सीमान्त कृषकों को मूंग, मोठ एवं बाजरे के बीजों का वितरण किया जा रहा है। सहायक निदेशक (कृषि विस्तार) गोविन्द सिंह राठौड़ ने बताया कि सुजानगढ़, रतनगढ़ व बीदासर में 44 स्थानों पर 35 कृषि पर्यवेक्षकों की ओर से बीजों का वितरण किया जा रहा है। आठ बीघा भूमि के लघु सीमान्त कृषकों की महिलाओं को ओटीपी के आधार पर बीजों का वितरण किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि बीज के लिए कार्यालय में सुपरवाइजर की ओर से किसान का आवेदन कर ओटीपी लेकर तुरन्त ही बीज वितरित किये जा रहे हैं। किसान ई मित्र से भी आवेदन कर सकता है। ई मित्र से आवेदन करने अथवा कार्यालय में आकर आवेदन करने पर किसान को खेत की जमाबंदी, आवेदन फार्म, जन आधार कार्ड व जन आधार कार्ड से जुड़ा हुआ मोबाइल नं. लेकर आना होगा। सहायक कृषि निदेशक ने बताया कि सरकार की ओर से सुजानगढ़, रतनगढ़ और बीदासर के लिए बाजरा के 11641, मोठ के 7666 तथा मूंग के बीस हजार मिनिकिटों का आवंटन किया गया है। जिनमें से बुधवार तक बाजारा के 8352, मूंग के 2115 मिनिकिटों का वितरण किया जा चूका है तथा मोठ के मिनिकिटों का वितरण तकनीकी समस्या के चलते अभी तक शुरू नहीं किया जा सका है।

पड़िहारा में युवक ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

रतनगढ़(निस)। तहसील के गांव पड़िहारा में 24 वर्षीय युवक ने बुधवार की रात अपने घर के कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। युवक ने पुलिस ने निजामुद्दीन पुत्र मोहम्मद फकीर की रिपोर्ट पर मर्ग दर्ज कर लाश का पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया। निजामुद्दीन ने रिपोर्ट मंम लिखा है कि उसके भाई अल्लाद्दीन का 24 वर्षीय लड़का शाहरूख निवासी पड़िहारा मानसिक रूप से परेशान था तथा शराब का सेवन भी करता था। बुधवार रात शराब के नशे में उसने घर के कमरे में फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने मर्ग दर्ज कर गुरुवार को शव का पोस्टमार्टम करवाया है।

धनवानों के अतिक्रमण हटाने की मांग, किसान सभा ने प्रदर्शन कर सौंपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। अखिल भारतीय किसान सभा की सुजानगढ़ इकाई ने पंचायत समिति स्थित वीसी रूम के बाहर नारेबाजी की और प्रशासन पर अतिक्रमण हटाने में भेदभाव करने के आरोप लगाए। कॉमरेड रामनारायण रूलाणिया, किसान सभा अध्यक्ष तेजपाल गोदारा के नेतृत्व में प्रदर्शन के दौरान नारेबाजी कर उपखंड अधिकारी ओमप्रकाश वर्मा को ज्ञापन सौंपा गया। इस दैरान कॉमरेड रामनारायण रूलाणिया ने बताया कि 66 दिनों से सालासर में गरीब मजदूर वर्ग के लोगों का धरना चल रहा है और 6 दिनों से दीनदयाल गुलेरिया और पवन प्रजापत आमरण अनशन पर भी बैठे हैं, इसलिए त्वरित गति से धरने का समाधान निकाला जाए और अमीरों के भी अतिक्रमण हटाया जाए। जिस पर उपखंड अधिकारी ने कहा कि सुलह होने के बावजूद भी धरना क्यों दिया जा रहा है। जिस पर रूलाणिया ने कहा कि अमीरों के अतिक्रमण नहीं हटाए गए और जहां पर सुलह में स्थान तय हुआ, वहां पर ग्राम विकास अधिकारी ने आकर लोगों के ठेले वापस हटवा दिये। ऐसे में फिर से लोगों को धरने पर बैठना पड़ा। किसान सभा अध्यक्ष तेजपाल गोदारा ने कहा कि अगर जल्द समाधान नहीं हुआ, तो आन्दोलन आस-पास के जिलों तक फैल जाएगा। जिस पर उपखंड अधिकारी ने कहा कि आपका ज्ञापन ले लिया है और नियमानुसार जो भी कार्यवाही हो, की जाएगी। ज्ञापन सौंपने के दौरान रामेश्वरलाल, जगदेव बेड़ा, सिराज खान कायमखानी, मुमताज काजी, विक्रम रूलाणिया, किशनलाल छरंग, चन्द्रप्रकाश, एडवोकेट गोरधलाल चौधरी, एडवोकेट गंगाध्र मूंड, रामनारायण स्वामी, गजानंद प्रजापत, मो. सलीम, नगेंद्र जाट, लियाकत खा सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री को 54 पार्षदों का हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन भेजा, परिवहन व्यवस्था दुरुस्त करने की मांग

जयपुर टाइम्स

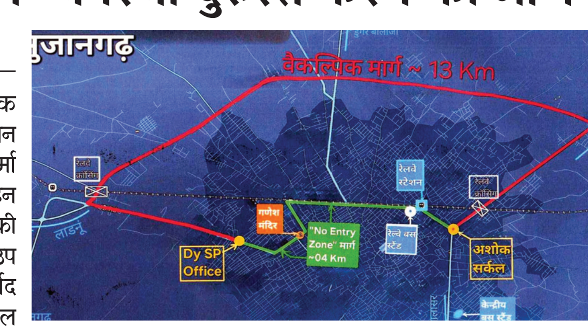

सुजानगढ़(नि.सं.)। शहर के अनेक पार्षदों के हस्ताक्षरों से युक्त एक ज्ञापन प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को भेजा गया है और शहर की परिवहन व्यवस्था को दुरूस्त करने की मांग की गई है। सभापति निलोफर गौरी, उप सभापति अमित मारोठिया, पार्षद सोनिका शर्मा, पार्षद बाबूलाल कुलदीप, शर्मिला सोनी, इकबाल खां कायमखानी, मधु बागरेचा, नेता प्रतिपक्ष जयश्री दाधीच सहित कुल 60 पार्षदों में से 54 पार्षदों के इस ज्ञापन पर हस्ताक्षर हैं। ज्ञापन में बताया गया है कि नो एंट्री जोन लागू करने के बाद 13 किलोमीटर का सफर जनता को शहर के बाहर से तय करना पड़ रहा है और बीच में 2 रेलवे क्रोसिंग भी पड़ती है। जबकि पुराना प्रचलित मार्ग मात्र 4 किलोमीटर ही है, जो शहर के अंदर से जाता है। ऐसे में 17 साल पहले बने बस स्टेंड को चालू करना स्वागत योग्य कदम है, लेकिन शहर के अंदर से बसों का परिवहन बंद किए जाने से लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। अतः इस 9 किलोमीटर के अतिरिक्त घुमाव के कारण लोगों को मानसिक, आर्थिक और शारीरिक कष्ट उठाना पड़ रहा है। इसलिए शहर के अंदर से बसों का परिवहन वापस शुरू कर जनता को राहत प्रदान की जाए। ज्ञापन के साथ नक्शा भी भेजा गया है, जिससे पता चलता है कि शहर के बाहर से किस तरह 13 किलोमीटर की घुमावदार यात्रा से जनता परेशान है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कल, रैली निकालकर दिया जागरूकता का संदेश

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को लेकर राजकीय आयुष चिकित्सालय विभाग मंडावा कार्मिकों ने नोडल अधिकारी महेश कुमार, आयुर्वेद विभाग प्रभारी डॉ.अनिता के नेतृत्व में जागरूकता रैली निकाली। रैली को उपखंड अधिकारी मुनेश कुमारी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली नगरपालिका चौक से सुभाष चौक, बिसाऊ चौराहे तक निकाली गई। योग दिवस का विभाग के अधिकारियों ने 21 जून को आयोजित होने वाले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम में अधिकाधिक भागीदारी निभाने को लेकर जागरूक किया। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को लेकर नोडल अधिकारी और प्रशिक्षकों की ओर से लोगों को योग अभ्यास करवाया जा रहा है। चौखानी हवेली गार्डन में 21 जून को सुबह 6 से 8 बजे तक होने वाले कार्यक्रम को लेकर तैयारियां की गई हैं। इस अवसर पर डॉ महेश सरोवा नोडल अधिकारी, डॉ.अनिता चौधरी- प्रभारी अधिकारी, डॉ.विकास कुमार सहायक नोडल अधिकारी, डॉ. इंदु आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी,डॉ. पूनम होम्योपैथी चिकित्सा अधिकारी, डॉ.सिकंदर अली यूनानी चिकित्सा अधिकारी, सुनीता कुमारी, अमन बुडानिया, आशीष कुमार शर्मा, राजेश कुमावत, मनोज कुमार, विकास महला, एकता गुर्जर, योग प्रशिक्षक अजय कुमार, प्रमेन्द्र, नरेंद्र कुमार, शिव भगवान सोनी ने हिस्सा लिया।

जरूरतमंदों की सेवा से बढ़कर कोई पुण्य का कार्य नहीं: खान

राहुल गांधी के जन्म दिवस पर झुग्गी झोंपड़ियों में जरूरतमंदों को राशन वितरण

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। लोकसभा नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी का जन्म दिन अग्रसेन नगर के पास स्थित झुग्गी झोंपड़ियों में जरूरतमंदों के साथ गुरूवार को पूर्व महिला आयोग अध्यक्ष रेहाना रेयाज व प्रदेश सचिव मुस्ताक खान के नेतृत्व में केक काटकर व उनको फ्रूट व राशन किट वितरण कर मनाया गया। इस अवसर पर मुस्ताक खान ने कहा कि जिस प्रकार राहुल गांधी गरीब मजदूर व निचले तबके के लोगों की सेवा को आदर्श मानकर राजनीति कर रहे हैं। उन्हीं के संदेश को आगे बढ़ाने के लिए झुग्गी झोंपड़ियों में उनका जन्मदिन मनाया गया। खान ने कहा कि जरूरतमंदों की सेवा से बढ़कर कोई पुण्य का कार्य नहीं है। इस दौरान रेहाना रेयाज ने कहा कि जिस प्रकार भारत के पिछड़े व गरीब वर्ग को भाजपा सरकार की ओर से वंचित रखा गया है, उन्हीं की आवाज उठाने और झूठ का पर्दाफाश करने के लिए राहुल गांधी के कार्यों को आदर्श मानकर यह पुण्य का कार्य किया गया है। इस अवसर पर पार्षद अंजनी शर्मा, पूर्व ब्लॉक अध्यक्ष रामनिवास सहारण, पूर्व ब्लॉक अध्यक्ष अबरार खान, यूथ कांग्रेस प्रदेश सचिव महेश ढूकिया, लोहिया कॉलेज के पूर्व महासचिव पुलकित चौधरी, यूथ कांग्रेस जिला सचिव फरमान खान, पूर्व यूथ कांग्रेस महासचिव गुलजार खान, छात्र नेता आदिल गौरी, पार्षद प्रतिनिधि फारूक चौहान सहित अनेक कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

रक्तदान शिविर के पोस्टरो का विमोचन

मारोठ में योग दिवस पर स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का होगा आयोजन

जयपुर टाइम्स

मारोठ(निस)। कस्बे में हक की बात ग्रुप मारोठ व आमजन के संयुक्त तत्वावधान में युवाओं के सहयोग से गांव मारोठ की श्री दिगंबर जैन विवेक सागर शिक्षण संस्थान पाठशाला में शनिवार को स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित किया जाएगा। जिसको लेकर गुरुवार को मुख्य बाजार स्थित ग्रामीणों ने रक्तदान शिविर पोस्टरो का विमोचन किया। हक की बात ग्रुप एडमिन दीपक पाटनी ने बताया कि ब्लड बैंकों में हो रही रक्त की कमी देखते हुए योग दिवस पर आयोजित शिविर में प्रातः 8 से दोपहर 3 बजे तक राजकीय ब्लड बैंक कुचामन व सी के एस व शांति ब्लड बैंक की टीम द्वारा रक्त संग्रहन का कार्य किया जाएगा। हक की बात अभियान ग्रुप मारोठ के एडमिन हितेश जैन ने बताया कि शिविर को सफल बनाने के लिए युवा कार्यकर्ता लोगों को रक्तदान के लिए प्रेरित कर रहे हैं और शिविर में सरकारी गाइड लाइन का विशेष ध्यान रखा जाएगा। समाज सेवी आर के माली व गायत्री शिक्षण संस्थान स्कूल के निर्देशक जोरा राम रेवाड़ ने बताया कि रक्तदान महादान है, इससे बढ़कर कोई दान नहीं है, क्योंकि रक्तदान से हम किसी जरूरतमंद व्यक्ति को जीवन दान देते हैं। किसी घर के बुझते हुए चिराग को फिर से रोशन करने में सहयोग करते हैं, किसी सुहागन का सिंदूर मिटने से बचाते हैं, किसी मां-बाप के आंखों के तारे बुढ़ापे के सहारे को हम फिर से नया जीवन देकर उसे बचाते हैं। रक्त एक ऐसी चीज है जो किसी फैक्ट्री या कारखाने में नहीं बनता। इसका निर्माण सिर्फ और सिर्फ मनुष्य के शरीर में ही होता है, मोतीपुरा कस्बे में भी रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें सभी को अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर अपने रक्त का दान करने और इस पुण्य व परोपकार के कार्य में भागीदारी निभानी चाहिए। हमारे शरीर से रक्तदान में रक्त निकलवाने पर शरीर पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है और जितना खून निकला है, उतना रक्त अगले 48 घंटों में शरीर में पुनः बन जाता है। रक्तदान के अनेक वैज्ञानिक फायदे भी हैं, रक्तदान से हमारे शरीर में जमा कोलेस्ट्रोल स्तर कम होता है, जिससे हार्ड अटैक धमनियां अमरुद पैरालाइसिस जैसी हजारों बीमारियों से बचाव होता है। अतः वैज्ञानिक तरीके से भी रक्तदान से मानव शरीर को नुकसान ना हो कर अपितु उसका बहुत ज्यादा फायदा मिलता है।

राहुल गांधी के जन्मदिन पर कांग्रेस कार्यकर्ताओ ने किया पौधरोपण

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी का जन्मदिन गुरुवार को कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने पौधरोपण कर मनाया। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी अन्य पिछड़ा वर्ग विभाग के प्रदेशाध्यक्ष हरसहाय यादव के निर्देशानुसार विभाग के प्रदेश ज्वाइंट कॉआर्डिनेटर रामवीरसिंह राईका के नेतृत्व में लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष गांधी के जन्मदिन पर 21 पौधे लगाए गए और उनकी सार-संभाल की जिम्मेदारी ली। इस मौके पर कांग्रेस नेता राईका ने कहा कि राहुल गांधी का संघर्ष, संकल्प व समर्पण देश के युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत है। इस अवसर पर पार्षद मुखत्यार खान, जुगराज सामरिया, रणजीत कोका, विजय चावला, बाबूलाल लुहार, भूपेंद्र सैनी, मनीष सैनी, लिच्छूराम सैनी, विजय प्रजापत, बबलूसिंह सहित कई कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

उद्योगपति आईसी अग्रवाल पहुंचे निर्माणाधीन श्याम मन्दिर

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। कस्बे में जन्मे प्रवासी उधोगपति जिन्स कम्पनी के मालिक आईसी अग्रवाल कस्बे में निर्माणाधीन श्याम मन्दिर पहुंचे। उनके पहुंचने पर श्री श्याम सेवा मित्र समिति के सदस्यों ने उनका स्वागत किया। उन्होने श्याम मन्दिर का निरीक्षण किया। इस दौरान उधोगपति आई सी अग्रवाल ने कहा कि मन्दिर निर्माण के लिए दिल खोलकर सहयोग किया है और आगे भी जरूरत पड़ने पर किया जाएगा। जिस पर श्रीश्याम मित्र सेवा समिति के सदस्यों ने उनका आभार जताया।

मंत्री कर्नल राज्यवर्धनसिंह राठौड़ का जनता ने जताया आभार

झोटवाड़ा में 10 करोड़ की लागत से 34.70 किमी. नॉन पैचेबल व मिसिंग लिंक सड़कों का होगा निर्माण

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। कैबिनेट मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ की ओर से झोटवाड़ा क्षेत्र के सर्वांगीण विकास को नया आयाम देते हुए 10 करोड़ की स्वीकृति प्राप्त हुई है, जिसके अंतर्गत 34.70 किलोमीटर लंबी नॉन पैचेबल व मिसिंग लिंक सड़कों का निर्माण किया जाएगा। इस विकास कार्य से झोटवाड़ा विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न ग्रामीण वछ्शहरी क्षेत्रों को सीधा लाभ प्राप्त होगा। जिन प्रमुख क्षेत्रों को इस योजना से जोड़ा गया है, वे इस प्रकार हैं हिंगोनिया, करणसर, जोरपुरा सुंदरियावास, फतेहपुरा, कुड़ियों का बास, खेजड़ावास, लोहरवाड़ा, आईदान का बास और बेगस, वार्ड नंबर 48। यह सड़कों का निर्माण कार्य झोटवाड़ा की कनेक्टिविटी को बेहतर बनाएगा, ग्रामीण अंचलों को मुख्य मार्गों से जोड़ेगा और स्थानीय निवासियों को आवागमन में सहजता प्रदान करेगा। इस योजना से क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलेगा और नागरिकों को मूलभूत सुविधाएं समय पर प्राप्त होंगी। इस अवसर पर कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने कहा कि विकास ही हमारी प्राथमिकता है। झोटवाड़ा के हर नागरिक तक मूलभूत सुविधाएं पहुंचाना मेरा संकल्प है। यह सड़क निर्माण योजना झोटवाड़ा को प्रगति की दिशा में और आगे ले जाएगी। स्थानीय नागरिकों ने इस पहल के लिए कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ का आभार व्यक्त किया है और आशा जताई है कि इसी प्रकार उनके नेतृत्व में झोटवाड़ा निरंतर विकास करता रहेगा।

रणथंभोर टाइगर रिजर्व की चर्चित बाघिन टी-84 'एरोहेड' की मौत

जयपुर टाइम्स

सवाई माधोपुर(निस)।। रणथंभौर टाइगर रिजर्व की चर्चित बाघिन टी-84 'एरोहेड' की शुक्रवार को मौत हो गई। वन विभाग के अनुसार बाघिन पिछले कई दिनों से बेहद कमजोर नजर आ रही थी और ब्रेन ट्यूमर जैसी गंभीर बीमारी से पीड़ित थी। उसका शव जोन नंबर-2 में मिला, जिसे पोस्टमार्टम के लिए राजबाग नाका लाया गया है। इसके बाद अंतिम संस्कार किया जाएगा। रणथंभौर में पिछले दो महीनों में तीन लोगों की मौत के लिए जिम्मेदार मानी जा रही एरोहेड की तीनों शावकों को वन विभाग ने रणथंभौर से बाहर भेज दिया है। अंतिम शावक मादा 'कनकटी' को मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व, कोटा स्थानांतरित किया गया। एरोहेड की अन्य दो संतानों को वन विभाग पहले ही शिफ्ट कर चुका है मादा शावक RBT-2508 को रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व, बूंदी नर शावक RBT-2509 को कैलादेवी वन्यजीव अभयारण्य, करौली रणथंभौर में लगातार हो रहे बाघ हमलों को देखते हुए चीफ वाइल्डलाइफ वार्डन की ओर से गठित विशेष समिति, राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण और पर्यावरण मंत्रालय की अनुमति के बाद यह निर्णय लिया गया।

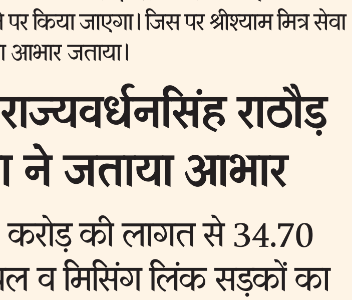

जवाबदेहिता से हो परिवादों का निस्तारण, फरियादी हों संतुष्ट: अभिषेक सुराणा

जिला कलक्टर ने जिला स्तरीय जनसुनवाई में सुने अभाव- अभियोग

कुल 67 परिवाद आए, 7 का किया मौके पर निस्तारण

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने गुरुवार को पुराने कलक्ट्रेट परिसर स्थित डीओआईटी सभागार में जिला स्तरीय जनसुनवाई में जिलेभर से आमजन के अभाव–अभियोग सुने तथा अधिकारियों को समुचित निर्देश दिए। इस अवसर पर जिला कलक्टर सुराणा ने कहा कि अधिकारी अपने विभाग से संबंधित परिवादों का जवाबदेहिता से निस्तारण करें। प्रकरणों का समयबद्ध निस्तारण करें और फरियादियों को अधिकतम स्तर पर संतुष्ट करें। उन्होंने कहा कि अधिकारी अपने विभाग से संबंधित प्रकरणों का एनालिसिस करें। किसी भी स्तर पर प्राप्त शिकायत का प्रभावी व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हमारी प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि जिले में 24 जून से आयोजित होने वाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े को लेकर सभी अधिकारी अपनी विभागीय गतिविधियों की पूर्व तैयारी रखें। विभागीय कार्यों की प्राथमिकता तय करते हुए समयबद्ध ढंग से सभी गतिविधियां आयोजित की जाएं। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम को लेकर सभी अधिकारियों को ?समुचित निर्देश दिए। इस दौरान सुजानगढ़ में रास्ते के विवाद, पट्टे बनाने, चूरू में वार्ड नंबर 18 में सफाई, वार्ड नंबर 21 में बिजली आपूर्ति, प्रतिभा नगर में आम रास्ते, शिव कॉलोनी में पाइप टूटे होने, लोहिया कॉलेज के पास नाला सफाई व सफाई व्यवस्था, चांदगोठी में सड़क, कुण्ड के मैटेरियल का भुगतान करने, गाजसर में पट्टे, गढ चौराहे के पास सड़क की मरम्मत, सीमाज्ञान, अग्रसेन नगर में पानी निकास, चूरू रीको एरिया में पेयजल आपूर्ति, शौचालय सहायता राशि, मोरथल में अतिक्रमण व जिले में पेयजल सहित कुल 67 परिवाद प्राप्त हुए, जिनमें से 7 प्रकरणों का मौके पर ही निस्तारण किया गया। जिला कलक्टर ने मौके पर ही अधिकारियों को निर्देशित करते हुए अग्रसेन नगर में पानी निकासी, शौचालय हेतु सहायता राशि भुगतान, खेत में जान - माल की हानि की संभावना को लेकर पुलिस सहायता, झूठे दस्तावेजों से संबंधित प्रकरण, रीको एरिया में पेयजल आपूर्ति, शिव कॉलोनी में नाली निर्माण, शिवा पार्क में रास्ते का प्रकरण का मौके पर ही निस्तारण किया गया। एडीएम अर्पिता सोनी ने कहा कि जिला जन अभियोग व सतर्कता समिति में दर्ज प्रकरणों पर चर्चा करते हुए आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि समिति में दर्ज 18 प्रकरणों में से 2 प्रकरणों का निस्तारण किया गया। सीईओ श्वेता कोचर ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा के आयोजन को लेकर निर्देश दिए। इस दौरान एएसपी लोकेन्द्र दादरवाल, डीवाईएसपी सुनील झाझड़िया सहित समस्त जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे और

मुख्य सचिव सुधांश पंत ने प्रदेश स्तर से की जनसुनवाई की समीक्षा

मुख्य सचिव सुधांश पंत ने प्रदेश स्तर से जनसुनवाई की समीक्षा की और अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा, संपर्क पोर्टल, जनसुनवाई में प्रकरणों के निस्तारण, फरियादियों के संतुष्टि स्तर सहित बिन्दुओं को लेकर आवश्यक निर्देश दिए।

एडीएम अर्पिता सोनी ने जिला बाल संरक्षण इकाई की त्रैमासिक समीक्षा बैठक में दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा के निर्देशानुसार एडीएम अर्पिता सोनी ने गुरुवार को जिला कलक्ट्रेट सभागार में मिशन वात्सल्य योजना व किशोर न्याय (बालकों की देखरेख और संरक्षण) अधिनियम, 2015 के अंतर्गत गठित जिला बाल संरक्षण इकाई की त्रैमासिक समीक्षा बैठक में अधिकारियों को निर्देश दिए। एडीएम सोनी ने कहा कि बाल संरक्षण व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए विभागीय समन्वय रहे। प्रकरणों की समयबद्ध रिपोर्टिंग हो तथा जन-जागरूकता कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाए। उन्होंने राजकीय किशोर गृह में निवासरत बच्चों की देखरेख, सुरक्षा, शिक्षा और पुनर्वास व्यवस्थाओं, विशेष किशोर पुलिस इकाई और बाल कल्याण पुलिस अधिकारी की ओर से किए जा रहे कार्यों, चाइल्ड हेल्पलाइन सेवा 1098 की वर्तमान स्थिति व प्रतिक्रिया समय, राजस्थान बाल सहभागिता दिशा-निर्देश 2014 के तहत जिले के राजकीय व गैर-राजकीय विद्यालयों में चाइल्ड राइट्स क्लब के गठन की योजना, किशोर न्याय बोर्ड में दर्ज प्रकरणों एवं बोर्ड की कार्य प्रणाली, बाल कल्याण समिति की ओर से प्रस्तुत प्रकरणों के निस्तारण में पारदर्शिता व समयबद्धता, पोक्सो अधिनियम, 2012 के तहत दर्ज प्रकरणों की अद्यतन स्थिति, बाल श्रम उन्मूलन, पुनर्वास कार्यक्रम, बाल तस्करी की रोकथाम व बच्चों के स्वास्थ्य व पोषण, नशे के विरुद्ध जागरूकता अभियान इत्यादि विषयों पर अंतरविभागीय समन्वय से की जा रही गतिविधियों की समीक्षा कर निर्देश दिए। जिला बाल संरक्षण इकाई सहायक निदेशक सत्येंद्र पाल वीर ने बैठक का संचालन करते हुए रूपरेखा प्रस्तुत की। इस दौरान महिला अधिकारिता सहायक निदेशक राजेन्द्र सिंह, डीईओ प्रारंभिक ओमप्रकाश प्रजापत, बाल कल्याण समिति अध्यक्ष कमला देवी, सीडीपीओ सीमा गहलोत, डॉ भागीरथ, एएचटीयू एसआई हनुमान सिंह, राजकीय किशोर गृह अधीक्षक राजेश कुमार, श्रम निरीक्षक खेमचंद कुमावत, किशोर न्याय बोर्ड सदस्य ताराचंद सैनी, जिला बाल संरक्षण इकाई संरक्षण अधिकारी जावेद खान सहित अन्य मौजूद रहे।

निशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर में 109 रोगियों की जांच, 49 को लैंस प्रत्यारोपण के लिए जयपुर भेजा

जयपुर टाइम्स

सांभरलेक(निस)। कस्बे के साध पुरसनाराम साहेब मंदिर में गिरधारी लाल आहूजा की पुण्य स्मृति में उनके पुत्रों की ओर से शंकरा आई हॉस्पिटल के तत्वाधान में निशुल्क मोतियाबिंद जांच व लैंस प्रत्यारोपण शिविर आयोजित हुआ। आयोजक नरेश आहुजा ने बताया कि शिविर में शंकरा आई हॉस्पिटल के चिकित्सकों ने 109 लोगों की निशुल्क जांच कर दवाइयां वितरण की। इस दौरान 81 लोगों को चश्मा वितरण किया गया। वहीं 49 मरीजों को लैंस प्रत्यारोपण के लिए बस से जयपुर भेजा गया। वही गिरधारी लाल आहुजा की स्मृति में रक्तदान शिविर भी आयोजित किया गया जिसमें 83 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। आहुजा ने बताया कि यह शिविर सिंधी मोहल्ला दरबार साध पुरसनाराम मंदिर में हर माह के तीसरे बुधवार को लगाया जाता है। इस अवसर पर नारायण दास, कन्हैयालाल सोढ़ी, नरेश आहुजा, संजय आहुजा, हिमांशु आहुजा, गौरव आहुजा, प्रदीप गांधी, कमला खारडिया, दामोदर शर्मा, कैलाश शर्मा, कविता गांधी, चिराग बागवानी, खुशी बागवानी, दक्ष शर्मा, जानवी शर्मा सहित कई लोगों ने सेवा प्रदान की।

एलआईसी हाउसिंग फाइनेंस ने धूमधाम से मनाई 36 वीं वर्षगांठ

ग्राहक सेवा और समाधान को बताया प्राथमिक उद्देश्य

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। एलआईसी हाउसिंग फाइनेंस कंपनी ने अपनी 36वीं वर्षगांठ का भव्य आयोजन पूरे उत्साह और गरिमा के साथ मनाया। इस अवसर पर कंपनी के समस्त कर्मचारियों ने एकजुट होकर न केवल संस्थान की उपलब्धियों का उत्सव मनाया, बल्कि ग्राहकों से सीधे संवाद स्थापित करने और उनकी समस्याओं के समाधान को प्राथमिकता देने के कंपनी के संकल्प को भी दोहराया। वर्षगांठ समारोह के विशेष अवसर पर उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बेरवा से मुलाकात कर एलआईसी हाउसिंग फाइनेंस के मैनेजर ऑपरेशन प्रदीप चतुर्वेदी ने कंपनी की विभिन्न योजनाओं और सेवाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कंपनी का मुख्य उद्देश्य ग्राहकों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करना है। चतुर्वेदी ने यह भी स्पष्ट किया कि कंपनी अपने ग्राहकों से प्रत्यक्ष संपर्क में रहकर उनकी समस्याओं का समयबद्ध समाधान सुनिश्चित करने का प्रयास करती है। कार्यक्रम में कंपनी के वरिष्ठ अधिकारी, डिप्टी रीजनल मैनेजर दीपक झालानी, गिरीश शर्मा, कृष्ण कुमार तंवर, अनिल शर्मा सहित कई अन्य अधिकारी भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर आई एफएस संजय भादू एवं जयपुर टाइम्स के संपादक रामेश्वर लाल जाट को भी आमंत्रित किया गया,एवं उन्हें सम्मानित किया गया। इस आयोजन के माध्यम से एलआईसी हाउसिंग फाइनेंस ने यह संदेश दिया कि संस्था न केवल वित्तीय सेवा प्रदाता है, बल्कि समाज से गहराई से जुड़ी हुई एक उत्तरदायी संस्था भी है। कंपनी आने वाले वर्षों में ग्राहक सेवा को और बेहतर बनाने तथा राजस्थान सहित पूरे देश में अपने विस्तार को लेकर प्रतिबद्ध है। इस अवसर पर उपस्थित सभी कर्मचारियों एवं अतिथियों ने कंपनी की उपलब्धियों की सराहना की और भविष्य में और भी उत्कृष्ट सेवाएं देने के लिए संकल्प लिया।

उपचुनावों में निर्वाचन आयोग कर रहा कई नवाचार

मोबाइल डिपॉजिट सुविधा, उन्नत मतदाता टर्नआउट रिपोर्टिंग प्रक्रिया, 100% वेबकास्टिंग

जयपुर टाइम्स

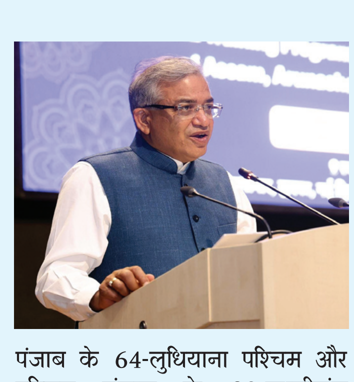

नई दिल्ली/ जयपुर(कास)।। भारत निर्वाचन आयोग की ओर से गुरूवार को आयोजित पांच विधानसभा क्षेत्रों में हुए उपचुनावों में आयोग की ओर से बीते चार महीनों में शुरू की गई कई प्रमुख नई पहलों का सफल कार्यान्वयन देखने को मिला। यह पहलें मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार और निर्वाचन आयुक्तगण डॉ. सुखबीर सिंह संधू और डॉ. विवेक जोशी की पहल पर लागू की गईं। ये उपचुनाव गुजरात के 24-कड़ी (अनुसूचित जाति) और 87-विश्वदर, केरल के 35-नीलांबूर, पंजाब के 64-लुधियाना पश्चिम और पश्चिम बंगाल के 80-कालीगंज विधानसभा क्षेत्रों में कराए गए। इन उपचुनावों में कुल 1354 मतदान केंद्रों पर मतदान संपन्न हुआ।

नई पहलें इस प्रकार थीं

सभी मतदान केंद्रों पर मोबाइल डिपॉजिट सुविधा की व्यवस्था मतदाता टर्नआउट रिपोर्टिंग की उन्नत प्रणाली, जिससे मतदान समाप्ति के तुरंत बाद पीठासीन अधिकारी की ओर से मतदान डेटा अपडेट किया जा सके सभी मतदान केंद्रों पर 100% वेबकास्टिंग, जिससे पूरे मतदान प्रक्रिया की निरंतर निगरानी सुनिश्चित हो सभी पीठासीन अधिकारियों का व्यक्तिगत मॉक पोल प्रशिक्षण लगभग दो दशकों में पहली बार उपचुनावों से पूर्व विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण भी किया गया इन पहलों की सफलता से आगामी बिहार विधानसभा चुनावों में इनके पूर्ण कार्यान्वयन का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

मोबाइल डिपॉजिट सुविधा की खासियत

पहली बार मतदाताओं को मतदान केंद्रों के प्रवेश द्वार पर मोबाइल फोन जमा करने की सुविधा प्रदान की गई। यह सुविधा विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिकों, महिलाओं और दिव्यांग मतदाताओं को ध्यान में रखते हुए दी गई, ताकि उन्हें मोबाइल फोन रखने की चिंता न हो। इसके लिए प्रवेश द्वार पर बॉक्स या जूट बैग्स रखे गए और स्वयंसेवकों को तैनात किया गया।

उन्नत वीटीआर प्रक्रिया

अब प्रत्येक मतदान केंद्र पर पीठासीन अधिकारी की ओर से हर दो घंटे में ऐप के माध्यम से मतदाता टर्नआउट दर्ज किया गया। यह जानकारी स्वतः विधानसभा स्तर पर एकत्रित होती रही और हर दो घंटे में मतदान प्रतिशत का अनुमान प्रकाशित होता रहा। मतदान समाप्ति के बाद, मतदान केंद्र छोड़ने से पहले ही पीठासीन अधिकारी की ओर से अंतिम डेटा दर्ज कर दिया गया। जहां नेटवर्क उपलब्ध नहीं था, वहां डेटा ऑफलाइन दर्ज कर सिंक किया जा सका। पहले यह कार्य सेक्टर अधिकारी की ओर से फोन या एसएमएस से किया जाता था, जिससे मतदाता टर्नआउट रिपोर्ट रात 10-11 बजे तक ही अपडेट हो पाती थी। अब यह प्रक्रिया तेज और अधिक सटीक हो गई है।

100% वेबकास्टिंग

पांचों विधानसभा क्षेत्रों के प्रत्येक मतदान केंद्र (एक को छोड़कर) पर मतदान दिवस की गतिविधियों की 100% वेबकास्टिंग की गई। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि प्रत्येक महत्वपूर्ण गतिविधि सुचारू रूप से संपन्न हो और किसी भी प्रकार का उल्लंघन न हो। RO, DEO और CEO स्तर पर समर्पित निगरानी टीमें तैनात की गई थीं, जिन्होंने पूरे मतदान कार्य की बारीकी से निगरानी की। सनद रहे कि राजस्थान में भी उपचुनाव संभावित है और ये सारे नवाचार आगामी उपचुनावों में राजस्थान में भी लागू होंगे।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।